Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 234 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शुक्रवार 07 मार्च 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

सहिष्णुता कायता का चिंह नहीं है, वीरता का फल है।

Forbearance is not a sign of coward ness, it is the result of breveness.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

छत्तीसगढ़ सरकार के शासकीय सेवकों को सौगात

महंगाई भत्ता 53% किए जाने का आदेश जारी

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की सरकार ने राज्य के शासकीय सेवकों के महंगाई भत्ते को 53 प्रतिशत किए जाने की अपनी घोषणा को पूरा करके राज्य के लाखों शासकीय सेवकों को होली पर्व से पूर्व सौगात दी है।

यह उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व वाली छत्तीसगढ़ सरकार में कैबिनेट मंत्री श्री ओपी चौधरी ने 3 मार्च को विधानसभा में वर्ष 2025-26 के वार्षिक बजट में शासकीय सेवकों को 53 प्रतिशत डीए किए जाने की घोषणा की थी। उक्त घोषणा के परिपालन में शासकीय सेवकों के महंगाई भत्ते में वृद्धि किए जाने का आदेश वित्त विभाग द्वारा जारी कर दिया गया है।

जारी आदेश के अनुसार राज्य के शासकीय सेवकों के महंगाई भत्ते में 3 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी करके 53 प्रतिशत किए जाने का आदेश जारी कर दिया गया है। सातवें वेतनमान में कार्यरत कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में 3 प्रतिशत की वृद्धि की गई है, अब उन्हें 53 प्रतिशत महंगाई भत्ता मिलेगा, जबकि छठवें वेतनमान के कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में 7 प्रतिशत की वृद्धि की गई है, अब उन्हें 246 प्रतिशत महंगाई भत्ता प्राप्त होगा। यह वृद्धि 1 मार्च 2025 से प्रभावी होगी और इसका भुगतान मार्च 2025 के वेतन के साथ अप्रैल माह में किया जाएगा।

मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर की एक झलक पाने क्रिकेट प्रेमी पहुंचे एयरपोर्ट

रायपुर में सचिन के साथ भिड़ेंगे ब्रायन लारा

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ के क्रिकेट प्रेमियों के लिए अगले सात दिन रोमांच से भरपूर होने वाले हैं। बीते 22 फरवरी से शुरू हुई इंटरनेशनल मास्टर्स लीग के शेष मैच अब 8 मार्च से रायपुर के शहीद वीर नारायण सिंह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में खेले जाएंगे।

इंडिया और इंग्लैंड मास्टर्स की टीम पहुंची रायपुर। बता दें कि 8 मार्च को रायपुर में इंडिया मास्टर्स और वेस्टइंडीज मास्टर्स के बीच पहला मुकाबला खेला जाएगा, जिसमें मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर और ब्रायन लारा के धुरंधर आमने-सामने होंगे। जिसके मद्देनजर सचिन समेत इंडिया मास्टर्स और इंग्लैंड मास्टर्स के सभी खिलाड़ी आज रायपुर पहुंच चुके है। रायपुर एयरपोर्ट में कड़ी सुरक्षा के बीच दोनों टीमों के खिलाड़ी बस में सवार होकर होटल के लिए रवाना हो चुके है। इंटरनेशनल मास्टर्स लीग के आयोजन को लेकर रायपुर समेत पूरे छत्तीसगढ़ के क्रिकेट फैंस में जबरदस्त उत्साह देखा जा रहा है। आज रायपुर एयरपोर्ट पर अपने फेवरेट खिलाड़ियों को देखने के लिए काफी फैंस पहुंचे हुए थे, इस दौरान क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले भारत के दिग्गज क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर, युवराज सिंह, इरफान पठान, इयोन मोर्गन, केविन पीटरसन जैसे खिलाड़ियों को देखते ही फैंस खुशी से गदगद हो गए।

'देवभूमि उत्तराखंड आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत, मुखवा आकर मैं धन्य' : पीएम मोदी

प्रधानमंत्री ने उत्तराखंड के मुखवा में मां गंगा की पूजा-अर्चना की

उत्तराखंड (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज उत्तराखंड के दौरे पर हैं। पीएम मोदी सुबह जॉली ग्रांट एयरपोर्ट पहुंचे, जहां मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उनका स्वागत किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सबसे पहले उत्तरकाशी जिले के मुखवा गांव में स्थित मुखीमठ मंदिर और मां गंगा की पूजा-अर्चना की। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने मुखवा में बर्फ से ढके पहाड़ों की मनमोहक सुंदरता का भी आनंद लिया और वहां के लोगों का अभिवादन किया। उसके बाद उन्होंने हर्षिल में ट्रैक और बाइक रैली को हरी झंडी दिखाई और बाद में विशाल जनसभा को संबोधित किया।

जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि उत्तराखंड की यह देवभूमि आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत है। चारधाम और अनंत तीर्थों का आशीर्वाद इसे प्राप्त है। जीवनदायिनी मां गंगा के इस शीतकालीन गद्दी स्थल पर आज एक बार फिर आकर, आप सब परिवारजनों से मिलकर मैं धन्य हो गया हूं। प्रधानमंत्री ने मां गंगा की सेवा को अपना सौभाग्य बताया। उन्होंने कहा कि मां गंगा की कृपा से ही मुझे दशकों तक उत्तराखंड की सेवा का सौभाग्य मिला है। मैं मानता हूं कि उन्हीं के आशीर्वाद से मैं काशी तक पहुंचा और अब सांसद के रूप में काशी की सेवा कर रहा हूं। इसीलिए मैंने काशी में कहा भी था कि मुझे मां गंगा ने बुलाया है। कुछ महीने पहले मुझे यह भी अनुभूति हुई कि जैसे मां गंगा ने मुझे अब गोद ले लिया है। यह मां गंगा की ही दुलार है, अपने इस बच्चे के प्रति उनका स्नेह है कि आज मैं उनके मायके मुखवा गांव आया हूं।

प्रधानमंत्री मोदी ने आगे कहा कि कुछ साल पहले जब मैं बाबा केदारनाथ के दर्शन के लिए बाबा के चरणों में गया था, तो बाबा के दर्शन-अर्चन के बाद मेरे मुंह से अचानक कुछ भाव प्रकट हुए थे और मैं बोल पड़ा था कि यह दशक उत्तराखंड का दशक होगा। वो शब्द मेरे थे, भाव मेरे थे लेकिन उनके पीछे सामर्थ्य देने की शक्ति स्वयं बाबा केदारनाथ ने दी थी। मैं देख रहा हूं कि बाबा केदार के आशीर्वाद से धीरे-धीरे वो शब्द, वो भाव हकीकत में बदल रहे हैं। यह दशक उत्तराखंड का बन रहा है।

उत्तराखंड को विकसित राज्य बनाने के लिए हमारी डबल इंजन सरकार मिलकर काम कर रही है। चारधाम ऑल वेदर रोड, आधुनिक एक्सप्रेस वे, राज्य में रेलवे, विमान और हेलीकॉप्टर सेवाओं का विस्तार पिछले 10 वर्षों में तेजी से हुआ है। अभी कल ही केंद्रीय कैबिनेट ने केदारनाथ रोपवे प्रोजेक्ट और हेमकुंड रोपवे प्रोजेक्ट को मंजूरी दे दी है। केदारनाथ रोपवे बनने के बाद जो यात्रा 8 से 9 घंटे में पूरी होती है, अब उसे लगभग 30 मिनट में पूरा कर लिया जाएगा। इससे बुजुर्गों और बच्चों के लिए केदारनाथ यात्रा और सुगम हो जाएगी।

टूरिज्म उत्तराखंड के लिए बहुत जरूरी : प्रधानमंत्री ने कहा कि टूरिज्म उत्तराखंड के लिए बहुत जरूरी है। मैं चाहता हूं कि उत्तराखंड में कोई भी सीजन ऑफ सीजन न हो, हर सीजन में टूरिज्म ऑन रहे। उत्तराखंड में पर्यटकों की संख्या इस एक दशक में तेजी से बढ़ी है। 2014 से पहले चारधाम यात्रा पर हर साल औसतन 18 लाख यात्री आते थे। अब हर साल लगभग 50 लाख तीर्थयात्री आने लगे हैं। यहां सर्दियों में पर्यटन के दौरान ट्रैकिंग और स्कीइंग जैसी रोमांचक गतिविधियां होती हैं, जो वाकई एक रोमांचक अनुभव है।

उत्तराखंड में धार्मिक यात्रा के लिए भी सर्दी एक खास समय : उत्तराखंड में धार्मिक यात्रा के लिए भी सर्दी एक खास समय है, क्योंकि इस मौसम में कई तीर्थ स्थलों पर विशेष अनुष्ठान होते हैं। यहां तक कि मुख्य गांवों में भी आप धार्मिक समारोह देख सकते हैं, जो हमारी प्राचीन और अनूठी परंपराओं का अभिन्न अंग हैं।

कांग्रेस सदस्यों की हो रही खरीद-फरोख्त, विपक्ष ने किया वॉकआउट

रायपुर (विसं)। गुरुवार को सदन में कांग्रेस विधायकों ने पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, उमेश पटेल और अनिल भेड़िया ने कहा कि जहां कांग्रेस सदस्य की संख्या ज्यादा है, वहां बिना वजह चुनाव रद्द किए जा रहे हैं। कांग्रेस सदस्यों की खरीद-फरोख्त की कोशिश हो रही है। कांग्रेस विधायकों ने मंत्री से जवाब देने की मांग की। जवाब नहीं मिलने से नाराज विपक्षी विधायकों ने सदन से वॉक आउट कर दिया। इसके बाद विधानसभा में एक दिलचस्प नाजरा देखने को मिला। सदन से वॉक आउट करने के बाद विपक्षी विधायक नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत के कमरे में बैठे हुए थे। इसी दौरान वित्त मंत्री ओपी चौधरी और विधायक अजय चंद्राकर उन्हें मानने पहुंचे। दोनों नेताओं के अनुरोध के बाद कांग्रेस के विधायक मान गए और दोबारा कार्यवाही में शामिल होने पहुंचे।

विस में दिवंगतों के निधन की सूचना देरी से मिलने पर चंद्राकर हुए नाराज : विधायक अजय चंद्राकर ने कहा कि प्रशासन को स्पष्ट निर्देश होने के बाद विधानसभा को दिवंगतों की निधन सूचना देरी से मिल रही है. इस पर आसंदी की ओर से व्यवस्था आनी चाहिए. स्पीकर डॉ. रमन सिंह ने कहा कि मैंने पूर्व में भी शासन को स्पष्ट निर्देश दिया गया था. किसी भी पूर्व सदस्य की निधन की सूचना देर से मिलना बहुत आपत्तिजनक है.दरअसल, डॉ. देवचरण मधुखर के निधन की सूचना मिलने में देरी हुई. अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व विधायक डॉ. मधुकर का निधन 12 फरवरी को हुआ था. इस बात की जानकारी सदन को 4 मार्च को प्राप्त हुई. स्पीकर ने कहा कि मैं सरकार को निर्देशित करता हूं कि बिलासपुर जिले के दोषी अफसरों पर कार्रवाई की जाए. कार्यवाही की जानकारी सदन को इसी सत्र में दी जाए।

राज्य में पढ़े-लिखे अफसरों के होते हुए एनजीओ से मदद क्यों ले रही सरकार : डॉ. चरणदास महंत

छत्तीसगढ़ विधानसभा में बजट सत्र के दौरान नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरण दास महंत ने सरकार पर कड़ा हमला बोला। उन्होंने सवाल उठाया कि काबिल आईएएस अधिकारियों के होते हुए भी सुशासन लाने के लिए एनजीओ की मदद क्यों ली जा रही है। महंत ने कहा कि राज्य में 7 आईएएस अधिकारी एमबीए, 34 अधिकारी एमटेक और बीटेक और 3 अधिकारी अमेरिका से शिक्षित हैं, फिर भी एनजीओ की आवश्यकता क्यों? महंत ने सरकार से पूछा, पिछले एक साल में आपने किस बड़े संस्थान को विकसित किया है? इस सवाल पर सदन में हंगामा मच गया, और विपक्ष ने सरकारी योजनाओं की पारदर्शिता पर भी सवाल उठाए। वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने विपक्ष के आरोपों का जवाब देते हुए कहा कि कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में भ्रष्टाचार का 'विसियस सर्कल' चलता था। उन्होंने दावा किया कि वर्तमान सरकार 'ग्यान' (ग्रोथ, यूथ, एग्रीकल्चर, न्यूट्रिशियन) और 'गति' (ग्रोथ, एकाउंटेबिलिटी, ट्रांसपेरेंसी, एनोवेशन) के जरिए सुशासन और आर्थिक प्रगति पर काम कर रही है।

संक्षिप्त समाचार

तेलंगाना एमएलसी चुनाव में भाजपा की जीत, पीएम मोदी बोले- हमें अपने कार्यकर्ताओं पर गर्व

नई दिल्ली (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को तेलंगाना विधान परिषद चुनाव में विजयी हुए भाजपा के उम्मीदवारों को बधाई दी। कांग्रेस को बड़ा झटका देते हुए भाजपा ने तेलंगाना में विधान परिषद की तीन में से दो सीटें जीत ली है। प्रधानमंत्री मोदी ने भाजपा का समर्थन करने के लिए तेलंगाना के लोगों को धन्यवाद दिया है। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, मैं तेलंगाना के लोगों को एमएलसी चुनावों में भाजपा के अभूतपूर्व समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूं। हमारे नवनिर्वाचित उम्मीदवारों को बधाई। मुझे अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं पर बहुत गर्व है, जो लोगों के बीच बड़ी मेहनत से काम कर रहे हैं।

पंजाब में कर्फ्यू जैसे हालात, किसानों को दबाने में जुटी सरकार : दलजीत चीमा

चंडीगढ़ (आरएनएस)। शिरोमणि अकाली दल के वरिष्ठ नेता और पंजाब के पूर्व शिक्षा मंत्री दलजीत चीमा ने बुधवार को राज्य सरकार पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि पंजाब में कर्फ्यू जैसे हालात बन गए हैं और राज्य सरकार किसानों के आंदोलन को खत्म करने का काम कर रही है। राज्य सरकार तानाशाही की तरफ बढ़ रही है। उन्होंने अरविंद केजरीवाल को वीआईपी सुविधा मिलने पर भी निशाना साधा। पूर्व शिक्षा मंत्री चीमा ने कहा कि केंद्र सरकार के बाद अब पंजाब सरकार भी किसानों को दबाने में जुट गई है। उन्होंने मुख्यमंत्री भगवंत मान पर निशाना साधते हुए कहा कि मुख्यमंत्री का पद बेहद जिम्मेदारी वाला होता है, लेकिन उन्होंने इतिहास में पहली बार किसानों को बुलाकर वापस भेजने का काम किया है।

जल-जीवन मिशन पूर्ण करने केन्द्र सरकार का दबाव : अरुण साव

रायपुर (आरएनएस)। केंद्र सरकार, राज्य सरकार पर जल जीवन मिशन को पूर्ण करने के लिए पूरा दबाव बनाए हुए हैं. राजनीतिक दल इस मिशन में हो रही देरी पर एक-दूसरे पर हमला कर रहे हैं, तो वहीं दूसरी ओर ग्रामीण इसकी आवश्यकता को ही नकारते हुए कह रहे हैं कि इससे केवल खुदाई होगी, जिसकी वजह से हमें परेशानी होगी. यह जानकारी विभागीय मंत्री अरुण साव ने सदन में विधायक संदीप साहू के मिशन के तहत कार्यों में देरी को लेकर किए गए सवाल के जवाब में दी.विधायक संदीप साहू ने प्रश्नकाल में विधानसभा कसडोल क्षेत्र के अंतर्गत लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा स्वीकृत कार्य का मामला उठाया. उन्होंने कहा लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी द्वारा 2021- 22 से 31/1/2025 तक कौन-कौन से कार्य, कितनी लागत राशि से स्वीकृत हुए? अधूरे कार्य का विवरण दें? 118 गांवों का कार्य अब तक अपूर्ण है. 197 से कितने ग्राम जलस्त्रोत विहीन हैं.

उपमुख्यमंत्री अरुण साव ने बताया कि 3 विकासखंड़ आते हैं. इस विधानसभा में 300 ग्राम हैं. 20/21 से 753 कार्य स्वीकृत हैं, 632 कार्य पूर्ण हैं. गांव के लोगों ने आवेदन देकर कहा कि हमें जल जीवन मिशन की आवश्यकता नहीं है. हमारे घरों में नल है. इससे केवल खुदाई होगी, जिसकी वजह से हमें परेशानी होगी, जिसकी वजह से यह कार्य आप तक रुका हुआ है. उपमुख्यमंत्री ने बताया कि सड़क के कार्य आधे से ज्यादा पूर्ण हो चुके हैं. जल जीवन स्कीम प्रगति पर है. विधायक ने इस पर सवाल किया कि कितने का जल स्त्रोत विहीन है? उपमुख्यमंत्री ने बताया कि सोर्स के लिए लगातार हम कार्य कर रहे हैं. विधायक ने कहा कि जानकारी के अनुसार, 118 गांव में कार्य अपूर्ण है, इसमें जिन अधिकारियों ने इस योजना पर कार्य कर रहे हैं, उन अधिकारियों पर कार्यवाही करेंगे? उपमुख्यमंत्री ने कहा कि समय से अगर कार्य नहीं पूर्ण होता है तो अधिकारियों पर कार्यवाही करेंगे.

योगी सरकार के बुल्डोजर पर सुप्रीम ब्रेक, कोर्ट ने कहा- घर बनाकर देने होंगे

नई दिल्ली (आरएनएस)। यूपी सरकार के बुल्डोज़र एक्शन को लेकर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। जिसकों लेकर कोर्ट ने कहा कि प्रयागराज में कानूनी प्रक्रिया का पालन किए बिना लोगों के घर गिराए जाने के मामले पर संज्ञान लिया है। कोर्ट ने कहा है कि इस तरह की कार्रवाई चौंकाने वाली है और बेहद गलत उदाहरण पेश करती है। कोर्ट ने अधिकारियों को जमकर फटकार लगाई है। इसके साथ कोर्ट ने प्रयागराज में एक वकील, एक प्रोफेसर और तीन अन्य लोगों के घरों को ध्वस्त करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार की आलोचना की। सुनवाई के दौरान जस्टिस अभय ओका और एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने घरों को तोड़े जाने को अत्याचारी कदम बताया है। साथ ही कोर्ट ने यह भी कहा है कि सरकार को लोगों को मकान वापस बना कर देना होगा।

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर समारोह का नेतृत्व करेंगी

उद्घाटन सत्र के बाद उच्च स्तरीय पैनल चर्चा होगी

दिल्ली (पीआईबी)। केंद्र सरकार 8 मार्च, 2025 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाएगी। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 'नारी शक्ति से विकसित भारत' विषय पर एक राष्ट्रीय स्तर का सम्मेलन आयोजित कर रहा है। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु इस राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करेंगी। इस कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी और राज्य मंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर के साथ-साथ वरिष्ठ अधिकारी और विशिष्ट अतिथि भी शामिल होंगे। इस अवसर पर #SheBuildsBharat के माध्यम से एक ?यापक अभियान भी चलाया जा रहा है।

इस कार्यक्रम में सशस्त्र बलों और अर्धसैनिक बलों तथा दिल्ली पुलिस की महिला अधिकारियों के साथ-साथ 'मेरा युवा भारत' के स्वयंसेवक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा कार्यकर्ता, स्वयं सहायता समूह की सदस्य आदि भाग लेंगी। इसके अतिरिक्त, विभिन्न मंत्रालयों/विभागों की महिला अधिकारियों को भी इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया है। इस कार्यक्रम में विश्व बैंक, यूनिसेफ, यूएन महिला, यूएनडीपी, यूएनएफपीए जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधि भी शामिल होंगे।

उद्घाटन सत्र के बाद, दिनभर उच्च स्तरीय पैनल चर्चा कार्यक्रम जारी रहेगा। इस दौरान, तीन तकनीकी सत्र आयोजित किए जाएंगे, जिनमें एसटीईएम, व्यवसाय, खेल, मीडिया और शासन से जुड़ी प्रतिष्ठित महिला नेता एक साथ मंच पर मौजूद रहेंगी।

इस सत्र में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, व्यापार, खेल, मीडिया और शासन से जुड़ी प्रतिष्ठित महिला नेता अपने अनुभव साझा करेंगी और भावी पीढ़ियों को प्रेरित करेंगी।

यह सत्र वित्तीय समावेशन, उद्यमशीलता और अर्थव्यवस्था में महिलाओं के सशक्तिकरण पर केंद्रित होगा। राजनीतिक नेतृत्व के माध्यम से लैंगिक समानता में तेजी लाने के लिए नीतियों और रूपरेखा पर आधारित चर्चा।

एक अद्वितीय डिजिटल मीडिया और इंटरैक्टिव जोन वास्तविक समय की चर्चाओं, मल्टीमीडिया प्रदर्शनों और कहानियों के माध्यम से प्रतिभागियों को जोड़ेगा तथा प्रगतिशील भारत के निर्माण में महिलाओं के योगदान को प्रदर्शित करेगा।

व्यापक पहुंच और सहभागिता के लिए इस कार्यक्रम का दूरदर्शन, वेबकास्ट लिंक, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और विश्व बैंक लाइव पर सीधा प्रसारण किया जाएगा।

अमिताभ मुखर्जी ने एनएमडीसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का पदभार सम्भाला

हैदराबाद (विश्व परिवार)। श्री अमिताव मुखर्जी ने 6 मार्च 2025 से एनएमडीसी के चेयरमैन सह प्रबंध निदेशक (सीएमडी) के पद पर कार्यभार संभाल लिया है।

भारतीय रेलवे लेखा सेवा (आईआरएएस) के 1996 बैच के अनुभवी अधिकारी श्री मुखर्जी ने भारत के सबसे बड़े लौह अयस्क उत्पादक कंपनी एनएमडीसी के शीर्ष नेतृत्व तक पहुँचने से पहले भारत सरकार में विभिन्न पदों पर सेवाएं दी हैं। अपने दूरदर्शी नेतृत्व के साथ, श्री मुखर्जी मार्च 2023 से सीएमडी (अतिरिक्त प्रभार) और नवंबर 2018 से निदेशक (वित्त) के रूप में एनएमडीसी का मार्गदर्शन कर रहे हैं। वे एनएमडीसी स्टील लिमिटेड तथा लिगेसी आयरन ओर लिमिटेड के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य कर रहे हैं।

उनके नेतृत्व में, एनएमडीसी ने वित्त वर्ष 2024 में 45 मिलियन टन उत्पादन को पार करने वाली भारत की पहली लौह अयस्क खनन कंपनी बनकर ऐतिहासिक मील का पत्थर हासिल किया है। उन्होंने एनएमडीसी को कंपनी के इतिहास में अब तक के सबसे अधिक टर्नओवर और नेटवर्थ तक पहुंचाया है। अत्याधुनिक डिजिटल और तकनीकी इंफ्रास्ट्रक्चर को अपनाया और देश की एकमात्र मशीनीकृत हीरा खदान में प्रचालन फिर से प्रारंभ किया।

श्री मुखर्जी ने एनएमडीसी स्टील प्लांट के चालू होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो अब बस्तर का गौरव बन चुका है। उनके नेतृत्व में कंपनी ने ऑस्ट्रेलिया में स?वर्ण खनन में प्रगति की है और ग्लोबल खनन महाशक्ति बनने की दिशा में कार्ययोजना बनाकर आगे बढ़ चुकी है। श्री मुखर्जी ने प्रमुख निवेश रणनीतियों को क्रियान्वित करने, वित्तीय अनुशासन को मजबूत करने तथा एनएमडीसी को जिम्मेदार खनन के भविष्य की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके नेतृत्व में नवरत्न कंपनी 2030 तक 100 मिलियन टन की खनन क्षमता बनाने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य की ओर बढ़ रही है।

यह नियुक्ति बहुआयामी अनुभव और दृढ़ आकांक्षाओं के साथ खनन क्षेत्र में अग्रणी व्यक्ति के रूप में भारत के औद्योगिक और आर्थिक परिदृश्य पर उनके प्रभाव को रेखांकित करती है।

होली पर्व के अवसर पर 3 होली स्पेशल ट्रेनों का परिचालन

बिलासपुर (आरएनएस)। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा होली पर्व के अवसर पर गोंदिया से छपरा एवं पटना जंक्शन के लिए स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है। होली के दौरान ट्रेनों में होने वाली अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रित करने और यात्रियों को सुगम यात्रा प्रदान करने के लिए ये स्पेशल ट्रेनें चलाई जा रही हैं।

इन स्पेशल ट्रेनों में निम्नलिखित ट्रेन शामिल है- (1) गाड़ी संख्या (08863/08864) गोंदिया-छपरा-गोंदिया (एक फेरे के लिए) होली स्पेशल। (2) गाड़ी संख्या (08895/08896) गोंदिया-छपरा-गोंदिया (एक फेरे के लिए) होली स्पेशल। (3) गाड़ी संख्या (08897/08898) गोंदिया-पटना-गोंदिया (दो फेरे के लिए) होली स्पेशल।

खालिस्तानियों की कायराना हरकत, लंदन में विदेश मंत्री जयशंकर पर हमले की कोशिश, तिरंगा भी फाड़ा

ब्रिटेन (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस जयशंकर अपनी छह दिवसीय ब्रिटेन और आयरलैंड यात्रा पर हैं। बुधवार को उनकी मुलाकात ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर से हुई, वहीं आज लंदन में स्थित थिंक टैंक चैथम हाउस में 'भारत का उदय और विश्व में भूमिका' विषय पर अपने विचार साझा किए।

गौरतलब है कि विदेश मंत्री के चैथम हाउस पहुंचने से पहले वहां पर कुछ खालिस्तान समर्थक मौजूद थे। वो देश विरोधी नारे लगा रहे थे। इसी बीच जयशंकर जब चैथम हाउस से रवाना हो रहे थे तो उन पर हमले की कोशिश की गई। एक व्यक्ति ने उनकी गाड़ी के सामने आकर तिरंगा झंडा फाड़ा। सुरक्षाकर्मियों ने तुरंत कार्रवाई करते हुए उस व्यक्ति को पकड़ लिया और गाड़ी से दूर कर दिया। इसी बीच कुछ अन्य खालिस्तान समर्थक अपने हाथों में खालिस्तान का झंडा लेकर नारेबाजी कर रहे थे।

स्वतंत्र नीति संस्थान के कार्यक्रम में कश्मीर मुद्दे पर प्रश्न पूछे जाने पर मंत्री ने कहा कि पाकिस्तान के पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) को खाली कर देना कश्मीर के मुद्दे को पूरी तरह से हल करने का महत्वपूर्ण कदम होगा। उन्होंने बताया, कश्मीर के अधिकांश मुद्दों को सुलझाने में हमने अच्छा काम किया है। अनुच्छेद 370 को हटाना पहला कदम था, कश्मीर में विकास, आर्थिक गतिविधि और सामाजिक न्याय की बहाली दूसरा कदम और व्यापक मतदान के साथ चुनाव कराना तीसरा कदम रहा है। मुझे उम्मीद है कि जल्द ही कश्मीर का वह हिस्सा, जो अवैध पाकिस्तानी कब्जे में है, वापस आ जाएगा। जब यह हो जाएगा, तो कश्मीर का मसला पूरी तरह हल हो जाएगा।

छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड

कार्यालय : कार्यपालक निदेशक (वित्त) विद्युत सेवा भवन, भूतल, डँगनिया रायपुर (दूरभाष–0771.2574359 एवं 2576601)

निविदा क्र.05–06 / स्था. / वाहन / 2868 — रायपुर, दिनांक.05.03.2025

निविदा आमंत्रण सूचना

छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड के कार्यपालक निदेशक (वित्त) छ.स्टे.पॉ.डि.कं.लि., रायपुर हेतु किराये का एक वाहन (कार) अस्थाई अल्पकालीन अनुबंध हेतु उपयुक्त आपूर्तिकर्ताओं से मुहरबंद निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

क्र	कार्य का नाम	प्रकार	नग	निविदा का मूल्य Tender Cost	बयाना राशि EMD
1	किराये पर वाहन (कार) 1 वर्ष उपलब्ध कराने हेतु	Category-I car (Ex-show room price upto Rs. 10.00 lac)	01	रू. 2000/– वापसी योग्य नही	रू. 5,800/–
अ	निविदा क्रय करने की अंतिम तिथि व समय			28.03.2025	14.00 बजे तक
ब	निविदा जमा करने की अंतिम तिथि व समय			28.03.2025	15.00 बजे तक
स	निविदा खोलने की तिथि व समय			28.03.2025	16.00 बजे तक

नियम व शर्तें

2. इच्छुक फर्म उपरोक्त निविदा का क्रय, कार्यालयःकार्यपालक निदेशक (वित्त) छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कम्पनी लिमिटेड, रायपुर से उपरोक्त तिथि तक निविदा मूल्य रू 2000/- (Inclusive of GST 18%) केवल डी.डी./स्थानीय बैंकर्स चेक द्वारा प्राप्त कर सकते है, जो "Manager (CAU) CSPDCL, Raipur" को देय हो।
3. निविदा एवं कार्य संबंधी जानकारी कार्यालयीन समय में निविदा प्रपत्र क्रय करने की अंतिम तिथि तक अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
4. डाक द्वारा किसी भी प्रकार के विलंब के लिए कंपनी जिम्मेदार नही होगी।
5. निविदा उपरोक्त नियत तिथि व समय में निविदाकार या उनके अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जायेगी।
6. उक्त निविदा की विस्तृत विवरण प्रपत्र में उल्लेखित है। निविदाकर्ता निविदा की शर्तो को ध्यानपूर्वक अवलोकन कर निविदा को कार्यालय में जमा करें।
7. अधिक जानकारी के लिए CSPDCL के Website www.CSPC.Co.in/CSPDCL/Tender देखें।

बिजली की बचत ही बिजली का उत्पादन है।

कार्यपालक निदेशक (वित्त)
छ.ग.स्टे.पॉ.डि.कं.लिमि. रायपुर

SAMVAD- 43130/ 3

चलती ट्रेन से फेंका कचरा, चली गई नौकरी

रायपुर (विश्व परिवार)। चलती ट्रेन से ट्रैक पर कूड़ा फेंकने वाले सफाई कर्मी का वीडियो जब सोशल मीडिया पर आया तो रेलवे ने मामले की पूरी जांच की। चलती ट्रेन से कूड़ा फेंकने वाले कर्मचारी की पहचान कंचन लाल के रूप में हुई। ऑन बोर्ड हाउसकीपिंग सर्विस प्रोवाइड करने वाली कंपनी के खिलाफ रेलवे ने कड़ा एक्शन लिया। कंपनी को सफाई कॉन्ट्रैक्ट के पारा 9 के उल्लंघन का दोषी पाया गया। इसके लिए प्रयागराज मंडल द्वारा ठेकेदार पर 25000 रुपए का जुर्माना लगाया गया। साथ ही ठेकेदार को कड़ी चेतावनी दी गई कि यदि भविष्य में इस प्रकार की गलती होती है तो और अधिक कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उधर कंपनी ने रेलवे को सफाई में कहा कि 28 फरवरी को गाड़ी संख्या 04115 सूबेदारगंज–लोकमान्य तिलक स्पेशल में कंचनलाल की ड्यूटी लगाई गई थी। उसे ट्रैक पर कचरा न फेंकने संबंधी हिदायत भी दी गई थी। लेकिन उसने काम पर लापरवाही बरती। इसके बाद सोशल मीडिया पर एक शिकायत के आधार पर उसे ड्यूटी से हटा लिया गया है।

एनआईटी रायपुर एफआईईई नवाचार और उद्यमिता पर संकाय विकास कार्यक्रम (एफडीपी) का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। एनआईटी रायपुर फाउंडेशन फॉर इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप (एनआईटी रायपुर एफआईईई), एक टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर (टीबीआई), जो एनआईटी रायपुर के तत्वावधान में भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा समर्थित है, एआईसीटीई और शिक्षा मंत्रालय के इनोवेशन सेल (एमआईसी) के सहयोग से, एनआईटी रायपुर में 17 मार्च से 21 मार्च, 2025 तक इनोवेशन और उद्यमिता पर एक संकाय विकास कार्यक्रम (एफडीपी) का आयोजन कर रहा है।

इस पांच दिवसीय एफडीपी का उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थानों के शिक्षकों, आईआईसी संयोजकों, ई-सेल संकाय प्रभारी, इनक्यूबेशन प्रबंधकों और उद्यमशीलता और नवाचार उत्प्रेरकों को उनके परिसरों के भीतर नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक ज्ञान और उपकरणों से लैस करना है। सत्रों में छात्र स्टार्टअप को सलाह देना, नवाचार-संचालित गतिविधियों का प्रबंधन करना, अनुसंधान व्यावसायीकरण का समर्थन करना और अंत:विषय सहयोग को बढ़ावा देना शामिल होगा।

एनआईटी रायपुर के निदेशक प्रो. एन.वी. रमना राव ने इस बात पर जोर दिया कि नवाचार और उद्यमिता हमारी अर्थव्यवस्था और शिक्षा प्रणाली के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./18750/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 06-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 18750
वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कलाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी–आई.डी.–**RPR235G00013** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MR JITENDRA MANDAL/ARUN MANDAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O RAGHUNATH MANDAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. SMT. RIYA GURUBAXANI W/O CHANDAN GURUBAXANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **2. SMT. SONIYA BAJAJ W/O RITESH BAJAJ** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./18674/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 06-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 18674
वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कलाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी–आई.डी.– **RPR235I00052** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MANJU JETHWA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O DILIP BHAI JETHWA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. MANJU DEVI SHARMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O SHRI SURESH SHARMA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम–सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **जनता कॉलोनी तिलक नगर, गुढ़ियारी,** रायपुर में निर्मित एल.आई.जी. भवन योजना में से भवन/ भूखण्ड **क्रमांक एल.आई.जी.-108, श्रीमती माजदा बेगम पति श्री सैय्यद मोहम्मद इब्राहिम** को भाड़ाक्रय आधार पर आबंटित / नामांतरित किया गया है। आबंटी / नामांतरी द्वारा **दिनांक 21.01.1994** को निकला विलेख निष्पादित करा लिया गया है।

आबंटी / नामांतरी की मृत्यु **दिनांक 18.05.2017** का हो जाने के कारण उनकी **पुत्री श्रीमती इशरत जबी पति श्री सैय्यद अब्दुल गुफरान** द्वारा उक्त भवन / भूखण्ड अपने नाम पर नामांतरण करने हेतु **आवेदन पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, शपथ पत्र, वारिसों (1. श्री एस. जफीर अहमद, 2. फिरोज अहमद 3. श्री सैय्यद कलीम अहमद तीनों के पिता स्व. सैय्यद मोहम्मद इब्राहिम 4. श्रीमती महजबी बेगम पति श्री सैय्यद मोहम्मद सलाउद्दीन 5. श्रीमती फरहत जबी पति श्री सैय्यद इमतियाज हुसैन)** की सहमति पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त भवन भूखण्ड **श्रीमती इशरत जबी पति श्री सैय्यद अब्दुल गुफरान** के नाम पर नामांतरण किया मना है।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय गन्ती संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/ भवन के नामांतरण के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अन्दर स्वत: उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। रित तिथि के बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जावेंगी, एवं भवन का नामांतरण आदेश जारी कर दिया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम–सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कबीर नगर, फेस-3 रायपुर में निर्मित एच.आई.जी. डीलक्स भवन योजना में से भवन/भूखण्ड **क्रमांक एच.आई.जी. डीलक्स-112. श्री शिवदास काम्बले पिता स्व. नामदेव काम्बले** को भाड़ाक्रय आधार पर आबंटित/नामातरित किया गया है। आबंटी / नामांतरी द्वारा **दिनांक 09.03.2006** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी / नामांतरी की मृत्यु **दिनांक 01.05.2021** को हो जाने के कारण उनके पुत्र **श्री शरद काम्बले स्व. शिवदास काम्बले** द्वारा उक्त भवन / भूखण्ड अपने नाम पर नामांतरण करने हेतु आवेदन पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र शपथ पत्र वारिसों (**1. श्रीमती ज्योत्सना काम्बले पति स्व. शिवदास काम्बले 2. श्रीमती प्रीति मेश्राम पति श्री देवेन्द्र कुमार मेश्राम 3. श्रीमती नीतू गणवीर पति स्व. राजू गणवीर 4. श्री सुमेद काम्बले पिता स्व. शिवदास काम्बले 5. कु. स्मिता काम्बले पिता पिता स्व. शिवदास काम्बले**) की सहमति पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त भवन/भूखण्ड **श्री शरद काम्बले पिता स्व. शिवदास काम्बले** के नाम पर नामांतरण किया जाना है।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय/ वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/ भवन के नामांतरण के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अन्दर स्वत: उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित तिथि के बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जायेंगी, एवं भवन का नामांतरण आदेश जारी कर दिया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda
क्षेत्रीय कार्यालय, जीवन प्रकाश, एलआईसी बिल्डिंग, पंडरी, रायपुर (छ.ग.), फोन नं. 0771 - 4222611, 4222612
ई-मेल: recovery.raipur@bankofbaroda.com

अचल संपत्ति का कब्जा नोटिस

यतः बैंक ऑफ़ बड़ौदा के प्राधिकृत अधिकारी के रुप में अधोहस्ताक्षरी द्वारा वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्गठन और प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 की धारा 13(2) के साथ पढ़े जाने वाली प्रतिभूति हित प्रवर्तन नियम, 2002 के नियम 3 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित बकायेदारों / जमानतदारों को मांग नोटिस निर्गत की गई थी। उक्त मांग नोटिसों में, वर्णित धनराशि को संबंधित बकाएदारों से, उक्त नोटिसों की प्राप्ति की तिथि से 60 दिनों के अंदर बैंक को अदा करने की मांग की गई थी,जिसे निम्नलिखित नाम वाले बकायेदार/जमानतदार मांग की गई धनराशि को लौटाने में असफल रहे हैं। अतः एतद् द्वारा संबंधित बकायेदारों/जमानतदारों एवं सर्वसाधारण को सूचित किया जाता हैं कि बैंक ऑफ़ बड़ौदा के प्राधिकृत अधिकारी ने संबंधित कॉलम में दी गई तिथियों को उक्त अधिनियम की धारा 13 (4) के साथ पढ़े जाने वाली प्रतिभूति हित प्रवर्तन नियम, 2002 के नियम 8 तथा धारा 14 के साथ पठित उक्त नियमावली के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए अधोलिखित सम्पत्तियों को उनके सम्मुख अंकित दिनांक को अपने कब्जे में ले लिया हैं जिनका विवरण निम्नानुसार हैं:-

क्र.	शाखा का नाम /फोन नं.	उधारकर्ता / जमानतदार का नाम	प्रतिभूतिकृत संपत्ति का विवरण	मांग नोटिस की तिथि राशि एवं सांकेतिक / भौतिक कब्जा तिथि
01	देवेंद्र नगर शाखा रायपुर 9109993957	मेसर्स रायपुर इलेक्ट्रिकल एंड पावर मशीनरी सेल्स एंड सर्विसेज प्रोप. श्री मोहम्मद मुख्तार पिता श्री शेख मुस्लिम और जमानतदार- श्री शेख मुस्लिम पिता श्री शेख इशाक, वार्ड नं. 34, गुरु गोविंद सिंह वार्ड, मस्जिद के पास, ताज नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 492001.	संपत्ति का वह सभी हिस्सा और अभिन्न अंग जिसमें शामिल फ्लैट नं......./प्लाट नं.- 27/4 क , सर्वे नं............/ ब्लॉक शीट नं.-44 / सिटी या टाउन सर्वे नं.- /खसरा नं.- 395 / 1 का भाग, क्षेत्रफल- 1074 वर्गफीट, गुरु गोविंद सिंह वार्ड नं.-34, ताज नगर, मस्जिद के पास, मौजा- पंडरी तराई , उप-जिला पंजीकृत रायपुर एवं जिला - रायपुर, छ.ग. हैं जो श्री शेख मुस्लिम पुत्र श्री शेख ईशाक के नाम पर हैं. सीमाएं: उत्तर- रोड, दक्षिण- यासीन का मकान, पूर्व- मस्जिद, पश्चिम-इस्लाम.	08.11.2024 रु. 13,24,916.70 + ब्याज + अन्य प्रभार 06.03.2025 सांकेतिक कब्जा

अग्रेतर एतद् द्वारा आम जनता विशेषकर उधारकर्ता एवं जमानतदारों को सूचित किया जाता हैं कि उपरोक्त संपत्तियों का लेनदेन न करें, उक्त संपत्ति का लेनदेन बैंक ऑफ़ बड़ौदा के प्रभार के अधीन होगा।
हम ऋणकर्ता का ध्यान प्रतिभूत आस्तियों के मोचन (redeem) के लिए उपलब्ध समय के संबंध में, उक्त अधिनियम की धारा 13 की उपधारा 8 की ओर आकर्षित करते हैं.

दिनांकः 07.03.2025, स्थानः रायपुर, छत्तीसगढ़ — प्राधिकृत अधिकारी, बैंक ऑफ़ बड़ौदा

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./16137/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 22-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16137
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107G0276B** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SISHUPAL SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BRIJLAL SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **राजाराम साहू** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. शिशुपाल साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **PARIWARIK BATWARANAMA** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

–सूचना जारी करें–
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./16135/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 16-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16135
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107G00276** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SISHUPAL SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BRIJLAL SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **मनोहर साहू** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. शिशुपाल साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **PARIWARIK BATWARANAMA** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

–सूचना जारी करें–
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./16136/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 22-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16136
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107G0276A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SISHUPAL SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BRIJLAL SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **राजेन्द्र साहू** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. शिशुपाल साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **PARIWARIK BATWARANAMA** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

–सूचना जारी करें–
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./17410/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 14-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 17410
वार्ड का नाम- 17 - ठक्कर बप्पा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 17 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR109E00165** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **JUGNU GUPTA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MOHAN GUPTA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **NEHA MISHRA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NEERAJ MISHRA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

–सूचना जारी करें–
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर जोन क्रमांक 09
गोवा थाना के पीछे स्थित सामुदायिक भवन

क्र/562/ न.पा.नि./ जोन क्र. 09/2025 — रायपुर दिनाक 04/03/2025

।। प्रथम निविदा आमंत्रण सूचना ।।

नगर पालिक निगम रायपुर के जोन क्रमांक -9 में निम्न कार्य हेतु सीलबंन निविदा नियमानुसार तीन लिफाफा पद्धति से दिनांक 25/03/2025 सध्या 5:30 तक निविदायें रजिस्टर्ड डाक / स्पीड पोस्ट के माध्यम से नगर पालिक निगम जान कार्यालय क्र. 09 में आमंत्रित की जाती है। इस हेतु निविदा प्रपत्र प्राप्त करने के लिए दिनांक 17/03/2015 को संख्या 5:00 बजे तक आवेदन के साथ निर्धारित राशि जमा कर सकेगें। दिनांक 19/03/2025 को संध्या 5.00 बजे तक निविदा प्रपत्र जारी होगे। प्राप्त निविदायें दिनांक 20.03.2025 को अपरान्ह 12:00 बजे उपस्थित निविदाकारों अथवा उनके अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जावेंगी।

क्र.	मद का नाम	कार्य का नाम	अनुमानित व्यय (लाख रूपये में)	अमानति राशि (रूपये में	निविदा प्रपत्र मूल्य	निविदा प्रपत्र प्रारूप	समयवधि	ठेकेदार की श्रेणी	एस.ओ.आर. दर
1.	सामान्य मद	पं. विद्याचरण शुक्ल वार्ड क्रमांक - 51 अंतर्गत शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला जोरा में डिस्मेंटल कार्य।	1.49	2000.00	300.00	A	01 माह	ई रजिस्टेशन द श्रेणी व उससे ऊपर	लोक निर्माण के भवन एस. ओ. आर. आर.दिनांक 01.01.2015 से प्रभावशील तथा निविदा दिनांक तक संशोधित
2.	सामान्य मद	नेताजी सुभाष चंद्र बोस वार्ड क्रमांक - 31 अंतर्गत खम्हारडीह बुनियादी स्कूल परिसर अंतर्गत सुलभ शौचालय का सेप्टिक टैंक बनाने का कार्य।	1.31	2000.00	300.00	A	02 माह	ई रजिस्टेशन द श्रेणी व उससे ऊपर	लोक निर्माण के भवन एस. ओ. आर. आर.दिनांक 01.01.2015 से प्रभावशील तथा निविदा दिनांक तक संशोधित
3.	सड़क बाधा मद	मोती लाल नेहरू वार्ड क्रमांक-08 अंतर्गत वीआईपी स्टेट में सड़को पर स्पीड ब्रेकर लगाने का कार्य	0.98	2000.00	300.00	B	01 माह	अनुभवी फर्म एवं संस्था	आईटम रेट
4.	अधो संरचना मद	शेड एवं रंगमंच निर्माण कार्य हाई स्कूल लाभाण्डी वार्ड क्रमांक - 51, विद्याचरण शुक्ल वार्ड, रायपुर	12.00	12000.00	750.00	A	05 माह	ई रजिस्टेशन द श्रेणी व उससे ऊपर	लोक निर्माण के भवन एस. ओ. आर. आर.दिनांक 01.01.2015 से प्रभावशील तथा निविदा दिनांक तक संशोधित
5.	अधोसंरचना मद	रंगमंच निर्माण कार्य, वृन्दावन कालोनी बी. एस.यू.पी. सड्डू, जिला - रायपुर वार्ड क्रमांक - 07 कुशाभाऊ ठाकरे	5.00	5000.00	750.00	A	03 माह	ई रजिस्टेशन द श्रेणी व उससे ऊपर	लोक निर्माण के भवन एस. ओ. आर. आर.दिनांक 01.01.2015 से प्रभावशील तथा निविदा दिनांक तक संशोधित
6.		कुशाभाऊ ठाकरे वार्ड क्रमांक - 07 अंतर्गत ईरानी बी.एस.यू.पी. कालोनी में पाईप लाईन बिछाने का कार्य।	1.29	2000.00	300.00	A	02 माह	ई रजिस्टेशन द श्रेणी व उससे ऊपर	लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के एस.ओ.आर.दिनांक 01.06.2020 से प्रभावशील तथा निविदा दिनांक तक संशोधित
7.	सामान्य मद	पं. विद्याचरण शुक्ल वार्ड क्रमांक - 51 अंतर्गत बालाजी कैंसर हास्पिटल के पास पाईप लाईन बिछाने का कार्य	1.69	2000.00	300.00	A	02 माह	ई रजिस्टेशन द श्रेणी व उससे ऊपर	लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के एस.ओ.आर.दिनांक 01.06.2020 से प्रभावशील तथा निविदा दिनांक तक संशोधित
8.	विधायक निधि	कुशाभाऊ ठाकरे वार्ड क्रमांक -7 जोन क्र. 09 सामुदायिक भवन निर्माण कार्य - बी. एसयूपी अंबेडकर (खालबाड़ा) में सेक्टर - 03 सड्डू	5.00	5000.00	750.00	A	04 माह	ई रजिस्टेशन द श्रेणी व उससे ऊपर	लोक निर्माण के भवन एस. ओ. आर. आर.दिनांक 01.01.2015 से प्रभावशील तथा निविदा दिनांक तक संशोधित
9.	विधायक निधि	पं. विद्याचरण शुक्ल वार्ड क्रमांक - 51, जोन क्र. 9 रंगमंच निर्माण कार्य - निषाद पारा लाभाण्डी	5.00	5000.00	750.00	A	03 माह	ई रजिस्टेशन द श्रेणी व उससे ऊपर	लोक निर्माण के भवन एस. ओ. आर. आर.दिनांक 01.01.2015 से प्रभावशील तथा निविदा दिनांक तक संशोधित
10.	विधायक निधि	पं. विद्याचरण शुक्ल वार्ड क्रमांक - 51, जोन क्र. 9 रंगमंच निर्माण कार्य - चण्डी चौक, फुण्डहर	10.00	10000.00	750.00	A	05 माह	ई रजिस्टेशन द श्रेणी व उससे ऊपर	लोक निर्माण के भवन एस. ओ. आर. आर.दिनांक 01.01.2015 से प्रभावशील तथा निविदा दिनांक तक संशोधित

।। द्वितीय निविदा आमंत्रण सूचना ।।

नगर पालिक निगम, जयपुर के जोन क्रमांक 9 में निम्न कार्य हेतु सीलबद निविदा नियमानुसार तीन लिफाफा पद्धति से दिनांक 18/02/2025 में सध्या 5.30 तक निविदाय रजिस्टर्ड डाक / स्पीड पोस्ट के माध्यम से नगर पालिक निगम जोन कार्यालय क्र. 09. में आमंत्रित की जाती है। इस हेतु निविदा प्रपत्र प्राप्त करने के लिए दिनांक 10/03/2025 की संध्या 5:00 बजे तक आवेदन के साथ निर्धारित राशि जमा कर निविदा प्रपत्र प्राप्त कर लिये जा सकेगें। दिनांक 12/03/2025 को संध्या 5.00 बजे तक निविदा प्रपत्र जारी होगें। प्राप्त निविदायें दिनांक 17.03 2025 को अपराना 12.00 बजे उपस्थित निविदाकारों अथवा उनके अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जावेगी।

क्र.	मद का नाम	कार्य का नाम	अनुमानित व्यय (लाख रूपये में)	अमानति राशि (रूपये में	निविदा प्रपत्र मूल्य	निविदा प्रपत्र प्रारूप	समयवधि	ठेकेदार की श्रेणी	एस.ओ.आर. दर
11.	सामान्य मद	सामुदायिक भवन निर्माण, छत्तीसगढ़ यादव महासंघ परिषद्, जोरा-पिरदा रोड वालेन्टीयर क्रांसिंग के आगे मुक्तिधाम के बाजू लाभाण्डी वार्ड नं. 51 पं. विद्याचरण शुक्ल वार्ड, नगर नगर पालिक निगम, रायपुर जिला - रायपुर।	5.40	6000.00	750.00	A	06 माह	ई रजिस्टेशन द श्रेणी व उससे ऊपर	लोक निर्माण के भवन एस. ओ. आर. आर.दिनांक 01.01.2015 से प्रभावशील तथा निविदा दिनांक तक संशोधित
12.	सामान्य मद	कुशाभाऊ ठाकरे वार्ड क्रमांक - 07 अंतर्गत सड्डू में साजनदास बी. एस. यू.पी में सामुदायिक भवन निर्माण कार्य।	10.00	10000.00	750.00	A	05 माह	ई रजिस्टेशन द श्रेणी व उससे ऊपर	लोक निर्माण के भवन एस. ओ. आर. आर.दिनांक 01.01.2015 से प्रभावशील तथा निविदा दिनांक तक संशोधित

।। प्रथम निविदा आमंत्रण सूचना ।।

नगर पालिक निगम, रायपुर के जोन क्रमांक 9 में निम्न कार्य हेतु सीलबद निविदा नियमानुसार तीन लिफाफा पद्धति से दिनांक 25/05/2025 समय 5.30 तक निविदायें रजिस्टर्ड डाक / स्पीड पोस्ट के माध्यम से नगर पालिक निगम जोन कार्यालय क्र. 09, में आमंत्रित की जाती है। इस इतु निविदा प्रपत्र प्राप्त करने के लिए दिनांक 17/03/2025 को सध्या 5:00 बजे तक आवेदन के साथ निर्धारित राशि जमा कर सकेंगें। दिनांक 19/03/2025 को सध्या 5:00 बजे तक निविदा प्रपत्र जारी होगें। प्राप्त निविदायें दिनांक 20.03.2025 को अपरान्ह 12:00 बजे उपस्थित निविदाकारों अथवा उनके अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जावेगी।

क्र.	मद का नाम	कार्य का नाम	अनुमानित व्यय (लाख रूपये में)	अमानति राशि (रूपये में	निविदा प्रपत्र मूल्य	निविदा प्रपत्र प्रारूप	समयवधि	ठेकेदार की श्रेणी	एस.ओ.आर. दर
13.	सामान्य मद	जोन क्रमांक - 09 के अंतर्गत फुण्डहर गौठान में 10 अंकुशल श्रमिक प्लेसमेंट के माध्यम से (परिवर्तनशील दर पर) उपलब्ध कराये जाने का कार्य।	1527240.00	16000.00	750.00	B	12 माह	ई रजिस्टेशन द श्रेणी व उससे ऊपर	श्रम आयुक्त कार्यालय ई.पी.एफ. कार्यलय कर्मचारी राज्य बीमा निगम में पंजीकृत

1. कार्य से संबंधित जानकारी एवं शर्ते कार्यालयीन दिवस में नगर पालिक निगम जोन क्रमांक 09 से प्राप्त की जा सकती है। उक्त निविदा संबंधी जानकारी नगर निगम पोर्टल से भी प्राप्त की जा सकती है।
2. नगर पालिक निगम रायपुर द्वारा उपरोक्त कार्य हेतु लोक निर्माण विभाग, छत्तीसगढ़ शासन, रायपुर में एकीकृत पंजीयन प्रणाली से सक्षम श्रेणी में पंजीकृत से तीन लिफाफा पद्दति जमा करना है।
3. लिफाफा (1) में अमानती राशि का एफ. डी. आर. च शपथ पत्र एवं चाही गई समस्त दस्तावेज।
4. लिफाफा (ब) में निविदा प्रपत्र भरकर सीलबंद करना होगा।
5. (अ) + (4) एक अन्य तीसरे लिफाफे (स) में नरकर ही स्पीड पोस्ट के द्वारा प्राप्त किया जावेगा।
6. सर्वप्रथम लिफाफा (स) खोलने के पश्चात् लिफाफा (अ) खोला जावेगा, जिसमें अमानती राशि का एफ डीआर एवं अन्य बाही गई दस्तावेज होने पर ही निविदा प्रपत्र की लिफाफा (ब) खोली जायेगी तथा लिफाफे में 'अ' 'ब' एवं 'स' अंकित होना अनिवार्य है।
7. निविदा में उल्लेखित उपरोक्त दिनाक में शासकीय अवकाश होने की स्थिति में अगले कार्यालयीन दिवस में कार्यवाही किया जावेगा।
8. राक्षम श्रेणी का ई-रजिस्ट्रशन, बैंक साल्वेंशी, अंतिम 03 वर्ष का आई. टी आर पैनकार्ड, जी.एस.टी रजिस्ट्रेशन, जीएसटी. रिटर्न (अंतिम तीन माह), अमानती राशि का एफ डी आर एवं शपथपत्र (रु. 100.00 के नान ज्यूडिशियल स्टांप पेपर के साथ) प्रेषित करना अनिवार्य होना।
9. 03 वर्ष के आयकर की बाध्यता नच फर्मो के लिए बधनकारी नहीं होगी। तीन लिफाफा पद्धति में लिफाफा नहीं देने पर निविदा पर विचार नहीं किया जावेगा। ठेकेदारों का फार्म में दिये गये शर्त अनुसार कार्य किया जाना अनिवार्य होगा।
10. किसी भी निविदा को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने का अधिकार नगर निगम रायपुर के नाल सुरक्षित है
11. ठेकेदारों को फार्म में दिये गये शती के अनुसार कार्य किया जाना अनिवार्य होगा।

घरो से निकलने वाले सूखा और गीला कचरे को सफाई मित्र (वाहन) को देखें।

जोन आयुक्त
क्रमांक 09.
नगर पालिक निगम, रायपुर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर, शुक्रवार 07 मार्च 2025

हुड़दंग करने वालों पर रहेगी पैनी नजर शांति समिति की बैठक में बोले थाना प्रभारी सरफ़राज फ़िरदोशी

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-होली पर्व को लेकर के भटगांव थाना में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। सूरजपुर पुलिस अधीक्षक प्रशांत कुमार ठाकुर के निर्देशानुसार भटगांव थाना परिसर में होली पर्व को शांतिपूर्ण तरीके से मनाने को लेकर बुधवार को शांति समिति की बैठक की गई। शांति समिति के बैठक में भटगांव थाना प्रभारी सरफ़राज फ़िरदोशी ने कहा कि होली सबका त्यौहार है और सभी इसको ख़ुशी के साथ मनाये। कोई भी किसी भी बहाने हुड़दंग करके किसी को भी परेशान न करें,आपसी भाईचारा निभाते हुवे सभी के मान सम्मान का ख्याल रख कर होली खेले। अफ़वाह फैलाने वालों पर, हुड़दंग करने वालों पर पुलिस की पैनी नजर रहेगी। डीजे बजाते हुए पकड़े जाने पर साउंड-बॉक्स मशीन सेट जप्त कर उसके संचालक पर कानूनी कार्रवाई होगा है एग्जाम का समय है । होली के दिन प्रत्येक गांव में पुलिस तैनात रहेगी। उन्होंने जनप्रतिनिधियों व समाजसेवियों से शांति व्यवस्था बनाए रखने मे सहयोग करने की अपील करते हुए कहा कि प्रत्येक मामलों में सहयोग की अपेक्षा रहेगी। इस अवसर पर नगर पंचायत भटगांव अध्यक्ष श्रीमती परमेश्वरी राजवाड़े ने कहा की होली भाईचारे और रंगों का पर्व है। भटगांव मे वर्षो से शांति पूर्वक हर त्यौहार मनाने की परम्परा रहीं है। होली मे लोग एक दूसरे को रंग व गुलाल का प्रयोग करके खुशी मनाते हैं। पुलिस सक्रिय रहें और किसी प्रकार की कहीं कोई गलत घटना या अपराध ना हो इसका विशेष ध्यान रखें। शांति समिति की बैठक को नगर पंचायत जरही अध्यक्ष पुरन राम राजवाड़े भटगांव तहसीलदार शिवनारायण राठिया ने भी संबोधित किया तथा सभी से हर्ष व उल्लास के साथ शांतिपूर्वक होली मनाने की अपील की। इस अवसर पर पार्षद प्रिंस श्रीवास्तव, लक्ष्मी महतो, धनेश्वर प्रधान,ओंकार सिंह,रामफल पैकरा, बबिता सिंह,विकास राजवाड़े बीजेपी नेता अशोक सिंह, शरद चंद द्विवेदी,आशीष बाजपेई, कमलेश सिंह, ओ पी सिंह पूर्व एल्डरमैन अफ़रोज खान,अख़लाक़ खान,मुन्ना रंगरेज़,मनोज साहू,सरवन जायसवाल, पप्पू मिश्रा सहित भटगांव थाना के स्टाफ और गडमान्य नगर वासी उपस्थित थे।

18 वर्ष से कम आयु के बच्चों हेतु जिला जेल का किया गया निरीक्षण

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली द्वारा प्रकरण में पारित निर्णय के अनुक्रम में 18 वर्ष के बच्चों का त्रुटिपूर्ण निर्धारण करने उन्हें नियमित जेल में रखे जाने की संभावना होती है। न्यायालय के निर्देश एवं बालक अधिकार संरक्षण आयोग नई दिल्ली से प्राप्त निर्देश के अनुक्रम में जिले में स्थित जेल में निरुद्ध बंदियों में यदि कोई 18 वर्ष से कम आयु का है तो उम्र सत्यापन किये जाने हेतु अनुविभागीय अधिकारी (रा0) सूरजपुर की अध्यक्षता में गठित जेल निरीक्षण पैनल द्वारा तहसीलदार सूरजपुर एवं पैनल के सदस्यों द्वारा जिला जेल का निरीक्षण किया गया। जिला जेल सूरजपुर के जेल अधीक्षक श्री अक्षय तिवारी द्वारा निरीक्षण पैनल को साथ में लेकर जेल के सभी बंदियों से मुलाकात करवाया गया। जिला बाल संरक्षण अधिकारी मनोज जायसवाल द्वारा जेल के बंदियों से 18 वर्ष से कम आयु के बच्चे जेल में है क्या इस संबंध में जेल में निरुद्ध बंदियों से जानकारी ली गयी। जेल के किसी भी बंदियों द्वारा अपनी आयु को लेकर कोई भी शंका व्यक्त नही कि गयी की उनकी आयु 18 वर्ष से कम है। जिससे कोई भी बंदी 18 वर्ष के कम आयु का नही पाया गया।

जेल में निरीक्षण के दौरान दो बंदियों द्वारा उनके घर पर उनके बच्चों का देखभाल करने वाले नहीं है ऐसी जानकारी पैनल के समक्ष आयी। पैनल द्वार उन दोनों बंदियों का नाम, पता लेकर संबंधित ग्राम में उन बच्चों के संबंध में जानकारी इकट्ठा की जावेगी। यदि बच्चों का देखभाल एवं संरक्षण करने वाले नहीं होगें तो उन बच्चों को बाल कल्याण समिति में प्रस्तुत करने की कार्यवाही की जावेगीं। निरीक्षण के दौरान श्री समीर शर्मा तहसीलदार सूरजपुर, श्री प्रियांक पटेल शिशु रोग विशेषज्ञ, श्री मनोज चतुर्वेदी जिला लोक अभियोजन अधिकारी सूरजपुर, श्री मनोज जायसवाल जिला बाल संरक्षण अधिकारी, श्री संजय भारत अधिवक्ता सूरजपुर, श्री राजेन्द्र गुप्ता सामाजिक कार्यकर्ता, श्री अखिलेश कुमार सिंह संरक्षण अधिकारी (संस्थागत) उपस्थित रहें।

इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के निर्विरोध जिला चेयरमैन निर्वाचित हुए बाबूलाल अग्रवाल

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व)-इंडियन रेडक्रास सोसायटी जिला शाखा सूरजपुर के चुनाव में चेयरमैन, वाइस चेयरमैन, कोषाध्यक्ष, राज्य प्रबंध समिति सदस्य जिला प्रतिनिधि के चारों पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुए। जिसमें बाबूलाल अग्रवाल चेयरमैन, वाइस चेयरमैन ओंकार पांडेय, कोषाध्यक्ष श्रवण जैन, राज्य प्रबंध समिति सदस्य जिला प्रतिनिधि के रूप में सेवानिवृत आईएएस अशोक अग्रवाल निर्विरोध चुने गए। बुधवार को जिला अस्पताल के सभाकक्ष में रेडक्रास सोसायटी के निर्वाचन की प्रक्रिया निर्वाचन अधिकारी रिटर्निंग ऑफिसर एवं सूरजपुर एसडीएम शिवानी जायसवाल द्वारा पूरी कराई गई। चेयरमैन के लिये बाबूलाल अग्रवाल, वाइस चेयरमैन के लिए ओंकार पांडेय, कोषाध्यक्ष के लिए श्रवण जैन राज्य प्रतिनिधि के लिए अशोक अग्रवाल ने नामंकन दाखिल किया जिससे वे निर्विरोध निर्वाचित किये गए। निर्वाचन के बाद जहां पूर्व चेयरमैन रामकृष्ण ओझा का शाल श्रीफल से स्वागत व स्मृति चिन्ह प्रदान कर विदाई दी गई तो वहीं निर्विरोध नवनिर्वाचित प्रबंध समिति के जिला सदस्य प्रेमनगर विधायक भूलन सिंह मरावी, ठाकुर प्रसाद राजवाड़े, विजय राज अग्रवाल, उपेंद्र दुबे, बलराम शर्मा, प्रवेश गोयल, मुकेश गर्ग, संदीप अग्रवाल ,अजय अग्रवाल, राजीव कुमार सिंह, लोकेश पैकरा, राहुल अग्रवाल, पवन कुमार गर्ग, विकास अग्रवाल, ललित कुमार गोयल, संत सिंह, शैलेश कुमार अग्रवाल, मनोज कुमार अग्रवाल, मनोज सोनी, अंशुल गोयल, चंदन कुमार सिंह, आदर्श कुमार तिवारी, नौशाद अहमद, नितेश गुप्ता, नीरज अग्रवाल, गौरव अग्रवाल सहित सभी निर्विरोध निर्वाचित जिला सदस्यों को विधिवत शपथ दिला कर उनका पदभार ग्रहण कराया गया। इस मौके पर कलेक्टर एस जयवर्धन, एसडीएम शिवनी जायसवाल, सहित पूर्व गृहमंत्री रामसेवक पैकरा, भीमसेन अग्रवाल, जिलाध्यक्ष मुरली मनोहर सोनी, ठाकुर प्रसाद राजवाडे आदि मंचासिन थे। कार्यक्रम का सफल संचालन मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कपिल पैकरा ने किया। बैठक में रेडक्रास सोसायटी के सभी 30 सदस्य की मौजूदगी में यह चुनाव संपन्न कराया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में रेड क्रॉस सोसाइटी के आजीवन सदस्य संस्कार अग्रवाल, रंजन सोनी व लक्ष्नधारी सिंह की अहम भूमिका रही।

एसईसीएल की दो महिला कर्मियों के बीच गाली गलौज व मारपीट, अपराध दर्ज

कोरबा(विश्व परिवार)। साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड कोरबा क्षेत्र के अंतर्गत केंद्रीय कर्मचारी की दो महिला कर्मचारियों के नाम पुलिस रिकॉर्ड में शामिल हो गए हैं। आपस में दोनों के बीच मारपीट और गाली गलौज हुई। अधिकारियों ने समझने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहे। दोनों पक्ष पुलिस चैकी मानिकपुर पहुंचे जहां पर उनके द्वारा प्राथमिकी दर्ज कराई गई। मानिकपुर चैकी प्रभारी नवीन पटेल ने बताया की यह घटना एसईसीएल कोरबा के सेंट्रल वर्कशॉप में हुई है। काफी दूरी से यहां आने वाले कर्मचारी दोपहर में भोजन के लिए घर नहीं जाते हैं बल्कि मौके पर ही इसकी व्यवस्था करते हैं। समय और श्रम की बचत करना इसका उद्देश्य होता है। सूत्रों के अनुसार लंच टाइम होने पर वर्कशॉप में एक ही क्षेत्र की दो महिला कर्मचारी अपना टिफ्नि खोल रही थी। तभी किसी बात को लेकर उनमें न केवल गलतफहमी हुई बल्कि शुरुआती बहस बाजी के बाद मामला गाली गलौज तक पहुंच गया। यहां दोनों ने एक दूसरे को अभद्र शब्द कहे। इसके बाद उनके बीच मारपीट भी हुई। घटना में दोनों को सामान्य चोट आई है। घटनाक्रम के दौरान संस्थान के कमी और अधिकारियों ने हस्तक्षेप करने की कोशिश की लेकिन कोई असर नहीं हुआ। घटना को लेकर दोनों महिला कर्मियों के द्वारा मानिकपुर चैकी पहुंचकर रिपोर्ट्स दर्ज कराई गई जिस पर भारतीय न्याय संहिता की धाराओं के तहत अपराध पंजीकृत कर लिया गया है। पुलिस ने कहा की इस मामले में नियमानुसार आगे की प्रक्रियाएं की जाएगी।

किसान सेवाराम को मिला कृषि विभाग की योजना का लाभ

अच्छा फसल उत्पादन से सेवा राम है खुश मुख्यमंत्री को दिया धन्यवाद

जशपुरनगर(विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के निर्देशानुसार कृषि विभाग द्वारा जिले के किसानों को शासन की योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है। विभाग द्वारा किसानों को उचित मार्गदर्शन देकर विभागीय योजनाओं का लाभ लेने के लिए भी प्रेरित किया जा रहा है। इसी कड़ी में जशपुर विकासखण्ड के ग्राम जिलिंग निवासी कृषक सेवाराम को कृषि विभाग द्वारा मार्गदशन देकर विगत वर्ष की तुलना में इस वर्ष उनके उत्पादन में वृद्धि कराया गया है। श्री सेवा राम ने कृषि विभाग के योजनाओं से लाभ मिलने पर मुख्यमंत्री को धन्यवाद दिया है। सेवा राम ने बताया कि उनका कृषि भूमि 2.800 हेक्टर है। जिसमें अपना देशी धान एवं अन्य फसल लगाता थे। जिसमें फसल उत्पादन बहुत कम होता था। लागत के अपेक्षा लाभ नहीं मिलता था। लेकिन उन्होंने इस वर्ष कृषि विभाग से संपर्क करके किसान क्रेडिट कार्ड बनाया। जिसमें उन्हें रसायनिक खाद व बैंक लोन प्राप्त हुआ। साथ ही उन्होंने ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी के माध्यम से धान बीज, एम.टी.यू. 1256, उड़द-प्रक्ष उड़द-1, अरहर सी.जी. अरहर एवं रागी बीज प्राप्त कर कृषि के मार्गदर्शन से खेती की। उचित मार्गदर्शन और विभागीय योजना से लाभ मिलने से इस वर्ष उनका उत्पादन पिछले वर्ष की तुलना में बहुत अच्छा हुआ है। जिससे वे बहुत खुश है। उन्होंने बताया कि आमदनी का पैसा को घर बनाने में खर्च किया।

तेज रफ्तार अनियंत्रित ट्रक की टक्कर से नाबालिग की मौत

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा सक्ती मार्ग भैसमा बाजार चैक के समीप तेज रफ्तार ट्रक अनियंत्रित होकर स्कूटी को ठोकर मारते हुए दिवाल में टकरा गया। जिसमें स्कूटी सवार नाबालिग की मौके पर ही मौत हो गई। घटना कल रात 9 बजे की बताई जा रही है। जानकारी के मुताबिक बेंदरकोना निवासी परमेश्वर कंवर उम्र 16 वर्ष कल अपने परिजनों के साथ भैसमा के एक कपड़ा दुकान में कपड़ा लेने आया हुआ था वहीं परिजन कपड़ा ले रहे थे। मृत नाबालिग बाहर स्कूटी में बैठकर मोबाइल चला रहा था। तभी तेज रफ्तार ट्रक अचानक से परमेश्वर को ठोकर मारते हुए दीवार से टकरा गया।

जिला प्रशासन की टीम द्वारा बालक एवं बालिका का रोका गया बाल विवाह

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-कलेक्टर श्री एस. जयवर्धन के निर्देश एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री रमेश साहू के मार्गदर्शन में सूरजपुर को बाल विवाह मुक्त करने के लिए जिले की संयुक्त टीम लगातार प्रयासरत है।

जिला बाल संरक्षण अधिकारी मनोज जायसवाल को सूचना प्राप्त हुई की एक 18 वर्ष बालक का विवाह प्रेम नगर विकासखंड एंव 15 वर्षीय बालिका का विवाह भैयाथान विकासखंड के एक गॉव में सम्पन्न होने जा रहा है। कार्यक्रम अधिकारी के निर्देश पर तत्काल दो टीम बनाई बनाई गई और मौके के लिए रवाना किया गया ।

जांच पर पाया गया के दोनो स्थान पर बाल बिवाह सम्पन्न करने की तैयारी है मण्डप लगे हुए है और दोनो स्थान पर मेहमान भरे है। सूचना सही थी बालक जहॉ 18 वर्ष की आयु भी पूरा नहीं किया था वही बालिका 15 वर्ष की आयु की थी दोनों स्थान पर समझाइश दिया गया । उन्हें कानूनी एंव सामाजिक बिन्दुओं की जानकारी दी गई। साथ ही बाल विवाह के होने वाले दुष्प्रभाव की भी जानकारी दिया गया कम उम्र मे विवाह करने मे आने वाली कठनाईयो के संबध मे जानकारी दी गई दोनो स्थान मे समझाइश पर बाल विवाह रोकने की कार्यवाही की गई पंचनामा,कथन लिया गया असैर मडंप को उजाड़ दिया गया जिला बाल संरक्षण अधिकारी मनोज जायसवाल ने सूचना कर्ता को सजग रहने को कहॉ और बाल विवाह रोक दिये जाने की जानकारी दी कल फिर सूचनाकर्ता द्वारा सूचित किया गया की भैयाथान मे रोंके गये बाल विवाह को सम्पन्न करने की तैयारी चल रही है बारात भी आ रहा है सूचना प्राप्त होते ही जिला कार्यक्रम अधिकरी श्री रमेश साहू ने एसडीएम भैयाथाम को सूचना दी मौके पर भैयाथान तहसीलदार श्री संजय राठौर परियोजना अधिकारी इमरान अख्तर एंव अंजीत लकड़ा पुलिस बल के साथ मौके पर पहुचे तब पता चला बारात आ गयी है और विवाह करा दिया जाएंगा बालिका पक्ष से बात करने पर पता चला कि लड़की पक्ष वाले बारात रोकने की बात कह रहे थे लड़के वाले बोले कि विवाह करेगें संबंधीत अधिकारी ने बालिका का विवाह हो जाने के अंदेषा से बालिका को पंचनामा बनाकर बालिका को बाल कल्याण समिति मे प्रस्तूत कर सखी वन स्टाप सेंटर मे आश्रय हेतु लाया गया उपरोक्त कार्यवाही मे जिला बाल संरक्षण अधिकारी मनोज जायसवाल परियोजना अधिकारी मो इमरान अख्तर संरक्षण अधिकारी अखिलेश सिंह परामर्शदाता जैनेन्द्र दुबे माया राजवाड़े प्रभारी परियोजना अधिकारी अंजली महिलांगे, स्वेता सोनवानी, जयश्री केवर्थ पर्यवेक्षक, एएसआई महेन्द्र सिंह मरावी,प्यासी विनोद प्रताप सिंह,हेमंत सिंह, चंद्रकांत मुंजनी, पिताम्बर सिंह, राकेश सिंह, अंजीत लकड़ा पवन धीवर चाइल्डलाइन शीतल सिंह, रमेश साहू सरपंच श्री जगलाल सिंह उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

हायर सेकण्डरी स्कूल सर्टिफिकेट कक्षा 12वीं की परीक्षा सफलतापूर्वक हुई संचालित

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-छ.ग. माध्यमिक शिक्षा मण्डल रायपुर द्वारा हायर सेकण्डरी स्कूल सर्टिफिकेट मुख्य परीक्षा वर्ष 2025 कक्षा 12वीं, विषय इतिहास, व्यवसाय अध्ययन, कृषि विज्ञान के तत्व एवं गणित, ड्राइंग एंड पेंटिंग, आहार एवं पोषण (फूड एंड न्यूट्रिशन) सूरजपुर जिले के निर्धारित 73 परीक्षा केंद्रों में कुल परीक्षार्थी दर्ज संख्या - 3341, उपस्थित 3268, अनुपस्थित 73 समस्त परीक्षा केंद्रों में परीक्षा सफलतापूर्वक संचालित हुई। श्रीमती भारती वर्मा जिला शिक्षा अधिकारी के द्वारा निम्नांकित परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया गया। परीक्षा केंद्र शा.उ.मा.वि.बालक सलका अधिना भैयाथान में कुल दर्ज परीक्षार्थी की संख्या- 08, शा.उ.मा.वि.बालक भैयाथान में दर्ज - 21, सेजेस भैयाथान में दर्ज 12, शा.उ.मा.वि. दवना कुल दर्ज - 05 है। परीक्षा केंद्रों में शत प्रतिशत परीक्षार्थी उपस्थित रहे। सभी केंद्रों में परीक्षा सुव्यवस्थित एवं शांतिपूर्ण संचालित होना पाया गया एवं कोई नकल प्रकरण दर्ज नहीं किया गया।

8 मार्च को वर्ष 2025 का प्रथम नेशनल लोक अदालत किया जाएगा आयोजित

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं छत्तीसगढ़ राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के दिशानिर्देशन में श्री गोविन्द नारायण जांगडे जिला न्यायाधीश / अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सूरजपुर के मार्गदर्शन में 08 मार्च को जिला न्यायालय सूरजपुर, तालुका न्यायालय प्रतापपुर एवं कुटूम्ब न्यायालय सूरजपुर तथा जिले के समस्त राजस्व न्यायालयों में नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है। लोक अदालत में प्रकरणों की सुनाई किये जाने हेतु जिला एवं सत्र न्यायालय सूरजपुर एवं कुटूम्ब न्यायालय मिलाकर कुल 11 खण्डपीठों का गठन किया गया है, वहीं तालुका न्यायालय प्रतापपुर में 02 तथा राजस्व न्यायालयों में सुनवाई हेतु 20 कुल 32 खण्डपीठों का गठन किया गया है। इस नेशनल लोक अदालत में वर्चुअल एवं फिजिकल दोनों ही माध्यम से प्रकरणों की सुनवाई की जावेगी। लोक अदालत में न्यायालयों में लंबित राजीनामा योग्य आपराधिक प्रकरण, मोटर दुर्घटना दावा प्रकरण, परिवारिक विवाद व अन्य राजीनामा योग्य राजस्व प्रकरणों तथा बैंक ऋण, विद्युत, जल के बकाया देयकों का प्री लिटिगेशन प्रकरणों को नेशनल लोक अदालत में सुनवाई हेतु रखे जाएंगे। राजस्व विभाग के मामले सुनवाई हेतु राजस्व न्यायालयों में ही रखे जाएंगे। लोक अदालत एक ऐसा मंच है, जहा न्यायालयों में लंबित वाद-विवाद /मुकदमें या प्री-लिटिगेशन चरण के मामलों का सौहार्दपूर्ण तरीके से निपटारा किया जाता है। लोक अदालत विवादों के निपटारे का वैकल्पिक माध्यम है, जहां श्रम, धन, की बचत होती है, वहीं लोगों के मध्य आपसी विवाद हमेशा के लिए समाप्त होने के साथ आपसी बैर की भावना हमेशा के लिए समाप्त हो होती है। जिले वासियों से अपील है 2025 के प्रथम नेशनल लोक अदालत में अधिक से अधिक लोग उपस्थित होकर अपने अपने मामले को आपसी समझौते के आधार पर हमेशा के लिए समाप्त करने हेतु वर्चुअल एवं फिजिकल दोनों ही माध्यम उपस्थित होवें। वर्चुअल मोड पर उपस्थित होने के लिए जिला न्यायालय सूरजपुर की वेबसाईट https://surajpur.dcourts.gov.in पर जाकर संबंधित कोर्ट के आगे दिए लिंक पर क्लिक कर वर्चुअल मोड पर जुड़ा जा सकता है। बैंक ऋण, बकाया बिजली बिल, जल के बकाया देयकों के प्री लिटिगेशन प्रकरणों में पक्षकारों को नियमानुसार छूट दिया जाएगा।

ट्रक की चपेट में आने से स्कूटी सवार की मौत

कोरबा(विश्व परिवार)। तेज रफ्तार ट्रक की चपेट में आने से स्कूटी सवार नाबालिग की मौके पर ही मौत हो गई. घटना के बाद नशे में धुत ट्रक चालक की लोगों ने जमकर पिटाई की. सूचना पर पहुंची 112 की टीम ट्रक चालक को गिरफ्तार कर थाने लाई.घटना उरगा थाना अंतर्गत कोरबा सक्ती मार्ग पर भैसमा बाजार चौक के मुख्य मार्ग पर रात करीबन 9 बजे घटित हुई।

संपादकीय

ट्रंप की गोल्ड कार्ड योजना

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के गोल्ड कार्ड ने पूरी दुनिया को चकमका दिया है। ट्रंप जो कहते हैं वह हमेशा कर भी दें इसकी कोई गारंटी नहीं है। और इसकी भी कोई गारंटी नहीं की जो वह करना चाहते हैं उसे सचमुच कर पाएं, मगर इतना तय है कि उन्होंने पदभार संभालते ही जिस तरह का धूम-धड़ाका किया है उसने कई देशों की नींद उड़ा दी है। कई देशों को चिंता में डाल दिया है तो कई देशों को अपनी अमेरिकी नीति पर पुनर्विचार करने पर बाध्य कर दिया है। भारत भी ट्रंप की घोषणाओं और उसके क्रियान्वयन से अछूता नहीं है। अवैध प्रवासियों की अपमानजनक वापसी की धमक भारत झेल ही रहा था कि अब उसे गोल्ड कार्ड भी परेशानी में डाल रहा है। ट्रंप की गोल्ड कार्ड योजना वास्तव में क्या है किसी के समझ में नहीं आई है। इस योजना के मुताबिक 50 लाख अमेरिकी डॉलर यानी करीब 44 करोड़ रु पये देकर कोई भी विदेशी नागरिक अमेरिका में बस सकता है और तीव्र गति से अस्थाई नागरिकता प्राप्त करने के लिए अग्रसर हो सकता है। पहली बात तो यह है कि लोग धन कमाने के लिए लोग धन कमाने के लिए अमेरिका जाना चाहते हैं, अपना धन लेकर अमेरिका में बसना नहीं। यहां ट्रंप अमेरिका को एक बिकाऊ माल की तरह बेचना चाहते हैं जैसे कोई अच्छी जमीन बेची जाती है। यानी ट्रंप अमेरिका को ऐसे स्वर्ग के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं जहां किसी भी देश का कोई व्यक्ति 50 लाख अमेरिकी डॉलर खर्च कर बसना चाहेगा। क्या सचमुच अमेरिका ऐसा स्वर्ग है? अगर भारत की बात करें तो यहां बहुत बड़ी संख्या धनपतियों की है जिन्होंने अनेकानेक गैर कानूनी तरीकों से धनी इकट्ठा किया है और वह इसकी सुरक्षा चाहते हैं। ऐसे लोग भारत में सीधे राजनेताओं या राजनीतिक दलों को अपनी सुरक्षा के लिए धन उपलब्ध कराते हैं। चुनावी चंदे में इस तरह के कई मामले उजागर हुए थे। दूसरी बात जो ट्रंप ने प्रतिभावान विदेशी छात्रों के बारे में कही जो अमेरिका में पढ़ाई करने के बाद नागरिकता नहीं मिलने के कारण अपने मूल देश में लौटकर व्यापार करते हैं और करोड़ों में खेलने लगते हैं। सवाल है कि कोई अमेरिकी कंपनी 50 लाख डॉलर देकर ऐसे प्रतिभावान उद्योगों को नौकरी देने में रु चि क्यों दिखाएगी। इसका कोई ठोस तर्क सामने नहीं है। बहरहाल, जनता की गाढ़ी कमाई को अमेरिका में ले जाकर बसने के भ्रष्ट पूंजीपतियों को गोल्ड कार्ड ने जरूर सुनहरा अवसर दिखा दिया है।

देश में भुखमरी-कुपोषण रोकने के उपाय....

योगेंद्र योगी

असल चुनौती तो कुपोषण और भुखमरी की भयावहता से निपटने की है। यह समस्या मोटापे की तरह व्यक्तिगत नहीं है। इसके लिए मौजूदा और पिछली केंद्र की सरकारों के साथ राज्यों की सरकारें भी जिम्मेदार हैं भारत विडंबनाओं से भरा देश है। इन्हीं में से एक है मोटापा और भुखमरी। इनमें एक जुड़ाव भी है। एक तरफअनावश्यक और अत्यधिक खाने से बढऩे वाला मोटापे से होने वाली बीमारियां राष्ट्रव्यापी समस्या बनती जा रही हैं, वहीं दूसरी तरफआबादी का एक बड़े हिस्सा दो वक्त का भरपेट भोजन नसीब नहीं होने से कुपोषित होकर रोगग्रस्त हो रहा है। यदि मोटापा खत्म या नियंत्रित हो जाए तो इससे भुखमरी व कुपोषण के लिए धन की कमी पूरी हो सकती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात की 119वीं श्रृंखला में देश में बढ़ती मोटापे की समस्या पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि पिछले कुछ वर्षों में मोटापे के मामले दोगुने हो गए हैं और भारत में मोटापे की व्यापकता पर ध्यान देने की तत्काल आवश्यकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हम सब मिलकर छोटे-छोटे प्रयासों से इस चुनौती से निपट सकते हैं। जैसे एक तरीका है कि खाने के तेल में 10 पर्सेंट की कमी करना। भोजन में खाद्य तेल की खपत को कम करने के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए प्रधानमंत्री ने देश के दस प्रसिद्ध लोगों को नॉमिनेट किया। मोटापा सिर्फ सेहत का मसला नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था के लिए भी खतरा है। एक नई स्टडी के अनुसार भारत में मोटापे का आर्थिक बोझ 2030 तक बढक़र 6.7 लाख करोड़ रुपए प्रति वर्ष हो जाएगा। यह लगभग 4700 रुपए प्रति व्यक्ति होगा, जोकि जीडीपी का 1.57 फीसदी है। ग्लोबल ओबेसिटी ऑब्जर्वेटरी के अनुसार, 2019 में मोटापे का आर्थिक प्रभाव 2.4 लाख करोड़ रुपए था। यह लगभग 1800 रुपए प्रति व्यक्ति और जीडीपी का 1.02 फीसदी था। 2060 तक यह आंकड़ा बढक़र 69.6 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच सकता है, जो प्रति व्यक्ति 44200 रुपए और जीडीपी का 2.5 फीसदी होगा। यह स्टडी बताती है कि मोटापा सिर्फ एक स्वास्थ्य समस्या नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था के लिए भी बड़ा खतरा है। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-5 के अनुसार पुरुषों और महिलाओं में क्रमश: 44 प्रतिशत और 41 प्रतिशत लोग अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त हैं। पिछले सर्वेक्षण में यह आंकड़ा क्रमश: 37.7 फीसदी और 36 फीसदी था। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि मोटापे की समस्या तेजी से बढ़ रही है। विश्व मोटापा महासंघ ने कहा कि भारत में दुनिया में मोटे व्यक्तियों का तीसरा सबसे बड़ा प्रतिशत है। किसी व्यक्ति को तब मोटापे की श्रेणी में रखा जाता है जब उसका बीएमआई 27.5 से अधिक हो। पिछले 10 वर्षों में, भारत की मोटापे की दर लगभग तीन गुनी हो गई है, जिसका असर देश की शहरी और ग्रामीण दोनों आबादी पर पड़ रहा है। मोटापे का वैश्विक संकट सभी उम्र के लोगों को प्रभावित कर रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में मोटापे की दर अधिक है, जो देश के तेज आर्थिक विस्तार और बदलती जीवन शैली मानकों के साथ मेल खाता है। भारत में 100 मिलियन से अधिक लोग मोटापे से जूझ रहे हैं। भारत में 12 प्रतिशत पुरुष और 40 प्रतिशत महिलाएं पेट के मोटापे से ग्रस्त हैं। केरल (65.4 प्रतिशत), तमिलनाडु (57.9 प्रतिशत), पंजाब (62.5 प्रतिशत) और दिल्ली (59 प्रतिशत) में यह दर बहुत ज्यादा है। मध्य प्रदेश (24.9 प्रतिशत) और झारखंड (23.9 प्रतिशत) में यह दर कम है। आंकड़ों के अनुसार, भारत में पहले से ही 14.4 मिलियन बच्चे मोटे हैं। भारत में बचपन में मोटापे के प्राथमिक कारणों में खराब आहार विकल्प, निष्क्रियता और एक गतिहीन जीवन शैली शामिल है। प्रोसेस्ड स्नैक्स और फास्ट फूड की बढ़ती लोकप्रियता के कारण बच्चे उच्च कैलोरी, कम पोषक तत्व वाले आहार खा रहे हैं, जिससे वजन बढ़ता है और मोटापा होता है। बचपन में मोटापे के परिणाम व्यापक हैं और लंबे समय में बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। मोटे बच्चों को टाइप 2 मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और सांस लेने में कठिनाई जैसी दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याएं होने का उच्च जोखिम होता है। इसके अतिरिक्त उन्हें निराशा और खराब आत्मसम्मान सहित मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का अनुभव होने की अधिक संभावना है, जो उनके सामान्य स्वास्थ्य को खराब कर सकता है। विडंबना यह है कि देश मोटापे से होने वाली चुनौतियों से जूझ रहा है, वहीं कुपोषण की समस्या से भी जूझ रहा है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स रिपोर्ट 2024 में 127 देशों में भारत का स्थान 105वां है। हालांकि पिछले सालों की तुलना में इस साल भारत की रैंक में सुधार हुआ है। लेकिन भारत अभी भी गंभीर भूख की समस्याओं वाले देशों में शामिल है। 2024 की रिपोर्ट में भारत का स्कोर 27.3 है जो भुखमरी के एक गंभीर स्तर को दर्शाता है। रिपोर्ट में हाल के वर्षों में भारत में कुपोषण के प्रसार में मामूली वृद्धि का उल्लेख किया गया है। भारत की रैंकिंग अपने पड़ोसी देशों श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार और बांग्लादेश से पीछे है, जबकि पाकिस्तान और अफगानिस्तान से केवल ऊपर है। श्रीलंका 56, नेपाल 68 और बांग्लादेश 84वें स्थान पर भारत से काफी आगे हैं। भारत में कुपोषण की जो स्थिति है वो किसी से छिपी नहीं है। यहां बहुतों को तो पेट भर खाना भी नहीं मिलता और जिनको मिल भी रहा है उनके भोजन में पोषण की भारी कमी है। इसका खामियाजा नन्हें बच्चों को उठाना पड़ रहा है। भारत को अभी भी बाल कुपोषण जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें विश्व स्तर पर बच्चों में दुबलापन (18.7 प्रतिशत) सबसे अधिक है। देश में बच्चों के बौनेपन की दर 35.5 प्रतिशत, पांच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर 2.9 प्रतिशत और कुपोषण का प्रसार 13.7 प्रतिशत है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी एक रिपोर्ट में भारत में पोषण की स्थिति गंभीर बताई गई है। रिपोर्ट के आंकड़ों के मुताबिक देश में पांच वर्ष से कम उम्र के 31.7 फीसदी बच्चे स्टंटिंग का शिकार हैं। मतलब कि ये बच्चे अपनी उम्र के लिहाज से ठिगने हैं। यह रिपोर्ट 'लेवल्स एंड ट्रेंड इन चाइल्ड मालन्यूट्रिशन 2023' संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ), विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और वर्ल्ड बैंक द्वारा संयुक्त रूप से जारी की गई थी। बाल कुपोषण एक गंभीर मुद्दा बना हुआ है, जिसमें दुबलापन और बौनापन दोनों ही खतरनाक रूप से उच्च स्तर पर हैं। इंपीरियल कॉलेज लंदन द्वारा की गई इस रिसर्च के मुताबिक भारतीय किशोर, नीदरलैंड के समान आयु वर्ग के बच्चों की तुलना में 15.2 सेमी ठिगने हैं। इसी तरह यदि वेस्टिंग यानी ऊंचाई के लिहाज से वजन को देखें तो देश में भारत में पांच वर्ष या उससे कम आयु के 18.7 फीसदी बच्चों का वजन उनकी ऊंचाई के हिसाब से कम था। मतलब कि 2020 में इस आयु वर्ग के देश के करीब 2.2 करोड़ बच्चे वेस्टिंग का शिकार थे। मोटापे की समस्या से निपटना बहुत मुश्किल काम नहीं है। जीवनशैली और खानपान में बदलाव के साथ नियमित व्यायाम इत्यादि से इस समस्या को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। यह समस्या व्यक्तिगत है, इसलिए देश के हर व्यक्ति की निजी जिम्मेदारी है कि वह अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखे। ऐसा करने से व्यक्ति और उसके परिवार के साथ देश का भी नुकसान नहीं होगा। असल चुनौती तो कुपोषण और भुखमरी की भयावहता से निपटने की है। यह समस्या मोटापे की तरह व्यक्तिगत नहीं है। इसके लिए मौजूदा और पिछली केंद्र की सरकारों के साथ राज्यों की सरकारें भी जिम्मेदार हैं। इस समस्या से निपटने के लिए धन और भ्रष्टाचार रहित पारदर्शी नीति की आवश्यकता है। विशेषकर मोटापे से होने वाले आर्थिक नुकसान को रोक कर कुपोषण और भुखमरी जैसी अमानवीय समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। राजनीतिक दल जब तक अपने निहित क्षुद्र स्वार्थों को छोड़ कर ऐसे राष्ट्रीय मुद्दों पर एकराय नहीं होंगे।

आलेख

तंबाकू सेवन एक वैश्विक स्वास्थ्य और आर्थिक संकट

अमरपाल सिंह वर्मा

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के नेतृत्व में एक ऐसी संधि ने बीस साल पूरे कर लिए हैं, जिसका दुनिया भर में जन स्वास्थ्य को व्यापक लाभ मिला है। विश्व में फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन टोबैको कंट्रोल (एफसीटीसी) नामक यह संधि 27 फरवरी 2005 को हुई थी। अब इसे इतिहास की ऐसी पहल के रूप में स्वीकार्यता मिल गई है जिसे न केवल व्यापक रूप से अपनाया गया है बल्कि जिसके अपेक्षित परिणाम भी सामने आए हैं। इस संधि की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसकी बदौलत लाखों लोगों की जान बचाने में कामयाबी मिली है। मानवता के लिए एक गंभीर संकट बन चुके तंबाकू के दुष्प्रभावों को कम करने में इस संधि की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। यह सर्वविदित है कि तंबाकू मानवता के लिए एक अभिशाप बन चुका है। यह दुनिया में कैंसर, टीबी जैसी बीमारियों और उनकी वजह से होने वाली मौतों कारण बन रहा है। तंबाकू के कारण हर साल लाखों लोग मौत के मुंह में चले जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में 20 प्रतिशत हृदय रोगियों की मौत के लिए तंबाकू ही जिम्मेदार है। इसके अलावा यह सामाजिक एवं आर्थिक दबाव भी बढ़ाता है जिससे गरीब और मध्यम वर्गीय परिवार अधिक प्रभावित होते हैं। संधि के तहत कई प्रभावी उपाय अपनाए गए हैं जिनका सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वर्तमान में दुनिया के 138 देशों में सिगरेट के पैकेटों पर चेतावनियां दी जाती हैं, जिससे उपभोक्ताओं को तंबाकू के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया जा रहा है। कई देशों में तंबाकू उत्पादों की पैकेजिंग को साधारण कर दिया गया है, जिससे ब्रांडिंग और आकषर्क डिजाइन की संभावनाओं को समाप्त करने में मदद मिली है। यह कोई छोटी बात नहीं है कि इस संधि की बदौलत तंबाकू विज्ञापनों और प्रमोशन पर 66 से अधिक देशों में प्रतिबंध लगाया जा चुका है। सार्वजनिक स्थानों, कार्यस्थलों और अन्य बंद इमारतों में धूम्रपान निषेध से निष्क्रिय धूम्रपान के कारण होने वाले नुकसान को भी कम करने में मदद मिली है। इससे ऐसे लोगों का जीवन बचाने में सहायता मिली है, जो खुद सिगरेट का प्रयोग नहीं करते पर धूम्रपान करने वाले अन्य लोगों की वजह से इसका खतरा झेलते हैं। इसके परिणामस्वरूप, वि की एक चौथाई आबादी ऐसी नीतियों के दायरे में आ चुकी है, जिससे तंबाकू सेवन की प्रवृत्ति में गिरावट देखी गई है। डब्ल्यूएचओ ने संधि की 20 वीं वषर्गांठ के मौके पर कहा है कि तंबाकू के दुष्प्रभावों से बचाव पर केंद्रित यूएन संधि ने पिछले दो दशकों में लाखों-करोड़ों जिंदगियों की रक्षा करने में मदद की है। यह एक तथ्य है कि तंबाकू गैर संचारी रोगों का एक बड़ा कारण है जो न केवल असामयिक मौतों का कारण बनता है, बल्कि इससे प्रभावित लोग विकलागंता का भी शिकार हो सकते हैं। जो गरीब लोग तंबाकू जनित बीमारियों से पीड़ित होते हैं, उन पर इलाज का भारी बोझ पड़ता है। ऐसे लोग आम लोगों की तुलना में पोषक आहार से भी वंचित रहते हैं क्योंकि वह अपनी आमदनी का एक बड़ा हिस्सा महंगे तंबाकू उत्पादों पर खर्च कर डालते हैं। तंबाकू उत्पादन के लिए अत्यधिक जमीन एवं पानी की जरूरत पड़ रही है। अगर तंबाकू के प्रति लोग नकारात्मक रवैया अपनाएं तो इस जमीन व पानी का इस्तेमाल जरूरी खाद्यान्न के उत्पादन में किया जा सकता है। यदि तंबाकू का प्रचलन कम हो तो इन संसाधनों का उपयोग अधिक महत्त्वपूर्ण उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। यकीनन, इस संधि के तहत बहुत काम किया गया है पर अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। डब्ल्यूएचओ के और अन्य विशेषज्ञ इस संधि के तहत तंबाकू पर टैक्स बढ़ाने, विज्ञापन व प्रायोजकों पर रोक लगाने, नये तंबाकू व निकोटीन उत्पादों से पैदा हो रही चुनौतियों से निपटने जैसे विभिन्न उपायों को अपनाने पर बल दे रहे हैं। इस दिशा में सक्रियता से काम होना चाहिए। साथ ही, तंबाकू के प्रति नकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए शिक्षा और जागरूकता अभियानों को और सशक्त करने की आवश्यकता है। लोगों को यह समझाय जाना चाहिए कि तंबाकू सेवन केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं बल्कि यह एक वैश्विक स्वास्थ्य और आर्थिक संकट है।

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-25 समृद्धि,आर्थिक सशक्तिकरण और वैश्विक सम्मान का अद्भुत आयाम.....

रमेश शर्मा

भोपाल में संपन्न ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट केवल निवेश और औद्योगिक विकास तक सीमित नहीं है। इससे पूरे भारत के समग्र विकास और आर्थिक समृद्धि के नये द्वार खुले हैं। इसके साथ यह समिट वैश्विक स्तर पर मध्यप्रदेश की छवि और सम्मान बढ़ाने का भी माध्यम बनी। यह ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट केवल औद्योगिक विकास तक सीमित नहीं है। इसके बहुआयामी लाभ होंगे। जिस प्रकार यह संसार दो प्रकार का है । एक दृश्यमान और दूसरा अदृश्यमान । सृष्टि की कुछ ऊर्जाएँ ऐसी हैं जो दिखाई नहीं देतीं फिर भी जीवन संचालन में सहयोगी होतीं हैं। उसी प्रकार निवेश इस इन्वेस्टर्स समिट के निवेश प्रस्तावों के आकार लेने के बाद इसका परोक्ष प्रभाव भी मध्यप्रदेश के समाज जीवन पर होगा। इसके लिये मध्यप्रदेश सरकार ने समिट आयोजन से पहले कुछ अतिरिक्त तैयारी की है और औद्योगिक विकास को विरासत से भी जोड़ा है। यह प्रदेश आध्यात्मिक, साँस्कृतिक, प्राकृतिक और धार्मिक स्थलों का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। मध्यप्रदेश सरकार ने इन सबको जोड़कर धार्मिक और आध्यात्मिक पर्यटन की विधाएँ जोड़कर इन क्षेत्रों में निवेशकों को आमंत्रित किया था। इन चारों विधाओं में मध्यप्रदेश का स्थान सबसे अलग है। इतिहास में जहाँ तक दृष्टि जाती है, वहाँ मध्यप्रदेश की छवि एक समृद्ध और प्रतिष्ठित भूक्षेत्र के रूप में उभरती है। लाखों वर्ष पुरानी मानव सभ्यता के चिन्ह हैं। समय के साथ भले स्वरूप बदला हो, राजनैतिक सीमाएँ बदलीं, नाम बदले लेकिन मध्यप्रदेश की प्रसिद्धि बनी रही। वैदिक काल से लेकर मध्यकाल तक पूरे विश्व में मध्यप्रदेश आकर्षण का केन्द्र रहा है। यही कारण था कि हर काल-खंड विदेशी पर्यटक भारत आते रहे है। ह्वेनसाँग और फाह्यान से लेकर अल्बरूनी तक और कनिघंम से लेकर स्मिथ तक भारत आने वाला कोई शोधकर्ता ऐसा नहीं जो मध्यप्रदेश न आया हो। इन सबके लेखन में मध्यप्रदेश को समृद्धियों का उल्लेख है। मध्यप्रदेश के वैभव और समृद्धि की झलक कण कण में बिखरी है। इसे संजोने में वाकणकर जी ने अपना जिवन समर्पित कर दिया था। इन सभी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और प्राकृतिक स्थलों की कहानियाँ, अनूठे चिन्ह, खनिज एवं वन्य संपदा की विविधता भी पर्यटकों को आकर्षित करती रही है। यही प्रसिद्धि मध्यकाल मध्यप्रदेश के विनाश का कारण बनी थी। लगातार आक्रमणों से यह प्रदेश विपन्नता के अंधकार में डूब गया । ऐसा अंधकार कि इसकी छवि एक बीमारू राज्य की बन गई। स्वतंत्रता के बाद भी राजनैतिक कारणों से अनेक स्वरूप बदले गये। मध्यप्रदेश के वर्तमान स्वरूप की सीमाएँ नवम्बर 2000 में बनीं। और विकास की नई यात्रा आरंभ हुई। इसके साथ प्रदेश के औद्योगिक विकास पर जोर दिया गया। डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में वर्तमान सरकार ने विकास यात्रा को नये आयाम दिये। डॉ मोहन यादव ने मोदी मंत्र विकास के साथ विरासत का अमल करते हुये अपने कदम आगे बढ़ाये। कार्यभार संभालने के पहले दिन से डॉ मोहन यादव ने प्रधानमंत्री श्रीनरेंद्र मोदी के इसमंत्र पर काम करना आरंभ किया और भारत को विश्व का सबसे समृद्ध राष्ट्र बनाने के उनके संकल्प को पूरा करने केलिये मध्यप्रदेश की सहभागिता सुनिश्चित करने की दिशा में भी कदम बढ़ाये। यह तभी संभव है जब भारत का प्रत्येक प्रदेश विकसित और उन्नत हो। 24-25 फरवरी को भोपाल में सम्पन्न ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट इसी दिशा में एक क्राँतिकारी कदम है। मध्यप्रदेश की यह ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट अचानक आयोजित नहीं हुई। इससे पहले राज्य सरकार ने पर्याप्त होम वर्क किया था। यह होमवर्क तीनों प्रकार से हुआ । एक ओर मध्यप्रदेश के प्रत्येक जिले में पानी, बिजली, परिवहन और भूमि की उपलब्धता का विवरण तैयार किया गया, दूसरी ओर भारत ही नहीं पूरे संसार के प्रतिष्ठित उद्योग समूहों से उनकी रुचि के उद्योगों को प्राथमिकता में रखकर चर्चा की गई और तीसरा मध्यप्रदेश में रीजनल इन्वेस्टर्स समिट के आयोजन हुये । सरकार के केवल चौदह महीने के कार्यकाल में सात रीजनल इन्वेस्टर्स समिट संपन्न हुईं। इन तीनों प्रकार की तैयारी के बाद यह ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन हुआ। इन चौदह महीनों में मध्यप्रदेश में निवेश प्रस्तावों का मानों एक नया कीर्तिमान बनाया है। कुल 30.77 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए, जिससे 21.40 लाख नए रोजगार के अवसर सृजित होने की संभावना है। इस ग्लोबल समिट में 300 से अधिक प्रमुख उद्योगों के चेयरमैन, सीईओ और मैनेजिंग डायरेक्टर्स ने समिट में हिस्सा लिया। भारत का ऐसा कोई उद्योग समूह नहीं जिसके प्रतिनिधि इस समिट में सहभागी न बने हों। उनके साथ 600 से अधिक बिजनेस टू गवर्नमेंट और 5,000 से अधिक बिजनेस टू बिजनेस बैठकें हुईं। निवेशकों और सरकार के बीच इस संवाद से औद्योगिक विकास की दिशा में एक मजबूत विश्वास बढ़ा है।

आयकर सुधार की ऐतिहासिक पहल...

डा. जयंतीलाल भंडारी

नए आयकर विधेयक में गलत या अधूरी जानकारी देने पर भारी जुर्माना सुनिश्चित किया गया है। जानबूझकर टैक्स चोरी करने वालों पर मुकदमा चलाया जा सकता है। बकाया टैक्स का भुगतान न करने पर अधिक ब्याज और पेनल्टी है। आय छिपाने पर अकाउंट सीज और संपत्ति जब्त करने के अधिकार होंगे। इन सबसे आयकर संग्रहण बढ़ेगा और ईमानदार करदाताओं को लाभ होगा। निश्चित रूप से एक अप्रैल 2026 से लागू होने वाले नए आयकर कानून की वास्तविक सफलता इस बात पर निर्भर होगी कि इस कानून को कितने कारगर तरीके से लागू किया जाता है हाल ही में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के द्वारा लोकसभा में पेश किया गया नया आयकर विधेयक भारत की आयकर व्यवस्था में सुधार और पारदर्शिता के साथ-साथ राजस्व बढ़ाने के लिए एक बड़ी कोशिश का अहम हिस्सा है। वित्तमंत्री सीतारमण ने पिछले वर्ष जुलाई 2024 के बजट भाषण में कहा था कि मौजूदा आयकर कानून की कई धाराएं अपनी प्रासंगिकता खो चुकी हैं। ये धाराएं विशेष आर्थिक क्षेत्र, दूरसंचार, पूंजीगत लाभ सहित कर छूट एवं कटौती जैसे मामलों में कारगर नहीं रह गई हैं। साथ ही इसके तहत कानूनी जटिलताएं कर अनुपालन में मुश्किलें और मुकदमेबाजी में लगातार वृद्धि हुई है। ऐसे में नया आयकर विधेयक कानून बनने के बाद आयकर कानून 2025 के रूप में एक अप्रैल 2026 से मौजूदा आयकर कानून 1961 की जगह ले लेगा। यदि हम देश में आयकर का इतिहास देखें तो पाते हैं कि वर्ष 1860 में सर जेम्स विल्सन द्वारा आयकर की शुरुआत की गई थी, लेकिन देश में एक सुव्यवस्थित कर प्रणाली के रूप में वर्ष 1922 में व्यापक आयकर कानून लागू हुआ, जिसने सही मायनों में न केवल विभिन्न आयकर प्राधिकरणों को औपचारिक रूप प्रदान किया, बल्कि एक सुव्यवस्थित प्रशासनिक रूपरेखा की नींव भी रखी। वर्ष 1961 में मौजूदा आयकर कानून लागू किए जाने के बाद से अब तक आयकर कानून की विभिन्न कमियों को दूर करने के लगातार छोटे-छोटे प्रयास किए जाते रहे। खासतौर से 1981 में कम्प्यूटरीकरण की शुरुआत के साथ हुई तकनीकी प्रगति ने इलेक्ट्रॉनिक रूप से आयकर चालान की प्रोसेसिंग करने पर ध्यान केंद्रित किया। इस परिप्रेक्ष्य में वर्ष 2009 में ई-फाइल और पेपर रिटर्न की व्यापक प्रोसेसिंग को संभालने के लिए सेंट्रलाइज्ड प्रोसेसिंग सेंटर (सीपीसी) की

स्थापना की गई। पिछले एक दशक से आयकर कानून में जो अहम सुधार किए गए हैं, उससे जहां आयकरदाताओं को सुविधा मिली, वहीं आयकरदाताओं की संख्या बढ़ाने में भी मदद मिली है। इन सुधारों में प्रमुख रूप से करदाता चार्टर (टैक्सपेयर चार्टर) और पहचान रहित समीक्षा (फेसलेस असेसमेंट) तथा करदाताओं के लिए पहचान रहित अपील (फेसलेस अपील) व्यवस्था महत्वपूर्ण है। इसके अलावा नॉन फाइलर्स, मॉनिटरिंग सिस्टम (एनएमए) के जरिए ऐसे लोगों की पहचान की जाती है जिन्होंने हाई वैल्यू ट्रांजैक्शन किया है, पर आयकर रिटर्न दाखिल नहीं किया है। इन विभिन्न प्रयासों से पिछले 10 वर्षों में आयकर रिटर्न दाखिल करने वालों की संख्या और आयकर संग्रह में तेज वृद्धि देखी गई है। लेकिन अभी भी बड़ी संख्या में उद्योग-कारोबार सेक्टर में कार्यरत रहते हुए कमाई करने वाले, महंगी आरामदायक व विलासिता की वस्तुओं का उपयोग करने वाले तथा पर्यटन के लिए विदेश यात्राएं करने वालों में से भी बड़ी संख्या में लोग या तो आयकर न देने का प्रयास करते हैं या फिर बहुत कम आयकर देते हैं। स्थिति यह है कि वर्ष 2023-24 में देश के 140 करोड़ से अधिक लोगों में से सिर्फ 8.09 करोड़ लोगों ने आयकर रिटर्न दाखिल किए। इनमें से भी 4.90 करोड़ लोगों ने शून्य कर योग्य आय की सूचना दी। सिर्फ 3.19 करोड़ लोगों ने ही आयकर दिया है। ऐसे में देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में आयकर का योगदान बहुत कम बना हुआ है। दुनिया की कई छोटी-छोटी अर्थव्यवस्थाओं में संग्रहित किए जाने वाले आयकर का उनकी जीडीपी में बड़ा योगदान है। वस्तुत: कर संग्रह में तेज वृद्धि से बुनियादी ढांचे, सामाजिक सेवाओं और जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए सरकार की क्षमता बढ़ती है। सरकार की मुट्ठियों में बढ़ता कर राजस्व न केवल अर्थव्यवस्था के नवनिर्माण में मदद करता है, बल्कि यह सरकार को अपने करदाताओं के प्रति जवाबदेह भी बनाता है। साथ ही यह वित्तीय वर्ष की बेहतर योजना और बजट बनाने में मदद करता है। खासतौर से इस समय जब वर्ष 2047 में देश को विकसित देश बनाने का लक्ष्य रखा गया है, तब जीडीपी में आयकर का योगदान बढ़ाया जाना जरूरी दिखाई दे रहा है। गौरतलब है कि आयकर संबंधी विभिन्न मुश्किलों और चुनौतियों के निराकरण के लिए नए आयकर विधेयक में प्रभावी प्रावधान दिखाई दे रहे हैं। नए आयकर विधेयक को संक्षिप्त, स्पष्ट तथा पढऩे-समझने में आसान बनाते हुए 23 अध्यायों में समेटा गया है। इस विधेयक में 622 पृष्ठ हैं, जबकि मौजूदा कानून में 823 पृष्ठ हैं। शब्द संख्या भी घटाई गई है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/धर्म समाज/देश
रायपुर, शुक्रवार 07 मार्च 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

मुनि निरोग सागर जी महाराज ने कहा- दान छुपाकर दो छपाकर नहीं दें

सागर (विश्व परिवार)। इस शरीर को साफ करने के लिए आप जिस प्रकार साबुन लगाकर के साफ करते हैं उसी प्रकार आत्मा को साफ करने के लिए गृहस्थो के लिए देव, शास्त्र, गुरु पूजा, दान आदि हैं पापों को साफ करने के लिए दान सबसे उत्तम कार्य है। दान छुपाकर दो, छपवा कर नहीं दे। यह बात मुनिश्री निरोग सागर महाराज ने नेहा नगर में पात्र चयन के पूर्व धर्म सभा में कही। उन्होंने कहा कि दान का मतलब पाप को त्याग रहे हैं आप अपने धन को तालाब जैसा नहीं बनाएं बावड़ी जैसा बनाएं बावड़ी से जितना जल निकलता है उतना ही बढ़ता जाता है उसी प्रकार घर में जितना भी धन है उसका 10ल दान करते रहना चाहिए। और जिन्होंने भी दान किया है आज उनकी कमाई भी दान से कई गुना बढ़ गई है। आपके सागर में भी ऐसे कई उदाहरण हैं। जो निरंतर देता रहता वह निरंतर पाता है यही प्रकृति का नियम है जो वोता है वही पाता है।

इंजीनियर मयूर जैन केबीसी में हॉट सीट पर 11वें प्रश्न तक पहुंचे, आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज द्वारा लिखित ग्रन्थ अमिताभ बच्चन को भेंट किया

भोपाल (विश्व परिवार)। नारायण नगर मे निवास कर रहे, इंजी. मयूर जैन सौ. साक्षी जैन अमिताभ बच्चन के फेमस टीवी शो कौन बनेगा करोड़पति की हॉट सीट पर पहुंचकर 11वें प्रश्न तक पहुंचे, प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया मयूर शुरू से ही आध्यात्मिक प्रवृति के रहे हे धर्म पत्नी साक्षी जैन के साथ पूरा परिवार जिनालय तीर्थ की वंदना के साथ हमेशा जैन संतो के सानिध्य में धर्म अध्यात्म की साधना में लीन है, विशेष बात यहां यह है कि के बी सी टीम के बुलावे पर मयूर पहले परिवार सहित मुंबई में विराजमान राष्ट्र संत आचार्य विशुद्ध सागर महाराज का आशीर्वाद लेने पहुंचे और आचार्य श्री के कर कमलो से उनके द्वारा लिखित ग्रंथ सत्यार्थ बोध और विचार की प्रतिलिपि ग्रहण की ओर के बी सी के सेट पर अमिताभ बच्चन को भेंट की श्री बच्चन ने स्वीकार कर मस्तक पर लगते हुए अपने लिए आचार्य श्री का बड़ा आशीर्वाद बताया मयूर जैन विदिशा निवासी जयकुमार संगीता जैन के सुपुत्र तथा सतीश श्रीमती सीमा जैन, मुरवास के दामाद हे अंशुल के अनुसार विगत दिनों विश्व प्रसिद्ध टी वी कॉन्टेस्ट कौन बनेगा करोड़पति में अपनी प्रतिभा के बल पर भागीदारी कर सफलता हासिल की है। इस एपिसोड का प्रसारण आगामी 10 मार्च को किया जा रहा है।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्रीमती सीमा बक्शी ने सफाई कार्यों का किया निरीक्षण

जामुल (विश्व परिवार)। नगर पालिका जामुल में सफाई कार्यों का निरीक्षण सुबह ही मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्रीमती सीमा बक्शी द्वारा किया गया। निरीक्षण के दौरान वार्ड क्र. 13 में बड़े नाले की स्थिति देखकर सफाई सुपरवाईजर को निर्देशित किया कि नालों की सफाई पूर्ण रूप से कराये आधे अधूरे न करें। साथ ही नाले से निकलने वाले कचड़ों को दुसरे दिन सुबह ही उठा ले और साथ में मैलाथियान एवं टेमोफास दवाई का छिड़काव करवाये ताकि किसी भी प्रकार का मच्छर आदि का प्रकोप न हो। श्रीमति बक्शी ने कहा कि सफाई कार्य की सतत निगरानी करें। सफाई संबंधी शिकायतों का तत्काल निराकरण करें साथ ही स्वास्थ्य विभाग से संबंधित प्रभारियों को भी निर्देशित किया गया कि नालियों के पास से गुजरने वाले, पेयजल पाईप के ऊपर किसी प्रकार कचड़ा जमा न हो इसका भी ध्यान रखें। फाईल वर्क के साथ फील्ड वर्क पर भी नजर रखे । निरीक्षण के दौरान सफाई सुपरवाईजर बशीर खान, रमेश मारकण्डे सहित सफाई कर्मी उपस्थित थे।

श्रद्धा में समीचीनता न हो तो वही श्रद्धा अंधश्रद्धा बन जाती है : मुनि श्री समतासागर जी महाराज

भिलाई (विश्व परिवार)। निर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागर जी महाराज ससंघ सेक्टर-6 भिलाई में विराजमान हैं। प्रात:प्रवचन एवं आचार्य श्री की पूजन 8 बजे से तथा 10 बजे से आहार चर्या। सेक्टर 6 में संघ के पहुंचने से पहले रायपुर टैगोरनगर मंदिर में स्थापित होंने जा रहे आचार्य गुरुदेव विद्यासागरजी महामुनिराज के चरण पहुंचे निर्यापक मुनि श्री समतासागर मुनि श्री पवित्र सागर ऐलक श्री निश्चयसागर, ऐलक निजानंद सागर क्षु. संयम सागर महाराज का संध्याकाल में भव्य मंगल प्रवेश हुआ इसके पूर्व ही आचार्य गुरूदेव के चरण पहुंचे मुनि श्री ने गुरुदेव के चरणों का स्पर्श किया इस अवसर पर रायपुर जैन समाज के तथा टैगोरनगर मंदिर के पुष्पेंद्र जैन, संदीप जैन, प्रभात जैन, निर्मल जैन, संजय जैन संजय सतना उपस्थित थे मुनिसंघ के साथ चल रहे प्रवक्ता अविनाश जैन एवं प्रचार प्रमुख प्रदीप जैन बाकलीबाल ने बताया प्रात: आचार्य श्री की पूजन एवं प्रवचन एवं आहार चर्या सेक्टर 6 भिलाई में होंगी। बड़ा जैन मंदिर कमेटी के अध्यक्ष यशवंत जैन ने बताया जयेष्ठ आर्यिका 105 गुरुमति माताजी एवं आर्यिका 105 दृढमति माताजी ससंघ की आहार चर्या मोहन मैरिज पैलेस टाटीबंध में होगी तथा मध्यांह विहार श्री दिगंबर जैन बड़ा मालवीय रोड रायपुर के लिए होगा, सकल जैन समाज रायपुर के द्वारा संघ का भव्य मंगल प्रवेश घासीदास प्लाजा आमापारा से दोपहर 3:30 बजे किया जाएगा एवं आर्यिका संघ का रात्रि विश्राम श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिर मालवीय रोड रायपुर में होगा दिनांक 8 मार्च को प्रात:आचार्य श्री की पूजन एवं आर्यिका संघ की मंगल देशना श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिर मालवीय रोड़ रायपुर में होगी श्री दिगंबर जैन पंचायत ट्रस्ट, कार्यकारिणी, उपसमिति, महिला मंडल, बालिका मंडल मालवीय रोड रायपुर आपसे निवेदन करती हैआप सभी सपरिवार अधिक अधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्म लाभ लेवे।

सज्जन के माथे पर तिलक और दुर्जन के माथे पर सींग दिखाई दे रहे हों, ऐसा दिखाई नहीं देता, वीतरागता, आत्मा परमात्मा और तत्व को लेकर जिसको सच्ची श्रद्धा होती है, वह श्रद्धा सच्चा सम्यक दर्शन है। उपरोक्त उद्गार निर्यापक श्रमण समतासागर महाराज ने रुहावांधा दिगम्बर जैन मंदिर में प्रात:कालीन धर्म सभा में व्यक्त किये।

मुनि श्री ने कहा कि श्रद्धा में समीचीनता न हो तो वही श्रद्धा अंधश्रद्धा बन जाती है उन्होंने अंधश्रद्धा के दुष्परिणामों पर चिंता व्यक्त करते हुये कहा कि कुछ लोग धर्म के नाम पर लोगों को ठगते एवं भ्रमित करते है, तथा धोखा देते है, जब तक लोग उनको समझ पाऐं तब तक वह सारा मालपानी लेकर रफूचक्कर हो जाते है, ऐसे लोगों से मुनि श्री ने कहा है को दूसरों को धोखा नहीं देते वल्कि स्वंय को ही धोखे में रखते है।इससे न केवल धर्म की महिमा घटती है, वल्कि भविष्य में उन पर भी कोई विश्वास नहीं करता उन्होंने कहा कि धर्म करना अच्छी बात है, धर्म की क्रियायें करो, धार्मिक बनो, लेकिन धर्म के नाम पर अंध श्रद्धा मत करो, जीवन में सम्यक दर्शन प्राप्त करना एक महान गुण है, इसे आप भी प्राप्त कर सकते है। करत करत अभ्यास के जड़मत होत सुजान रस्सी आवत जात है कठोर पड़त निशान मुनि श्री ने कहा कि पुरुषार्थ जब एकरूपता में आती है तो सफलता तो मिलती ही मिलती है। जैसे खाने के गाल और नहाने के बाल अलग ही समझ आ जाते है उसी प्रकार एक सम्यकदृष्टि की क्रियायें अलग ही समझ आ जाती है।नीतिकार कहते है कि ऐसा नहीं है कि सज्जन के माथे पर तिलक लगा हो, और ऐसा भी नहीं है कि दुर्जन के माथे पर सींग दिखाई दे रहे हों? ऐसी पहचान प्रथमत: हो सकती है लेकिन दुर्जनता और सज्जनता तो अपने भावों से आती है।उन्होंने उदाहरण देते हुये कहा भगवान महावीर पूर्व की पर्याय में एक भील थे और शिकार करना उनका पेशा था लेकिन उसी पर्याय में उनके परिणाम बदले और वह भील से भगवान बनने के रास्ते पर आगे बड़ गया, वंही सिंह की पर्याय में हिरण का शिकार कर रहा था मुनि महाराज ने उसको देखा और सम्वोधन दिया और वही शेर भगवान बन गया जैन धर्म की विशेषता है हर आत्मा को परमात्मा बनने का अधिकार मिलता है। जैसे कपड़ा गंदा हो जाता है तो उसे साफ करना पड़ता है उसी प्रकार जब हमारा मन गंदला हो जाता है, तो उस मन को साफ करने के लिये ही प्रतिक्रमण का पाठ करना पड़ता है, जो अपने स्वभाव से वाहर जाकर अपनी आत्मा को गंदला करता है उसे प्रतिदिन प्रतिक्रमण का पाठ अवश्य करना पड़ता है। जैसे कार का शीशा गंदा होंने पर धर्म ध्यान का बाईपर चला दोगे तो कार के शीशे में साफ साफ दिखने लगता है। इस अवसर पर मुनि श्री पवित्र सागर महाराज ऐलक श्री निश्चयसागर महाराज ऐलक श्री निजानंद सागर महाराज क्षु. संयम सागर महाराज मंच पर विराजमान थे।मुनि श्री ने प्रात:6 बजे संघ सहित श्री मल्लिनाथ दि. जैन मंदिर रिसाली एवं पारसधाम दि. जैन मंदिर के दर्शन किये एवं शांतिधारा संपन्न की तथा आहारचर्या रुहावांधा में अजित कुमार जैन ब्र.अंकित भैया के परिवार में संपन्न हुई। -**अविनाश जैन**

खाद्य सामग्री नाली में फेंकने और बासी खाद्य पदार्थ बेचने पर 36 हजार का लगा अर्थदण्ड

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय नेहरू नगर चौक पर बने हुए के बस स्टाप के साफ-सफाई का निरीक्षण कर रहे थे। उसी समय नालियो से सड़े हुए खादय सामग्री का बदबु आ रही थी। पुछने पर पता चला कि बगल के होटल से आ रहा है। इसी का निरीक्षण करने आज निगम की स्वास्थ्य विभाग का अमला पहुंचा। होटल अशोका बिरयानी द्वारा नाली में जुठन, खादय पदार्थ, किचन में गंदगी, सड़े-गले सामग्री से खादय पदार्थ बनाकर बेचने, गुमशता लाईसेंस की समय अवधि आदि जांच करने पर कमियां पाई गई। मौके पर देखने पर वहां पर खाना बनाने मे उपयोग सामग्री बहुत ही निम्न स्तर का व काटकर छोड़ा हुआ, किचन की साफ-सफाई में गंदगी, वाशिगं प्लेस में गंदगी, खादय सामग्री धोते समय बचे हुए पानी को सीधा नाली में फेकने आदि सभी कमी पाई गई। इसके कारण अशोका बिरयानी पर पंचनामा बनाकर 30000 रूपये का अर्थदण्ड लगाया गया।

ग्रैण्ड डिल्हन होटल में कार्यवाही के दौरान वहां पर खाना बनाने के बाद साफ-सफाई, बर्तन धोते समय खादय सामग्री का बचा हुआ अवशेष नाली में डालने के कारण 5000 रूपये का अर्थदण्ड लिया गया। डिल्हन होटल के कार्य करने वाले स्टाफ द्वारा बताया गया कि तेल का अवशेष, खादय सामग्री का कुछ भाग नाली में चला जाता है, इसलिए बदबु आती है। साफ-सफाई का स्तर ठीक था, वहां के मैनेजर ने बताया हम होटल को और अपग्रेट कर रहे है। ऐसा सिस्टम लगा रहे है, भविष्य में किसी प्रकार का गंदगी नाली में नही जायेगा। बरफ फैक्ट्री संजय नगर में कबाड़ी दुकान के पास दुकान का अनुज्ञप्ति लाईसेंस ठीक नहीं पाये जाने के कारण 1000 रूपये का अर्थदण्ड लिया गया है। कार्यवाही के दौरान जोन स्वच्छता निरीक्षक कमलेश द्विवेदी, जनसम्पर्क अधिकारी अजय शुक्ला, सुपरवाईजर संजय गायकवाड़, किस्टोफर, अमित, वेंकट राव, रवि दहाटे आदि उपस्थित रहे।

भारतमाला प्रोजेक्ट में जमीन अधिग्रहण घोटाले में डिप्टी कलेक्टर निलंबित

रायपुर (आरएनएस)। भारतमाला प्रोजेक्ट में जमीन अधिग्रहण घोटाले में अभनपुर के तत्कालीन तहसीलदार शशिकांत कुर्रे को निलंबित कर दिया गया हैं। शशिकांत कुर्रे वर्तमान में कोरबा में डिप्टी कलेक्टर हैं। इसके पहले तत्कालीन सक्षम भू-अर्जन अधिकारी निर्भय साहू को निलंबित किया गया था। बता दें कि रायपुर-विशाखापट्टनम सिक्स लेन ग्रीन कारिडोर के बहुचर्चित मुआवजा घोटाले में राज्य सरकार ने गुरूवार को डिप्टी कलेक्टर शशिकांत कुर्रे को सस्पेंड कर दिया। शशिकांत मुआवजा घोटाले के दौरान अभनपुर के तहसीलदार रहे। अभनपुर के भारतमाला परियोजना के 324 करोड़ के मुआवजा घोटाले में रायपुर कलेक्टर ने अपनी रिपोर्ट में तत्कालीन तहसीलदार को मास्टरमाइंड बताया है। घोटाले को अंजाम देने वाले तहसीलदार को सरकार ने 2021 में प्रमोट कर डिप्टी कलेक्टर बना दिया।

जैन धर्म का शाश्वत पर्व अष्टानिका महापर्व शुरु-9 दिनों तक दिगम्बर जैन मंदिरों में होगें विशेष पूजा विधान

झण्डारोहण,घटयात्रा से हुआ शुभारंभ, 14 मार्च को होगा समापन

जयपुर (विश्व परिवार)। जैन धर्म का 9 दिवसीय शाश्वत पर्व अष्टानिका महापर्व झण्डारोहण एवं घट यात्रा से गुरुवार, 6 मार्च को शुरू हुआ। इस मौके पर मंदिर परिसर जयकारों से गूंज उठे।

इन 9 दिनों के दौरान दिगम्बर जैन मंदिरों में प्रतिदिन विशेष पूजा अर्चना, मण्डल विधान, सायकांल महाआरती, भक्ति संध्या, सांस्कृतिक कार्यक्रम सहित धार्मिक आयोजनों की धूम रहेगी। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन %कोटखावदा% के अनुसार जैन धर्म के इस दूसरे बडे पर्व अष्टानिका महापर्व के मौके पर शहर के दिगम्बर जैन मंदिरों में 9 दिनों तक श्री सिद्ध चक्र महामण्ड़ल विधान पूजा एवं विश्व शांति महायज्ञ, श्री नन्दीश्वर महामण्ड़ल विधान पूजा, कल्पद्रुम महामण्डल विधान पूजा सहित सायकांल सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जायेंगे। आठ दिन तक मनाए जाने वाले इस महापर्व में इस बार तिथि में वृद्धि हो जाने के कारण 9 दिनों तक धर्म की गंगा बहेगी। गुरुवार को घट यात्रा एवं ध्वजारोहण से अष्टानिका महापर्व का शुभारंभ हुआ। सिद्ध चक्र महामण्डल विधान की पूजा के दौरान आठ अर्घ्य चढ़ाएं गये। श्री जैन के मुताबिक शुक्रवार, 14 मार्च को विश्व शांति महायज्ञ के साथ समापन होगा। श्री जैन के मुताबिक वर्ष में तीन बार कार्तिक, फाल्गुन एवं आषाढ माह में मनाये जाने वाले इस पर्व की शुरुआत महासती मैना सुन्दरी द्वारा अपने पति श्रीपाल के कुष्ठ रोग निवारण के लिए की गई आठ दिनों तक सिद्ध चक्र महामण्ड़ल विधान एवं तीर्थंकरों के अभिषेक जल (गन्धोदक) के छींटों से रोग समाप्त होने के कारण पिछले कई वर्षों पूर्व हुई। इसका जैन ग्रन्थों में काफी उल्लेख है। श्री जैन के मुताबिक नारायण सिंह सर्किल स्थित भट्टारक जी की नसियां में अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज की मंगल प्रेरणा एवं आशीर्वाद से बा. ब्र. तरुण भैया इन्दौर के निर्देशन में श्री श्री सिद्ध चक्र महामण्ड़ल विधान एवं विश्व कल्याण कामना महायज्ञ का शुभारंभ हुआ।

भिलाई में अंतर्राष्ट्रीय महिला को ऐतिहासिक रुप मनाने की चल रही है तैयारियां, पांच सौ घरों में दिया जा रहा है निमंत्रण

आरंग (विश्व परिवार)। ब्लाक मुख्यालय से पांच किलोमीटर दूर ग्राम भिलाई में इस बार आठ मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को ऐतिहासिक रुप से मनाने की तैयारियां चल रही है। स्वयं सेवी संगठन पीपला वेलफेयर फाउंडेशन समस्त ग्राम वासियों व ग्राम पंचायत भिलाई के संयुक्त तत्वावधान में महिलाओं को सशक्त व सुदृढ़ बनाने आमंत्रित व एकत्रित किया जा रहा है। जिसके लिए ग्राम के हर घर पहुंचकर करीब पांच सौ घरों में महिलाओं को आमंत्रित किया जा रहा है।ग्राम भिलाई के समाजसेवी पारसनाथ साहू ने बताया इस आयोजन का उद्देश्य समाज में महिलाओं को सुदृढ़ व सशक्त बनाना है। साथ ही उनमें उनके अधिकारो के प्रति जागरूक व सजग करना है। वहीं पीपला फाउंडेशन के संयोजक महेन्द्र कुमार पटेल का कहना है अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस केवल शहरों तक ही सीमित रहकर रह गया है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बारे में पता तक नही होता। इसलिए विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली मातृ-शक्तियों का सम्मान,उद्बोधन व मनोरंजक खेल व सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया गया है।जिसमें नवाचार करते हुए अलग-अलग क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली मातृ-शक्तियों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है। जिससे प्रेरित होकर ग्रामीण क्षेत्र की मातृशक्तियां जागृत हो सके।

ई-रिक्शा एवं ऑटो के कारण उत्पन्न यातायात समस्याओं एवं उनके समाधान पर परिवहन सचिव ने ली वर्चुअल बैठक

सुचारू और व्यवस्थित यातायात हेतु ई-रिक्शा एवं ऑटो की मॉनिटरिंग, रेगुलेशन और नियंत्रण के उपायों पर विचार-विमर्श

रायपुर (विश्व परिवार)। ई-रिक्शा एवं ऑटो के कारण उत्पन्न यातायात समस्याओं एवं उनके समाधान से जुड़े विषयों पर परिवहन सचिव सह आयुक्त श्री एस.प्रकाश की अध्यक्षता में आज मंत्रालय में संभाग मुख्यालय रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, अम्बिकापुर तथा जगदलपुर जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ वर्चुअल बैठक आयोजित की गई। बैठक में अपर परिवहन आयुक्त श्री डी. रविशंकर भी उपस्थित थे।

ई-रिक्शा एवं ऑटो की संख्या में निरंतर वृद्धि को देखते हुए सुगम और व्यवस्थित यातायात सुनिश्चित करने के उपायों पर बैठक में विचार - विमर्श किया गया। बैठक में बताया गया कि जिलेवार परिवहन कार्यालय में पंजीकृत ई-रिक्शा (गुड्स एवं पैसेंजर) की संख्या क्रमश: रायपुर 13374, बिलासपुर 4493, दुर्ग 4038, अंबिकापुर 1311, जगदलपुर 41, इसी प्रकार पंजीकृत ऑटो (गुड्स एवं पेसेंजर) की संख्या क्रमश: रायपुर 20306, बिलासपुर 14867, दुर्ग 9602, अम्बिकापुर 4429, जगदलपुर 3431 है, इस संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। बिना मॉनिटरिंग एवं रेगुलेशन के इन पर नियंत्रण की समस्या पर चर्चा की गई।

बैठक में रायपुर जिला प्रशासन द्वारा ई-रिक्शा एवं ऑटो के सुगम व्यवस्थित परिचालन हेतु निर्मित जोनवार योजना के बारे में भी विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। रायपुर जिला प्रशासन के द्वारा रायपुर शहर को मुख्य रूप से 05 जोनों में विभक्त कर योजना बनाई गई है।

ई-रिक्शा हेतु केन्द्र एवं राज्यों में प्रचलित अधिनियम एवं नियमों पर चर्चा : बैठक में ई-रिक्शा हेतु केन्द्र एवं राज्यों में प्रचलित अधिनियम एवं नियमों पर भी विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त राज्य शासन एवं जिला प्रशासन को प्राप्त शक्तियों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। उपस्थित जिलों के अधिकारियों से क्रमश: उनके जिलों में ई-रिक्शा एवं ऑटो के कारण उत्पन्न परिस्थितियों के बारे में जानकारी ली गई।

समस्या के समाधान के लिए मांगे गए सुझाव : बैठक में ई-रिक्शा एवं ऑटो पंजीयन में निरन्तर वृद्धि एवं समस्या के समाधान हेतु किसी भी प्रकार के प्रस्ताव, सुझाव जिला सड़क सुरक्षा समिति अथवा जिला प्रशासन के माध्यम से राज्य सड़क सुरक्षा समिति अथवा परिवहन विभाग के पास प्रेषित् करने हेतु कहा गया।

गन्ना किसानों के हित एवं शक्कर कारखाना पंडरिया के सुचारू रूप से संचालन के संबंध में विधायक भावना बोहरा ने विधानसभा में किया ध्यानाकर्षण

रायपुर (विश्व परिवार)। आज विधानसभा में पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल सहकारी शक्कर कारखाना, पंडरिया के सुचारू रूप से संचलान और किसानों को कारखाने में गन्ना बेचने हेतु प्रोत्साहित करने के विषय में विस्तृत चर्चा की और सदन का ध्यानाकर्षण किया। इसके साथ ही उन्होंने अपने महत्वपूर्ण सुझाव भी विधानसभा पटल पर रखा। उन्होंने विधानसभा अंतर्गत नल जल/स्थल जल योजना, पेयजल व्यवस्था हेतु हैण्ड पम्प खनन, असंगठित कर्मकारों को प्रशिक्षण देने और सामुदायिक विकास योजना अंतर्गत माध्यम उद्योगों को आवंटित राशि के संबंध में भी प्रश्न किया।

इस दौरान लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल सहकारी शक्कर कारखाना, पंडरिया के संबंध में ध्यानाकर्षण करते हुए भावना बोहरा ने कहा की पंडरिया विधानसभा अंतर्गत स्थित लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल सहकारी शक्कर कारखाना, पंडरिया वर्तमान परिस्थिति में अपनी पूर्ण क्षमता से कार्य नहीं कर पा रहा है। इस कारखाने के माध्यम से क्षेत्र के हजारों किसान परिवारों का जीवन जुड़ा हुआ है, जिसकी वजह से यह अत्यंत आवश्यक है कि शक्कर कारखाने के सुचारू रूप से संचालन एवं किसानों से अधिक से अधिक मात्रा में गन्ना की खरीदी करने के लिए प्रयास करना बहुत ही जरुरी है। वहीं पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के समय में ऋण भुगतान की क़िस्त की अदायगी नहीं दिए जाने के कारण आज दिनाँक पर्यन्त भुगतान करना पड़ रहा है, जिससे कारखाने पर आर्थिक बोझ बढ़ रहा है। लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल सहाकारी कारखाना मर्या. पंडरिया, जिला कबीरधाम की स्थापना हेतू राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम नई दिल्ली के क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर (छ.ग.) [NCDC] द्वारा 81.00 करोड़ रूपये का ऋण 11.45% ब्याज दर पर दिया गया था।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा नरदहा, रायपुर में निर्मित सामान्य आवास योजनांतर्गत एम.आई.जी. डुप्लेक्स, **भवन क्रं.-47, श्री अमारू लाल साहू पिता स्व. श्री परदेशी लाल साहू** के नाम पर स्ववित्तीय आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा समस्त राशि जमा कर उक्त भवन कि लीजडीड **दिनांक 11.10.2019** को पंजीकृत करने उपरांत इस कार्यालय का पत्र **क्रमांक 4434 दिनांक 08.11.2019** द्वारा आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया गया है। वर्तमान में आबंटी **श्री अमारू लाल साहू पिता स्व. श्री परदेशी लाल साहू, पता- छ.ग. नगर, टिकरापारा, रायपुर, तह. व जिला रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त भवन को **क्रेता श्रीमती ममता वर्मा पति श्री नरेश वर्मा, निवासी मातादेवालय वार्ड, भाटापारा, तहसील-भाटापारा, जिला-बलौदाबाजार (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय बैंक अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन दिनांक के 15 दिवस के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /18787/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2025
रायपुर, दिनांक 05-03-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 18787
वार्ड का नाम- 21 -शहीद भगत सिंह वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 21 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR813B00848** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **P. S NAGRALE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SEETARAM NAGRALE** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. MANJEET KAUR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DALBARA SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-

श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार रायपुर, तहसील व जिला रायपुर (छ0ग0)
/ / ईश्तहार / /

रा0प्र0क0/2025031102000/ अ-6/ वर्ष 2024-25, रायपुर, दिनांक 28/02/2025
ग्राम रायपुर खास प0ह0नं0 62

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक **श्री विनोद कुमार शर्मा पिता स्व. रामस्नेही शर्मा निवासी लाखे नगर रायपुर, तहसील व जिला रायपुर छ.ग.** द्वारा इस न्यायालय में धारा-110 छ.ग. भू-राजस्व संहिता 1959 के अंतर्गत् नामांतरण बाबत् आवेदन पत्र पेश कर लेख किया है कि आवेदक द्वारा **ग्राम रायपुर खासरा प0ह0नं0 62, रा0नि0म0 रायपुर तहसील व जिला रायपुर छ0ग0** स्थित परिवर्तित भूमि शीट नंबर **53, भूखण्ड क्रमांक 48/2 का रकबा 966 वर्गफुट भूमि में से रकबा 724.50** वर्गफुट भूमि को हकत्याकर्तागण **श्री धरम कुमार शर्मा, श्री राकेश कुमार शर्मा, श्रीमती कल्पना उपाध्याय पिसरान स्व. श्री रामस्नेही शर्मा तीनों निवासी 51/1959 महादेवघाट रोड़ शनि मंदिर के सामने लाखे नगर, ढाल वार्ड नंबर 65, सुधीर मुखर्जी वार्ड रायपुर छ.ग. छ0ग0** से पंजीकृत हकत्याग विलेख **दिनांक 21/11/2024** के माध्यम से कय कर स्वामित्व एवं आधिपत्य प्राप्त किया है। अत: उक्त हकत्याग में प्राप्त भूमि को पंजीकृत हकत्याग विलेख के आधार पर अपने नाम पर भूमिस्वामी हक में दर्ज किये जाने हेतु आवेदक द्वारा निवेदन किया गया है।

अतएव जिस किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वे स्वयं या अपने अभिभाषक के माध्यम से अपनी लिखित आपत्ति **दिनांक 12/03/2025** को इस न्यायालय में पेश करें। नियत समयावधि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।

आज **दिनांक 28/02/2025** को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से जारी किया गया।

तहसीलदार
रायपुर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर, शुक्रवार 07 मार्च 2025

संक्षिप्त समाचार

सार्वजनिक जगह पर सट्टा संचालन, आरोपी गिरफ्तार

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले की सिटी कोतवाली थाना पुलिस ने सार्वजनिक स्थान पर सट्टा खिला रहे एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के पास से सट्टा पट्टी विभिन्न अंक व रकम लिखा, एक नग डाट पेन तथा सट्टा पट्टी नगदी रकम जब्त किया है तथा आरोपी के विरुद्ध छत्तीसगढ जुआ अधिनियम वर्ष 2022 धारा 6 (ख) जुआ एक्ट के तहत वैधानिक कार्यवाही की गई है। मिली जानकारी के अनुसार धमतरी पुलिस थाना सिटी कोतवाली धमतरी को मुखबिर सूचना मिली की एक व्यक्ति द्वारा गौशाला मैदान के पीछे हनुमान मंदिर के पास विंध्यवासिनी वार्ड धमतरी में आम जगह पर सट्टा नामक जुआ खेला रहा है की सूचना पर तत्काल थाना सिटी कोतवाली द्वारा दबिश देकर बताये जगह पर आरोपी द्वारा आम जगह में लोगो से पैसा लेकर हारजीत का खेल अंको वाली सट्टा पट्टी नामक जुआ खिलाते रंगे हाथ पकड़ा गया, पुलिस को देखकर सट्टा लिखवा रहे लोग भाग गये,और सट्टा खिलाने वाला आरोपी अनिल कुमार ढीमर पिता मनोज ढीमर उम्र 37 वर्ष पकडा गया। आरोपी से जप्त संपत्ति :- सट्टा पट्टी विभिन्न अंक व रकम लिखा, एक नग डाट पेन तथा सट्टा पट्टी नगदी रकम 720 रूपये गवाहों के समक्ष जब्त कर थाना सिटी कोतवाली में छत्तीसगढ जुआ अधिनियम वर्ष 2022 धारा 6 (ख) जुआ एक्ट के तहत,आरोपी विधिवत गिरफ्तार कर वैधानिक कार्यवाही किया गया है।

कुम्ही गांव में युवक-युवती का शव फांसी पर लटका मिला

गरियाबंद(विश्व परिवार)। जिले से एक सनसनीखेज मामला सामने आया है, जहां एक युवक और युवती के शव पेड़ से लटके हुए मिले। इस घटना के बाद पूरे इलाके में हड़कंप मच गया है। मामले की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शवों को अपने कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी।यह घटना गरियाबंद जिले के राजिम थाना क्षेत्र के कुम्ही गांव की है। यहां एक बरगद के पेड़ से युवक और युवती के शव फांसी के फंदे से लटके हुए पाए गए। सूचना मिलते ही पुलिस टीम तत्काल घटनास्थल पर पहुंची और शवों को नीचे उतारकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस जांच में मृतकों की पहचान टोमेश्वरी साहू (खुटेरी) और टिकेश्वर साहू (कुम्ही) के रूप में हुई है। दोनों के बीच किस प्रकार का संबंध था और इस घटना के पीछे की वजह क्या है, इसकी जांच की जा रही है। पुलिस को घटनास्थल से एक सुसाइड नोट भी मिला है, जो टिकेश्वर साहू के पास से बरामद हुआ। हालांकि, पुलिस ने अभी इस सुसाइड नोट की जानकारी सार्वजनिक नहीं की है और इसकी गहन जांच कर रही है। पुलिस का कहना है कि सुसाइड नोट में आत्महत्या के कारणों का उल्लेख किया गया है, लेकिन मामले की पुष्टि के लिए अन्य पहलुओं की भी जांच की जा रही है।

कलेक्टर ने वेयर हाउस गोदाम जगतरा का किया निरीक्षण

बालोद(विश्व परिवार)। इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल ने आज जिला मुख्यालय बालोद के समीपस्थ ग्राम जगतरा में स्थित वेयर हाउस गोदाम का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने समर्थन मूल्य पर धान खरीदी योजना के अंतर्गत जिले के धान संग्रहण केन्द्रों से वेयर हाउस गोदाम में जमा किए जा रहे धान के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को वेयर हाउस गोदाम के कार्य को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु जरूरी व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए।

केंद्रीय राज्य मंत्री सोमन्ना ने की आकांक्षी जिला कार्यक्रम की प्रगति की समीक्षा

कोण्डागांव(विश्व परिवार)। केंद्रीय राज्य मंत्री, रेल और जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार, एवं आकांक्षी जिला प्रभारी व्ही. सोमन्ना ने 4 मार्च को कोंडागांव जिला कार्यालय के सभाकक्ष में विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक की और आकांक्षी जिला कार्यक्रम के तहत जिले की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्धारित इंडीकेटर पर शतप्रतिशत उपलब्धि हासिल करने के लिए निर्देशित किया। केंद्रीय राज्य मंत्री ने आकांक्षी जिला कार्यक्रम के तहत शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, महिला एवं बाल विकास, कौशल विकास सहित विभिन्न विभागों द्वारा संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन की जानकारी ली और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने 'विकसित भारत' की संकल्पना की है, जिसे पूरा करने के लिए सभी को एकजुट होकर काम करना होगा। साथ ही कोंडागांव को आकांक्षी जिला कार्यक्रम से ऊपर उठाने के लिए सभी निर्धारित इंडिकेटर्स पर पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने जिले में किसान क्रेडिट कार्ड और प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत शतप्रतिशत किसानों को लाभान्वित करने पर जिला प्रशासन को शुभकामनाएं दी। प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना को लागू करते हुए सभी जरूरतमंदों को लाभान्वित करने की दिशा में कदम उठाने की बात की। साथ ही, लो वोल्टेज की समस्या का समाधान करने के लिए आवश्यक कार्यवाही के निर्देश दिए। केंद्रीय राज्य मंत्री ने प्रधानमंत्री दिव्यांगजनों के आत्मसम्मान और स्वाभिमान को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है और संवेदनशीलता दिव्यांगजनों के कल्याण के लिए कार्य कर रहे हैं। समाज कल्याण विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि जिले के सभी दिव्यांगजनों को शासन की योजनाओं का लाभ दिलाएं। उन्होंने जल जीवन मिशन की प्रगति पर भी चर्चा की और संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि इस मिशन के क्रियान्वयन में कोई लापरवाही न हो। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना, अटल पेंशन योजना, जनधन योजना का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करते हुए जिले के जरूरतमंदों को लाभान्वित करने की दिशा में अधिकारियों को निर्देशित किया। स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्रों की संख्या बढ़ाने की बात की, ताकि गरीब परिवारों को दवाइयों के खर्च में राहत मिल सके।

भाजपा कार्यालय में नव निर्वाचित अध्यक्ष-उपाध्यक्ष का सम्मान समारोह संपन्न

गरियाबंद (विश्व परिवार)। जिला पंचायत में भाजपा समर्थित अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के चुने जाने के उपलक्ष्य में बुधवार दोपहर जिला भाजपा कार्यालय में भव्य अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। नव निर्वाचित जिला पंचायत अध्यक्ष गौरी शंकर कश्यप और उपाध्यक्ष लालिमा ठाकुर सहित सभी निर्वाचित सदस्यों का गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

पूर्व सांसद चंदूलाल साहू ने सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि इस विजय से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व को और मजबूती मिली है। उन्होंने कहा कि भाजपा शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए पंचायत से लेकर संसद तक पार्टी का नेतृत्व आवश्यक है। जिला भाजपा अध्यक्ष अनिल चंद्राकर ने इसे भाजपा का स्वर्णिम काल बताया। उन्होंने कहा कि जनपद, नगर पंचायत और जिला पंचायत में भाजपा की सरकार बनने से स्पष्ट है कि जनता का भरोसा भाजपा पर है। अब जनसेवा के संकल्प को प्राथमिकता दी जाएगी और जिले के विकास के लिए बेहतर कार्य किए जाएंगे।

जिला चुनाव प्रभारी सुरेंद्र पाटनी ने कहा कि निकाय और त्रिस्तरीय पंचायत चुनावों में भाजपा की शानदार जीत कार्यकर्ताओं की मेहनत का नतीजा है। उन्होंने बताया कि 80त्न से अधिक पंच, सरपंच, पार्षद, जनपद सदस्य और जिला पंचायत सदस्य भाजपा समर्थित उम्मीदवार चुने गए हैं, जिससे कांग्रेस हाशिए पर चली गई।

विधायक रोहित साहू ने भी पार्टी कार्यकर्ताओं की मेहनत की सराहना की और कहा कि पंच से लेकर जिला पंचायत तक भाजपा समर्थित अध्यक्ष-उपाध्यक्ष का चुना जाना प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के सुशासन का प्रमाण है।

नव निर्वाचित जिला पंचायत अध्यक्ष गौरी शंकर कश्यप ने पार्टी नेतृत्व और जनता का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि वे ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए पूरी निष्ठा से कार्य करेंगे और केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू करेंगे।

कार्यक्रम का संचालन चंद्रशेखर साहू ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन लेखराम ध्रुवा ने किया। इस अवसर पर पूर्व जिला अध्यक्ष राजेश साहू, नगर पालिका अध्यक्ष रिखीराम यादव, जनपद अध्यक्ष सोहन ध्रुव, उपाध्यक्ष लेखराम साहू, मंडल अध्यक्ष सुमित पारख, धनराज विश्वकर्मा, रूप नारायण साहू, अनूप भोसले, सुरेंद्र सोनटेके, राधेश्याम सोनवानी सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सांसद संतोष पांडे और महापौर संजय पांडे का मिलन दे गया बड़ा संदेश

जगदलपुर(विश्व परिवार)। राजनांदगांव के सांसद संतोष पाण्डे मंगलवार को जगदलपुर आए। यहां उन्होंने महापौर संजय पांडे के निज निवास पहुंचकर संजय पांडे को बधाई दी। इस अवसर पर पंकज आचार्य, शशिनाथ पाठक, सूरज श्रीवास्तव, योगेश मिश्रा, देवेश चांडक सहित संजय पांडे की धर्मपत्नी रेखा और सुपुत्री सुवर्णिका तथा परिवारजन मौजूद रहे। महापौर संजय पांडे और सांसद संतोष पांडे की राजनीति करने की शैली कमोबेश एक सरीखी है। सांसद संतोष पांडे जहां सनातनी परंपरा को आगे रख कर राजनीति करते हैं और कहते हैं धर्म प्रथम है। वहीं महापौर संजय पांडे भी घोर सनातनी और धर्म प्रेमी, माने जाते हैं। माता पिता के चित्रों की आराधना, मां दंतेश्वरी का दर्शन पूजन उनकी दिनचर्या के अभिन्न हिस्से हैं। ये दोनों नेता सिर्फ धर्म तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि कर्म सिद्धांत के प्रबल पोषक भी हैं। राजनांदगांव संसदीय क्षेत्र के चारों जिलों राजनांदगांव, कबीरधाम, खैरागढ़ और मोहला, मानपुर, चौकी में अपने पिछले पंचवर्षीय कार्यकाल में सांसद संतोष पांडे ने विकास की जो गाथा लिखी है, वह एक नजीर बन गई है। अपनी धार्मिकता और कर्मशीलता के चलते सांसद संतोष पांडे जन जन के प्रिय नेता बन गए हैं। यही वजह है कि इस बार हुए लोकसभा चुनाव में संतोष पांडे ने कांग्रेस के बड़े नेता पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को बड़े अंतर से हराकर इतिहास रच दिया। पिछले साल विधानसभा चुनाव में संतोष पांडे बस्तर प्रभारी थे। उनकी सहजता, सरलता और मृदुभाषिता के बस्तर के भाजपाई भी कायल हैं। जगदलपुर के महापौर संजय पांडे की भी तासीर बिल्कुल सांसद संतोष पांडे जैसी ही है। हो भी क्यों न, राशि दोनों की एक ही जो है। संजय पांडे भी जनसेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं, भक्ति भाव से ओतप्रोत हैं। जिनमें भक्ति भावना रहती है, उनमें सरलता, सहजता और सेवा की भावना खुद बखुद आ जाती है।

रोड सेफ्टी सेल की टीम ने किया दुर्घटनाजन्य क्षेत्रों का निरीक्षण

कांकेर(विश्व परिवार)। उमनि0 एवं वरिष्ट पुलिस अधीक्षक कांकेर आई. के. ऐलिसेला के निर्देषन में, आज दिनांक 5 मार्च 2025 अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दिनेश सिंन्हा के नेतृत्व में राष्ट्रीय राजमार्ग एवं राज्य राजमार्गों में लगातार हो रहे दुर्घटनाओं को रोकने के लिए तथा ब्लैक स्पॉट एवं ग्रे स्पॉट दुर्घटना जन्य क्षेत्र एवं इन सड़को पर जहां अत्यधिक दुर्घटना होने वाले क्षेत्र की रोड सेफ्टी सेल की टीम जिसमें आरटीओ ऋषभ नायडू एसडीओ घनश्याम साहू सब इंजीनियर नेताम यातायात कांकेर प्रभारी आर आई दीपक साव एवं यातायात की टीम द्वारा सभी चिन्हित स्थानों पर जाकर उन जगहों पर आवश्यक ब्लिंकर रंबल स्ट्रिप रेडियम पट्टी डिवाइड हाई मास्क एवं नाइट लाइट सोलर फ्लेशर गति अवरोधक एम अन्य आवश्यक संसाधन एवं सामग्री की आवश्यकता एवं समेकित कार्य योजना का निर्माण किया गया जिससे आने वाले दिनों में हाईवे में होने वाले दुर्घटनाओं में कमी एवं मृत्यु दर को रोका जा सके।

बिना अनुमति शासकीय भूमि अंतरण को कलेक्टर ने किया शून्य घोषित

पटवारी सहित चार लोगों पर दर्ज होगा अपराधिक प्रकरण

गरियाबंद (विश्व परिवार)। तहसील गरियाबंद के ग्राम पारागांवडीह में बिना अनुमति शासकीय भूमि के विक्रय-अंतरण के मामले में कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने बड़ा फैसला सुनाया है। कलेक्टर ने छत्तीसगढ़ भू-राजस्व संहिता 1959 की धारा 165 (7-ख) के उल्लंघन को देखते हुए इस अंतरण को शून्य एवं अकृत घोषित किया और भूमि को पुनः शासन के अधीन किए जाने का आदेश दिया।

इसके साथ ही, कलेक्टर ने इस अनियमितता में संलिप्त पटवारी मनोज खरे और मनेश्वर सिंह ठाकुर सहित गोपाल राम एवं नितेश साहू के खिलाफ अपराधिक प्रकरण दर्ज करने के निर्देश अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) गरियाबंद को दिए हैं।

क्या है पूरा मामला?

ग्राम पारागांवडीह स्थित शासकीय पट्टे की भूमि-खसरा नंबर 27/3 (0.40 हेक्टेयर) और खसरा नंबर 27/2 (0.20 हेक्टेयर)-को पहले गोपाल राम ने नितेश साहू को विक्रय कर दिया। इसके बाद, नितेश साहू ने ऋण पुस्तिका का उपयोग कर 4 सितंबर 2018 को अश्वन कुमार पटेल के नाम इस भूमि का विक्रय पंजीयन करा दिया। विक्रेता ने भूमि को सभी प्रकार के अधिभारों से मुक्त बताते हुए यह सौदा किया था।

कलेक्टर न्यायालय का फैसला

इस मामले की सुनवाई के दौरान कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने पाया कि शासकीय पट्टे की भूमि का विक्रय-अंतरण बिना सक्षम प्राधिकारी की अनुमति के किया गया था, जो कि भू-राजस्व संहिता का उल्लंघन है। इस आधार पर, उन्होंने बिक्री को शून्य घोषित कर दिया और भूमि को शासन के अधीन करने के आदेश दिए।

अपराधिक प्रकरण के निर्देश

कलेक्टर ने इस अवैध अंतरण में शामिल पटवारी मनोज खरे और मनेश्वर सिंह ठाकुर के साथ-साथ गोपाल राम एवं नितेश साहू के खिलाफ अपराधिक प्रकरण दर्ज करने के निर्देश दिए हैं। इस फैसले से अवैध रूप से सरकारी भूमि की खरीद-फरोख्त करने वालों के खिलाफ सख्त संदेश गया है।

केंद्रीय राज्य मंत्री सोमन्ना ने किया कोंडागांव जिले का दौरा

शिल्प नगरी में शिल्पकारों से की भेंट, बेलमेटल बनाने की प्रक्रिया को देखा

कोंडागांव(विश्व परिवार)। केंद्रीय राज्य मंत्री रेल एवं जल शक्ति भारत सरकार व्ही. सोमन्ना ने कोंडागांव जिले के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर शासकीय योजनाओं के हितग्राहियों से चर्चा की। केंद्रीय मंत्री ने सबसे पहले आयुष्मान आरोग्य मंदिर बम्हनी का दौरा कर निरीक्षण किया और अस्पताल में दवाइयों की उपलब्धता की जानकारी ली। साथ चिकित्सकों को निर्देशित किया कि दवाईयों की एक्सपायरी डेट की जांच करते रहे और समुचित उपयोग सुनिश्चित करें। उन्होंने वहां आयुष्मान भारत योजना के हितग्राहियों से चर्चा कर उनका अनुभव जाना। इस दौरान उन्होंने गर्भवती महिलाओं को पोषण टोकरी का वितरण किया। इसके पश्चात उन्होंने नारियल विकास बोर्ड कोपाबेड़ा में उद्यानिकी विभाग द्वारा आयोजित किसानों से चर्चा कार्यक्रम में शामिल हुए और केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित किसानों से रुबरु हुए। उन्होंने कहा कि कोंडागांव जिले को आकांक्षी जिले से ऊपर ले जाने योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जाएगा। उन्होंने जिले के कोकोनट बोर्ड में नारियल के वृक्षों को देखकर प्रसन्नता जताई और सराहना की। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री सहित अतिथियों ने नारियल के पौधे का रोपण किया। बस्तर विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष एवं विधायक लता उसेंडी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी द्वारा देश के पिछड़े जिलों के विकास के लिए आकांक्षी जिला कार्यक्रम की शुरुआत की गई है, जिसमें कोंडागांव जिला भी शामिल है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार इस बात पर जोर देते हैं कि हर किसान का आय दोगुना हो। किसान सम्मान निधि सहित किसानों के लिए अन्य कल्याणकारी योजनाएं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में संचालित हो रहा है। उनके द्वारा हमारी बहनों को लखपति दीदी बनाने की दिशा में लगातार प्रयास किया जा रहा है। केंद्रीय राज्य मंत्री सोमन्ना ने कोंडागांव में शबरी एंपोरियम में पहुंचकर बस्तर की संस्कृति पर आधारित कलाकृतियों को देखा और इसकी सराहना की। इसके बाद उन्होंने बेलमेटल सहित विभिन्न विद्याओं में कलाकृति बना रहे शिल्पकारों से भेंट की। साथ प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के हितग्राहियों से भी चर्चा की। इस अवसर पर कलेक्टर कुणाल दुदावत, पुलिस अधीक्षक वाय अक्षय सहित अन्य अधिकारीगण एवं प्रगतिशील किसान भी उपस्थित रहे।

विधानसभा के लिए सौगातों से भरा है विष्णु देव सरकार की बजट - रंजना साहू

धमतरी(विश्व परिवार)। प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, वित्त मंत्री ओपी चौधरी जी सहित समस्त मंत्रियों का भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं पूर्व विधायक रंजना डीपेंद्र साहू ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि पूर्व दिवस में प्रदेश की विष्णु देव साय की सरकार ने बजट प्रस्तुत किए हैं, जिसमें धमतरी विधानसभा के लिए सौगातों से भरा रहा है, बहुप्रतीक्षित मांगे जिसमें सिहावा चौक से नहर नाका मुख्य मार्ग का सुदृढ़ीकरण व चौड़ीकरण, कन्या महाविद्यालय में निर्मित होने वाले छात्रावास के लिए बाउंड्री वॉल, बाबु छोटेलाल श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय धमतरी को सेंटर ऑफएक्सीलेंस के रूप में उन्नयन, इंडोर हॉल निर्माण, नगरी निकाय धमतरी एन एच 30 से हरफतराई की ओर रोड निर्माण, नालंदा परिसर के तर्ज पर सेंट्रल लाइब्रेरी का निर्माण, धमतरी में खंड कार्यालय भवन का निर्माण, रेस्ट हाउस का नवनिर्माण, नवीन परिवार न्यायालय भवन निर्माण, ग्राम बागोडार से सिरौदखुर्द सातधारा नाला पर उच्च स्तरीय पूल निर्माण, धमतरी गंगरेल कुकरेल मार्ग का सुदृढ़ीकरण एवं चौड़ीकरण, रीवागहन कुर्रा मार्ग का मजबूतीकरण, सेमरा से सिवनी बाज़ार मार्ग का चौड़ीकरण व मजबूतीकरण, गुजरा दर्री मार्ग का मजबूतीकरण, धमतरी गुंडरदेही बोराई नगरी मार्ग में पुल निर्माण, धमतरी जिले के महानदी परियोजना अंतर्गत महानदी मुख्य नहर के वितरक शाखा क्रमांक- 7 का पुनर्निर्माण, अनेक वितरक शाखाओं का नवनिर्माण, रविशंकर जलाशय में सोलर ऊर्जा से संचालित हेतु बजट सहित अनेक विकास कार्यों को बजट में शामिल किया गया है, जिसकी स्वीकृति जल्द मिलेगी। इसलिए यह बजट धमतरी विधानसभा क्षेत्र वासियों के लिए प्रगति का बजट है ।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर, शुक्रवार 07 मार्च 2025

व्यापार समाचार

करण औजला सोनी इंडिया से जुड़े, ऑडियो अनुभव को और बेहतर बनाएंगे

नई दिल्ली: सोनी इंडिया ने आज प्रसिद्ध म्यूजिक सेलेब्रिटी करण औजला को अपने ऑडियो उत्पाद श्रेणी के लिए नया ब्रांड एंबेसडर घोषित किया, जिससे उपभोक्ताओं को संगीत का शुद्धतम रूप में आनंद लेने के लिए प्रीमियम साउंड एक्सपीरियंस प्रदान करने की उसकी प्रतिबद्धता को बल मिला। करण औजला की विशेषता वाला कैंपेन आज लाइव हो गया है, जो विभिन्न डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, आउटडोर एक्टिवेशन और रिटेल उपस्थिति पर बहुआयामी प्रचार कैंपेन की शुरुआत है। सोनी इंडिया के ऑडियो ब्रांड एंबेसडर करण औजला ने कहा, संगीत मेरी यात्रा के केंद्र में रहा है, और इसे जिस तरह से बनाया जाना चाहिए, उसे बनाने और अनुभव करने के लिए सही साउंड का होना आवश्यक है। शीर्ष-गुणवत्ता वाला ऑडियो देने के लिए सोनी की प्रतिबद्धता संगीत के प्रति मेरे जुनून और मेरे विश्वास किए जाने वाले मानकों के साथ पूरी तरह से मेल खाती है। सोनी वर्षों से मेरी संगीत यात्रा का हिस्सा रहा है, और मैं एक ऐसे ब्रांड के साथ सहयोग करने के लिए रोमांचित हूं जो दर्शकों तक शक्तिशाली, उच्च-गुणवत्ता वाली साउंड लाने के मेरे दृष्टिकोण को साझा करता है। सोनी इंडिया के प्रबंध निदेशक सुनील नैयर ने नई साझेदारी के बारे में अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, सोनी इंडिया शीर्ष-स्तरीय ऑडियो उत्पाद प्रदान करने के लिए समर्पित है जो देश भर में और उसके बाहर संगीत प्रेमियों के साथ प्रतिध्वनित होते हैं। हम ऑडियो श्रेणी के लिए अपने नए ब्रांड एंबेसडर के रूप में करण औजला का स्वागत करते हुए उत्साहित हैं। उनकी वैश्विक अपील, दर्शकों के साथ मजबूत संबंध और उच्च गुणवत्ता वाले साउंड के लिए जुनून, उन्हें इस सहयोग के लिए बिल्कुल उपयुक्त बनाता है। साथ मिलकर, हमारा लक्ष्य संगीत के अनुभव के तरीके को बढ़ाना है, ऐसी इमर्सिव साउंड प्रदान करना जो वास्तव में हर जगह प्रशंसकों से जुड़ती है। यह घोषणा ऐसे समय में की गई है जब सोनी इंडिया LT पावर साउंड सब-ब्रांड के तहत अपने पोर्टफोलियो का विस्तार कर रहा है, जिसे 2024 में लॉन्च किया गया था। स्ख़ पावर साउंड संगीत प्रेमियों के लिए बनाया गया है, जो शक्तिशाली, डीप साउंड उत्पन्न करता है जिसे आपके दिल की धड़कन बढ़ाने के लिए तैयार किया गया है। ULT उत्पादों में प्रीमियम हेडफ़ोन और वायरलेस स्पीकर शामिल हैं जिन्हें नाईस कैंसिलेशन , गहरे बास और उच्च स्पष्टता जैसी उन्नत साउंड तकनीकों के माध्यम से एक इमर्सिव अनुभव देने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

मीशो ने अपने प्लेटफॉर्म पर रिलैक्सो, पैरागन, और लिबर्टी जैसे प्रमुख ब्रांड्स पेश करके फुटवियर श्रेणी का विस्तार किया

रायपुर: भारत के एकमात्र ट्रू ईकॉमर्स मार्केटप्लेस, मीशो ने रिलैक्सो ग्रुप, पैरागन और लिबर्टी ब्रांड्स पेश करके अपने प्लेटफॉर्म पर फुटवियर श्रेणी को मजबूत किया है। इस लॉन्च के बाद लाखों शॉपर्स को ये भरोसेमंद ब्रांड मीशो पर उपलब्ध हो सकेंगे। यह रणनीतिक कदम खासकर टियर 2 बाजारों में ब्रांडेड, हाई-क्वालिटी के फुटवियर उपलब्ध कराने की मीशो की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है क्योंकि इन बाजारों के शॉपर्स कम्फर्ट और ड्यूरेबिलिटी के लिए भरोसेमंद ब्रांड्स को ज्यादा पसंद करते हैं। इन ब्रांड्स ने छोटी सी अवधि में ही ऑर्डर्स में जबरदस्त वृद्धि दर्ज की है। रिलैक्सो ग्रुप की मांग में 2.5 गुना, पैरागन की मांग में 2.5 गुना और लिबर्टी की मांग में 2 गुना वृद्धि दर्ज हुई है। इस वृद्धि को फ्लिप-फ्लॉप्स, कैज्युअल शूज़, स्पोर्ट्स शूज़, और फॉर्मल फुटवियर जैसे स्टाईल्स की बढ़ती मांग से तेजी मिली है, जो खासकर महवा, भाटापारा, सुपौल, और नुज़विद जैसे तेजी से बढ़ते हुए टियर-3 शहरों में दर्ज हुई है। इससे प्रदर्शित होता है कि मीशो किस प्रकार इन ब्रांड्स के लिए टियर 3 बाजारों के दरवाजे खोल रहा है और उन्हें अपने ग्राहकों का विस्तार करने में समर्थ बना रहा है। मीशो द्वारा मॉल पर अपने ब्रांड का विस्तार किया जा रहा है। इसने अपने ग्राहकों की जरूरतों, उनकी शॉपिंग की आदतों, और उनकी बदलती पसंद की गहरी समझ प्राप्त कर ली है। फुटवियर की श्रेणी मुख्यत: ब्रांड की पहचान और विश्वास पर निर्भर होती है। ग्राहकों की अपेक्षाओं और उपलब्धता के बीच का अंतर दूर करके मीशो द्वारा सुनिश्चित किया जा रहा है कि शॉपर्स चाहे जहाँ कहीं भी हों, उन्हें बिना किसी समझौते के फुटवियर का विस्तृत संग्रह प्राप्त हो सके। रिलैक्सो, पैरागन और लिबर्टी मीशो के साथ अपनी साझेदारी का विस्तार कर रहे हैं। वो भारत में बढ़ते हुए ग्राहक वर्ग की विकसित होती हुई पसंद को पूरा करने के लिए अपने उत्पादों का विस्तार करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। मीशो के विस्तृत यूज़र बेस के साथ ये ब्रांड्स 2025 में जबरदस्त वृद्धि करने के लिए मजबूत स्थिति में हैं।

एचडीएफसी बैंक ने भारतीय वायु सेना और सीएससी अकादमी के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए; प्रोजेक्ट एचएकेके (हवाई अनुभव कल्याण केंद्र) लॉन्च किया

नई दिल्ली: भारत के अग्रणी निजी क्षेत्र के बैंक एचडीएफसी बैंक ने आज भारतीय वायु सेना के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए, जो सहायक वायु सेना प्रमुख - लेखा और वायु सेना के वेटरन्स और सीएससी अकादमी के कार्यालय के माध्यम से कार्य करता है। इस दिन प्रोजेक्ट एचएकेके (हवाई अनुभव कल्याण केंद्र) - सेवा करने वालों की सेवा करना शुरू किया गया। प्रोजेक्ट एचएकेके को रक्षा पेंशनभोगियों, दिग्गजों और उनके परिवारों को सहायता और सेवाएं प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। शुरुआत में, वायु सेना इकाइयों में 25 केंद्र प्रस्तावित किए गए हैं, जिनमें नई दिल्ली, बेंगलुरु, गुड़गांव, पुणे, सिकंदराबाद, गुवाहाटी, जोधपुर और चंडीगढ़ शामिल हैं। एचडीएफसी बैंक अपने परिवर्तन कार्यक्रम के तहत रक्षा सेवा के वेटरन्स और उनके परिजनों के लिए आर्थिक समावेशन का निर्माण करेगा। बैंक सीएससी अकादमी (कॉमन सर्विस सेंटर ई-गवर्नेंस लिमिटेड द्वारा प्रवर्तित) के साथ मिलकर वित्तीय उत्पादों और सेवाओं में कौशल विकास और प्रशिक्षण प्रदान करेगा, जिससे उन्हें वित्तीय रूप से स्वतंत्र होने में मदद मिलेगी। एमओयू पर हस्ताक्षर के दौरान उपस्थित सम्मानित गणमान्य व्यक्तियों में एयर मार्शल पीके घोष एवीएसएम - एयर ऑफिसर इन चार्ज एडमिनिस्ट्रेशन, सुश्री स्मिता भगत, ग्रुप हेड - एचडीएफसी बैंक, श्री संजय राकेश, चेयरमैन, सीएससी अकादमी और भारतीय वायु सेना, एचडीएफसी बैंक और सीएससी ई गवर्नेंस के अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे। एमओयू पर श्री सत्येन मोदी, कार्यकारी उपाध्यक्ष और बिजनेस हेड, वैकल्पिक बैंकिंग चैनल और भागीदारी - एचडीएफसी बैंक, एयर वाइस मार्शल उपदेश शर्मा वीएसएम - सहायक वायु सेना प्रमुख (लेखा और वायु सेना के दिग्गज) और श्री प्रवीण चांदेकर, सीईओ-सीएससी अकादमी ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर बोलते हुए सुश्री स्मिता भगत ने कहा, यह समझौता ज्ञापन भारतीय वायुसेना के वेटरन्स और उनके परिवारों के कल्याण के लिए हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

ऑस्ट्रेलिया पर सेमीफाइनल जीत में फील्डर ऑफ द मैच बने श्रेयस अय्यर

दुबई(एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर और पूर्व कोच रवि शास्त्री ने मंगलवार को विश्व चैंपियन ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चैंपियंस ट्रॉफी सेमीफाइनल में भारत की जीत में बुलेट की तरह शानदार थ्रो के लिए श्रेयस अय्यर को फील्डर ऑफ द मैच का पदक प्रदान किया। विराट कोहली के वीरतापूर्ण 84 रन के बाद, हार्दिक पांड्या और केएल राहुल ने दुबई में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तनावपूर्ण रन-चेज के बाद भारत को लगातार तीसरी बार चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में पहुंचाया। जब एलेक्स कैरी ऑस्ट्रेलिया के लिए खेल को अपने नाम करने का प्रयास कर रहे थे, तब श्रेयस के प्रभावशाली क्षेत्ररक्षण प्रयास ने भारत को बहुत जरूरी विकेट दिलाने में मदद की। कैरी ने 61 रनों की पारी खेली और ऐसा लग रहा था कि वे ऑस्ट्रेलिया को 275 रनों के पार ले जाएंगे, लेकिन श्रेयस ने डीप से सीधे हिट करके बाएं हाथ के बल्लेबाज को आउट कर दिया और ऑस्ट्रेलिया की गति को रोक दिया। जीत के बाद, भारत के फील्डिंग कोच टी दिलीप ने ड्रेसिंग रूम में खिलाड़ियों को संबोधित किया और फील्डिंग में उनके प्रयासों की सराहना की और सर्वश्रेष्ठ फील्डिंग सम्मान के दावेदारों का खुलासा किया, इससे पहले उन्होंने पूर्व कोच शास्त्री को श्रेयस को पदक प्रदान करने के लिए आमंत्रित किया। बीसीसीआई.टीवी पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में दिलीप ने कहा, नॉकआउट गेम में मौजूदगी और जागरूकता की जरूरत होती है; इसके लिए एक फील्डिंग यूनिट की जरूरत होती है जो प्रतिक्रिया न करे बल्कि ऐसी चीजें बनाए जो हो रही हैं। हमने बिल्कुल यही किया... जिस तरह से हमने फील्डिंग में कोण बनाए, जिस तरह से हमने सुनिश्चित किया कि आउटफील्ड पर कोई दूसरा रन आसानी से न बने। और यह भी सुनिश्चित किया कि उन्होंने जो भी रन बनाए, वह बेहतरीन फील्डिंग प्रयास का सबूत है, जो कौशल और इच्छाशक्ति का संयोजन है। शास्त्री ने अपने भाषण में कहा, व्यक्तिगत प्रतिभा आपको केवल एक निश्चित स्तर तक ले जाएगी, लेकिन सामूहिक टीम प्रयास ही आपको अंतिम रेखा तक ले जाएगा। आज दो चैंपियन खेल रहे थे; दबाव का खेल, दिखाया गया चरित्र, टीम प्रयास, मैदान पर प्रतिभा की झलक हमेशा फर्क डालती है। भारत ने बांग्लादेश के खिलाफ अपने तीनों मुकाबलों में जीत हासिल करते हुए ग्रुप ए में शीर्ष स्थान हासिल किया। सेमीफाइनल में जीत के साथ, भारत ने ऑस्ट्रेलिया से बदला भी ले लिया, जिससे वे 2023 में एकदिवसीय विश्व कप के फाइनल में हार गए थे। अब वे 9 मार्च को दुबई में दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड के बीच दूसरे सेमीफाइनल के विजेता से भिड़ेंगे। शास्त्री ने कहा, आप इस टूर्नामेंट में अब तक की सर्वश्रेष्ठ टीम हैं, एक और जीत बाकी है।

टीम इंडिया के चैंपियंस ट्रॉफी फाइनल में पहुंचते ही रोहित शर्मा के नाम जुड़ा अनोखा रिकॉर्ड

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के फाइनल में जगह बना ली है. सेमीफाइनल में टीम इंडिया ने ऑस्ट्रेलिया को 4 विकेट से हराकर फाइनल टिकट कटाया. इस मैच में बतौर बल्लेबाज रोहित शर्मा कुछ खास नहीं कर सके और सिर्फ 28 रन बनाकर आउट हो गए लेकिन बतौर कप्तान एक बड़ी उपलब्धि उनके नाम जुड़ गई है. चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के फाइनल में पहुंचते ही रोहित शर्मा के नाम एक बड़ी उपलब्धि जुड़ गई है. दरअसल, रोहित शर्मा दुनिया के ऐसे पहले कप्तान बन गए हैं जिन्होंने डब्ल्यूटीसी फाइनल, वनडे विश्व कप फाइनल, टी 20 विश्व कप फाइनल और चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में कप्तानी की है. इससे पहले ये उपलब्धि किसी और कप्तान के नाम नहीं थी. रोहित पिछले 3 आईसीसी फाइनल में बतौर कप्तान टी 20 विश्व कप 2024 जीतने में सफल रहे थे. डब्ल्यूटीसी 2023 और वनडे विश्व कप 2023 के फाइनल में उन्हें ऑस्ट्रेलिया से हार का सामना करना पड़ा था. चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का खिताब जीतकर रोहित के पास सौरव गांगुली और एमएस धोनी की बराबरी का मौका है. सौरव गांगुली की कप्तानी में भारत 2002 में संयुक्त विजेता रहा था जबकि 2013 में धोनी की कप्तानी में विजेता रहा था. 2017 में भारत को विराट की कप्तानी में फाइनल में पाकिस्तान से हार का सामना करना पड़ा था. टॉस जीतकर पहले बैटिंग करते हुए ऑस्ट्रेलिया ने 49.3 ओवर में 264 रन बनाए थे. स्टीव स्मिथ ने सर्वाधिक 73 रन की पारी खेली. इसके अलावा एलेक्स कैरी ने 57 गेंद पर 61 रन की अहम पारी खेली. हेड ने 39, लाबुशेन ने 29 रन बनाए.

बैडमिंटन स्टार साइना नेहवाल ने सैनिटरी केयर कंपनी में किया निवेश, बनीं ब्रांड एंबेसडर

नई दिल्ली(एजेंसी)। बैडमिंटन स्टार साइना नेहवाल अब व्यवसाय की दुनिया में भी कदम रख चुकी हैं। उन्होंने मासिक धर्म स्वच्छता ब्रांड नारिक में निवेश किया है और इसकी ब्रांड एंबेसडर भी बनी हैं। नारिक महिलाओं के लिए बेहतर और टिकाऊ सैनिटरी उत्पाद बनाती है, जिससे उन्हें साफ-सफाई और सुविधा मिल सके। भारत में अभी भी कई महिलाओं को अच्छे सैनिटरी पैड नहीं मिल पाते और साइना चाहती हैं कि हर महिला को सही और सुरक्षित उत्पाद मिले। नारिक एक पर्यावरण के अनुकूल ब्रांड है, जो रियूजेबल यानी दोबारा इस्तेमाल किए जा सकने वाले सैनिटरी प्रोडक्ट्स बनाती है। इसके पीरियड अंडरवियर फ्रांस में बने हैं और जर्मन लैब से प्रमाणित हैं। इनका फॉर्मूला बहुत सुरक्षित और किफायती है, जिससे महिलाएं बार-बार नए पैड खरीदने की जगह इन्हें धोकर दोबारा इस्तेमाल कर सकती हैं। साइना ने इस पहल की सराहना की और कहा कि यह महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है। नारिक की संस्थापक श्रुति चंद ने साइना का स्वागत किया और कहा कि इस साझेदारी से ज्यादा महिलाओं तक अच्छी जानकारी पहुंचेगी। भारत में सैनिटरी उत्पादों का बाजार बहुत तेजी से बढ़ रहा है और 2025 तक 52.3 करोड़ डॉलर (लगभग 4,500 करोड़ रुपये) तक पहुंच सकता है। कंपनी के मालिक ने कहा कि नारिक सिर्फ उत्पाद ही नहीं बेचती, बल्कि महिलाओं को जागरूक और आत्मनिर्भर बनाने का काम भी करती है।

ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज बल्लेजबाज स्टीव स्मिथ ने लिया सन्यास

भारत से सेमीफाइनल हारने के बाद फैसला

नई दिल्ली(एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी के सेमीफाइनल में भारत से शिकस्त मिलने के बाद ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज बैट्समैन स्टीव स्मिथ ने सन्यास ले लिया है. सेमिफाइनल में ऑस्ट्रेलियाई टीम की कप्तान संभालने वाले स्मिथ अब वनडे मैच नहीं खेलेंगे. ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट ने बुधवार को इसकी घोषणा की. मंगलवार को भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच दुबई के इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में सेमीफाइनल का मुकाबला हुआ था. ऑस्ट्रेलिया की टीम को भारत ने चार विकेट से मात दी. पैट कमिंस की गैरमौजूदगी में स्मिथ टीम की कप्तानी कर रहे थे. भारत से हार मिलने के तुरंत बाद ही स्मिथ ने अपने दोस्तों को बता दिया था कि उन्होंने अपना अंतिम वनडे मैच खेल लिया है. बता दें, स्मिथ टेस्ट मैच खेलते रहेंगे. वहीं, टी 20 इंटरनेशनल में वह लंबे समय से टीम से बाहर ही हैं. ओडीआई से सन्यास लेने का ऐलान करते हुए स्मिथ ने कहा कि मैंने हर एक पल का लुत्फ उठाया है. बहुत सारे अद्भुत पल और शानदार यादें रहीं हैं. ये शानदार सफर रहा है. दो वर्ल्डकप जीतना एक शानदार उपलब्धि रही है. लंबे सफर में टीम-साथियों ने सफर को साझा किया है. 2027 वर्ल्डकप आने वाला है. तैयारी शुरू करने का ये शानदार मौका है. इसलिए अब मुझे ऐसा लगता है कि सन्यास लेने का ये सही मौका है. स्टीव स्मिथ ने 2010 में वेस्टइंडीज के खिलाफ मैदान में उतरकर अपना इंटरनेशनल डेब्यू किया. उन्होंने अपने करियर में 170 वनडे मैच खेले हैं. उन्होंने 5800 रन बनाए हैं. उनका औसत 43.28 तो स्ट्राइक रेट 86.96 का रहा. ओडीआई में उनकी बेस्ट पारी 164 रनों की रही. उन्होंने वनडे में 35 अर्धशतक और 12 शतक लगाए हैं. चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में स्मिथ फॉर्म में नहीं हैं. उन्होंने अपनी तीन पारियों में 48.50 की औसत से 97 रन बनाए. इस बार 73 रन उनकी सर्वश्रेष्ठ पारी रही है. स्मिथ टेस्ट में अपनी बल्लेबाजी के लिए पहचाने जाते हैं. उन्होंने टेस्ट में कई रिकॉर्ड बनाएं हैं. 116 टेस्ट की 206 पारियों में उन्होंने 10,271 रन बनाएं हैं. 239 रन की पारी उनकी बेस्ट पारी रही है. उन्होंने 36 शतक और 41 अर्धशतक बनाए हैं. इनमें चार दोहरे शतक भी शामिल हैं. टेस्ट और ओडीआई के अलावा, स्मिथ ने 67 टी20 मैच भी खेले हैं. उन्होंने 125.46 के स्ट्राइक रेट से 1094 रन बनाए हैं.

कलर्स की प्रमुख अभिनेत्रियों ने महिला दिवस पर सशक्तिकरण और सीमाओं को तोड़ने पर साझा किए अपने विचार

रुबीना दिलैक, जो कलर्स के 'लॉफ्टर शेफ्स अनिलिमिटेड एंटरटेमेंट' में नजर आ रही हैं, ने कहा, मैं एक ऐसे घर में पली-बढ़ी हूं जहां महिलाओं की चलती हैं और पुरुष हमारी सफलता देखकर गर्व महसूस करते हैं। मेरी दादी हमारे परिवार की रीढ़ हैं, और हमारी पीढ़ी की हर महिला—चाहे वह मेरी मां हों, मेरी बुआएं हों, या अब मैं—हम सभी को केवल प्यार से ही नहीं, बल्कि सच्चे सम्मान के साथ रानी की तरह रखा गया है। हमारे जीवन के पुरुष—मेरे पति, मेरे पिता, मेरे ससुर—सिर्फ हमारी ताकत को स्वीकार ही नहीं करते, बल्कि उसे बढ़ावा भी देते हैं। ऐसा हर जगह होना चाहिए। ×ऽ39;लॉफ्टर शेफ्स×ऽ39; में हर सेलिब्रिटी मुझे बॉस लेडी के रूप में देखता है, और यही माहौल हर महिला को मिलना चाहिए। महिला दिवस सिर्फ एक दिन मनाने का नहीं, बल्कि सोच बदलने और सम्मान व सशक्तिकरण को रोजमर्रा की वास्तविकता बनाने का अवसर है। हर महिला के लिए मेरा संदेश यही है—दुनिया के आपको पहचानने का इंतजार मत कीजिए, खुद अपनी पहचान बनाइए और एक-दूसरे को ऊपर उठाइए। दीपिका सिंह, जो कलर्स के 'मंगल लक्ष्मी' में मंगल की भूमिका निभा रही हैं, ने कहा, अक्सर महिलाओं से कहा जाता है कि उनके सपनों की समय सीमा होती है, कि उनकी महत्वाकांक्षाएं सीमित होनी चाहिए और वे समाज द्वारा तय भूमिकाओं में ही फिट बैठें। कई महिलाएं अपने सपनों को पूरा करना चाहती हैं, लेकिन असफलता का डर और घर की जिम्मेदारियां उन्हें रोक देती हैं। लेकिन मंगल की कहानी कुछ और ही दिखाती है। 36 साल की उम्र में, एक मां, एक पत्नी और अब एक उद्यमी होने के बावजूद, वह उस दुनिया में कदम रखती है जो उसके लिए नहीं बनी थी—और पीछे हटने से इंकार कर देती है। शो का एक ट्राय तो बनता है एंथम हर उस महिला को समर्पित है जिसने कभी अपने सपनों को लेकर संदेह किया हो।

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने बिल्कुल नए मैनुअल ट्रांसमिशन ग्रेड में लेजेंडर 4X4 पेश किया

बैंगलोर: शानदार प्रदर्शन, रोमांचकारी और स्टाइलिश एसयूवी की बढ़ती मांग की पूर्ति के लिए, टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने टोयोटा लेजेंडर **4X4** का मैनुअल ट्रांसमिशन (एमटी) वैरिएंट (रूपांतर) पेश किया। रोमांच चाहने वाले ड्राइविंग के उत्साहियों के लिए डिज़ाइन किया गया यह नया वैरिएंट पावर, लग्जरी और अत्याधुनिक तकनीक का एक बेहतरीन मिश्रण प्रदान करते हुए जुड़ाव और नियंत्रण को बेहतर करता है।

किसी भी इलाके में बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार, लेजेंडर ने 2021 में भारत में अपनी शुरुआत की, जिसमें उन्नत **4X4** क्षमता हैं, जो इसे ऑफ-रोड रोमांच के लिए आदर्श साथी बनाती हैं। लेजेंडर **4X4** एमटी के केंद्र में जाना-माना 2.8लीटर डीजल इंजन है, जिसे बेजोड़ पावर डिलीवरी के लिए इंजीनियर किया गया है। 204 पीएस की पावर और 420 एनएम का टॉर्क पैदा करने वाला यह पावरट्रेन उन लोगों के लिए बनाया गया है जो अपनी ड्राइव पर पूर्ण नियंत्रण पसंद करते हैं।

6-स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन सुस्पष्टता बढ़ाता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि उत्साही लोग चुनौतीपूर्ण इलाकों में आसानी से नेविगेट कर सकते हैं और सहज गियर शिफ्ट के रोमांच का आनंद ले सकते हैं। टोयोटा की उन्नत 4ङ्क4 तकनीक चालकों को विविध परिदृश्यों से निपटने के लिए और अधिक सशक्त बनाती है, जिससे लीजेंडर शहरी रोमांच और ऑफ-रोड रोमांच दोनों के लिए एक आदर्श साथी बन जाता है।

लेजेंडर **4X4** एमटी की पेशकश पर अपने विचार रखते

हुए, सेल्स-सर्विस-यूज्ड कार बिजनेस के उपाध्यक्ष, श्री वरिंदर वाधवा ने कहा, हम टोयोटा लेजेंडर के नए ग्रेड का अनावरण करते हुए रोमांचित हैं। इसे हमारे मूल्यवान ग्राहकों की बढ़ती मांगों और प्राथमिकताओं के जवाब में विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया है। एमटी वैरिएंट में इसे नया शामिल किया जाना न सिर्फ लेजेंडर की अपील को और बढ़ाएगा, बल्कि आज के ग्राहक की गतिशील जरूरतों को पूरा करने वाले बहुमुखी समाधान प्रदान करने की टोयोटा की प्रतिबद्धता को भी मजबूत करेगा। हमें विश्वास है कि हम बाजार में एक महत्वपूर्ण अंतर को संबोधित कर रहे हैं क्योंकि हम प्रीमियम एसयूवी उत्कृष्टता की सीमाओं को आगे बढ़ाते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि हर ड्राइव अधिक गतिशील, इमर्सिव और भारतीय ग्राहकों की अपेक्षाओं के अनुरूप है।

डिज़ाइन दर्शन भविष्यवादी सौंदर्य को गतिशील सड़क उपस्थिति के साथ जोड़ता है। कैटामारन से प्रेरित फ्रंट और रियर बंपर, पियानो ब्लैक एक्सेंट के साथ एक निखरे हुए स्लीक फ्रंट ग्रिल के साथ, एक आकर्षक लेकिन परिष्कृत उपस्थिति बनाते हैं। वाटरफॉल एलईडी लाइन गाइड सिग्नेचर के साथ स्प्लिट क्वाड-एलईडी हेडलैम्प बेहतर दृश्यता सुनिश्चित करते हैं, जबकि अनुक्रमिक टर्न इंडिकेटर एसयूवी की आधुनिक और गतिशील अपील को बढ़ाते हैं। 18-इंच मल्टी-लेयर्ड मशीन-कट फिनिश वाले अलॉय व्हील्स पर बैठे, लेजेंडर में एक शक्तिशाली रुख है जो इसकी कमांडिंग रोड मौजूदगी को पूरा करता है।

केबिन के अंदर ड्यूल-टोन (ब्लैक और मैरून) इंटीरियर थीम के साथ लग्जरी और स्पोर्टीनेस का अहसास होता है, जिसे परिष्कृत स्पर्श के लिए स्टीयरिंग व्हील और कंसोल बॉक्स पर कंट्रास्ट स्टिचिंग के साथ उभारा गया है। इंस्ट्रूमेंट पैनल, फ्रंट डोर ट्रिम और फुटवेल एरिया में इंटीरियर एम्बिएंट इल्यूमिनेशन प्रीमियम फील को बढ़ाता है, जिससे हर यात्रा और भी आकर्षक हो जाती है। सबवूफर और एम्पलीफायर सहित प्रीमियम 11 जेबीएल स्पीकर एक इमर्सिव साउंड एक्सपीरियंस सुनिश्चित करते हैं, जिससे लंबी ड्राइव और भी मजेदार हो जाती है।

दैनिक
विश्व परिवार महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शुक्रवार 07 मार्च 2025

दुर्गकोंदल की पलाचुर सिंचाई योजना के कार्यों हेतु 5.47 करोड़ रुपए स्वीकृत

रायपुर (विश्व परिवार)। जल संसाधन विभाग छत्तीसगढ़ शासन ने कांकेर जिले के विकासखण्ड दुर्गकोंदल के पलाचुर सिंचाई योजना के अंतर्गत तालाब के जीर्णोद्धार कार्यों को कराने 5 करोड़ 47 लाख 68 हजार रुपए स्वीकृत किए है। मुख्य अभियंता महानदी परियोजना जल संसाधन विभाग रायपुर को योजना के कार्य कराने प्रशासकीय स्वीकृति जारी की है।

संक्षिप्त समाचार

उरला इंडस्ट्रीज एसोसिएशन की द्विवार्षिक चुनाव वर्ष 2025-27 हेतु चुनाव में 15 कार्यकारिणी सदस्य निर्विरोध निर्वाचित

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री अश्विन गर्ग विगत 8 वर्षों से उरला इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित होते रहें है व पुन: 2025-27 के लिये भी निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए है। नये कार्यकारिणी एवं कार्यालय पदाधिकारी के गठन हेतु दिनांक 01.03.2025 को बैठक रखी गयी थी जिसमें श्री अश्विन गर्ग (अध्यक्ष), श्री विनोद केजरीवाल (निवर्तमान अध्यक्ष), श्री विक्रम जैन (महासचिव), श्री नीरज अग्रवाल (सहसचिव), श्री संजय अग्रवाल (उपाध्यक्ष), श्री रामकृष्ण खेड़िया (उपाध्यक्ष) एवं श्री विवेक अरोरा (कोषाध्यक्ष) चुने गये। अन्य कार्यकारिणी सदस्य निम्नानुसार है- श्री राजेश अग्रवाल, श्री विवेक ड्रोलिया, श्री संजय मेहरा, श्री शिशिर अग्रवाल, श्री अशोक कुमार गोयल, श्री दीपक भीमसरिया, श्री ज्ञानेन्द्र सिंह, श्री बी.के. गुप्ता, श्री के. लक्ष्मण दास, का चयन किया गया।

जय व्यापार पैनल का धुंआधार सम्पर्क यात्रा

रायपुर (विश्व परिवार)। जय व्यापार पैनल से जितेन्द्र दोशी, विक्रम सिंहदेव एवं परमानन्द जैन ने बताया कि छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स के चुनाव को लेकर जय व्यापार पैनल पूरी जागरूकता के साथ पूरे प्रदेश में सम्पर्क यात्रा कर रहा है। जय व्यापार पैनल के इकाई के प्रभारी द्वय महेश जेठानी, अवनीत सिंह के साथ नरेश माखीजा, विजय शादीजा एवं टीम के साथ आज कोरबा के सदस्यों से मुलाकात की। चर्चाओं के साथ-साथ भविष्य में व्यापार को और कैसे नई उंचाई पर ले जाने हेतु अपने विचारो की प्रस्तुति दी। साथ ही साथ आनें वाले चुनाव में जय व्यापार पैनल को पुन: पूर्ण बहुमत प्रदान करनें हेतु निवेदन किया। सम्पर्क यात्रा के दौरान प्रत्येक इकाई द्वारा हार्दिक स्वागत अभिनंदन किया गया है। जनसम्पर्क के दौरान मिल रहे आत्मीयता एवं सम्मान से पूरी टीम अभिभूत है। पूरे विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि ऐतिहासिक जीत होने वाली है। कोरबा जय व्यापार पैनल के पदाधिकारी रामसेवक अग्रवाल, परसराम रामानी, जयंत कुमार अग्रवाल, रवि लालवानी, प्रभु अग्रवाल, रोहित असरानी, विशाल सचदेव, राजकुमार गंगवानी, कवर राम मनवानी, नरेश संतानी, कन्हैया लाल कलवानी, टेकचंद रामानी, संभाग चंद मनवानी, संतोष वाधवानी, मनोज जेठानी, नीरज असरानी।

नवपदस्थ आयुक्त एवं एमडी स्मार्ट सिटी विश्वदीप ने रायपुर नगर निगम में पदभार सम्भाला

नवपदस्थ जिला कलेक्टर धमतरी अबिनाश मिश्रा ने पदभार सौंपा

रायपुर (विश्व परिवार)। नवपदस्थ धमतरी जिला कलेक्टर अबिनाश मिश्रा एवं नवपदस्थ निगम आयुक्त एवं स्मार्ट सिटी एमडी विश्वदीप को नगर निगम एवं स्मार्ट सिटी के अधिकारियों, कर्मचारियों ने बुके प्रदत्त कर हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन के सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा नवपदस्थ रायपुर नगर निगम आयुक्त एवं रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के प्रबंध संचालक विश्वदीप ने आज अपरान्ह नगर निगम मुख्यालय भवन महात्मा गॉधी सदन के द्वितीय तल पर निगम आयुक्त कार्यालयीन कक्ष में निगम आयुक्त एवं रायपुर स्मार्ट सिटी के प्रबंध संचालक का प्रशासनिक पदभार सम्हाल लिया है। जिला धमतरी के नवपदस्थ कलेक्टर अबिनाश मिश्रा ने नवपदस्थ आयुक्त विश्वदीप को नगर निगम आयुक्त और रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के प्रबंध संचालक का प्रशासनिक पदभार सौपा। इस अवसर पर भारतीय प्रशासनिक सेवा बैच 2018 के नवपदस्थ जिला धमतरी कलेक्टर अबिनाश मिश्रा एवं भारतीय प्रशासनिक सेवा बैच 2019 के नवपदस्थ रायपुर नगर निगम आयुक्त विश्वदीप को रायपुर नगर निगम अपर आयुक्त सर्वश्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, यू.एस. अग्रवाल, पंकज के. शर्मा, विनोद पाण्डेय, कृष्णा खटीक, मुख्य अभियंता श्री यू.के. धलेन्द्र, उपायुक्त डॉ. अंजलि शर्मा, जसदेव सिंह बाबरा, प्रीति सिंह, डॉ. दिव्या चंद्रवंशी, जोन 4 जोन कमिश्नर अरूण ध्रुव, रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के महाप्रबंधक तकनीकी पंकज कुमार पंचायती सहित रायपुर नगर निगम एवं रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बुके प्रदत्त कर शुभकामनाएं दी। इस दौरान निवर्तमान नगर निगम आयुक्त एवं नवपदस्थ जिला धमतरी कलेक्टर अबिनाश मिश्रा के परिवारजनों की नगर निगम आयुक्त कक्ष में उपस्थिति रही।

रायपुर नगर निगम के नवपदस्थ आयुक्त एवं स्मार्ट सिटी के एमडी श्री विश्वदीप ने नगर निगम के अधिकारियों के साथ परिचयात्मक बैठक की। आयुक्त ने अधिकारियों से उन्हें सौंपे गये प्रशासनिक कार्य दायित्वों की जानकारी ली। साथ ही स्वच्छ सर्वेक्षण अभियान 2024 की नगर पालिक निगम रायपुर क्षेत्र में प्रशासनिक तैयारियों की प्रगति और राजस्व वसूली अभियान की प्रगति सहित विकास और निर्माण कार्यो से संबंधित अन्य लोककल्याणकारी योजनाओं की प्रगति और क्रियान्वयन के संबंध में जानकारी प्राप्त की। नवपदस्थ आयुक्त ने 7 मार्च को दोपहर 12 बजे से नगर निगम मुख्यालय के चतुर्थ तल पर निगम सामान्य सभा सभागार में रायपुर कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह द्वारा आहूत रायपुर नगर निगम अध्यक्ष (स्पीकर) और नगर निगम अपील समिति के सदस्यों के निर्वाचन कार्यक्रम में दिये गये प्रशासनिक दायित्वों का अच्छी तरह निर्वहन करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिये हैं।

बीरगांव में लोक अदालत के नोटिस से हडकंप, एक सप्ताह में 50 लाख रुपए की वसूली

बीरगांव (विश्व परिवार)। बीरगांव नगर निगम बीरगांव क्षेत्र में राजस्व वसूली में तेजी लाने हेतु निगम क्षेत्र में लगभग 1000 बकायादारो की लिस्ट तैयार कर नियमानुसार डिमांड बिल, नोटिस, कुर्की वारंट जारी किया गया है जिसमें से लगभग 425 बकायादारो के द्वारा पिछले माह फ़रवरी में भुगतान किया गया, शेष सभी लोगो को उनके मोबाइल पर व्हात्सप्प मैसेज करते हुए डोर टू डोर संपर्क किया जा रहा है। उक्त सम्बन्ध में निगम आयुक्त युगल किशोर उर्वषा ने निगम के राजस्व अधिकारियो की समीक्षा बैठक लेते हुए राजस्व वसूली में कड़ाई करते हुए 100त्न राजस्व वसूली 31 मार्च तक पूर्ण करने का निर्देश दिया है। आयुक्त के निर्देश के परिपालन में राजस्व अधिकारी दीपक दीवान के नेतृत्व में राजस्व अमले के द्वारा प्रात: 07 बजे से आवासीय क्षेत्रो में डोर टू डोर संपर्क कर मौके पर ही पी ओ एस मशीन के साथ वसूली अभियान चलाया जा रहा है साथ ही व्यावसायिक क्षेत्रो में कुर्की। सीलबंदी की कार्यवाही प्रस्तावित की जा रही है, जिसका अच्छा परिणाम निगम को प्राप्त हुआ है जिसके चलते लगभग 1.21 करोड़ की वसूली प्राप्त हुई है। उक्त वसूली में से लगभग 62 लाख की वसूली पिछले सप्ताह लोक अदालत की नोटिस से ही हुई है, लगभग 350 बकायादारो को लोक अदालत के माध्यम से वसूली हेतु सूचित किया गया जिसमें 08 मार्च 2025 को संबंधितो को पेशी में उपस्थित होने एवं उससे पूर्व दिनांक 05 मार्च 2025 को सुलह समझोते के माध्यम से निराकरण हेतु संबंधितो को सूचित किया गया।

सीपेट के पाठ्यक्रमों के लिए ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया शुरू

प्रवेश आवेदन 29 मई तक प्रस्तुत करने की अपील

CIPET सिपेट

रायपुर (विश्व परिवार)। केंद्रीय पेट्रोरसायन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (सिपेट), रसायन और पेट्रोरसायन विभाग, रसायन और उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार, एक राष्ट्रीय स्वायत्त संस्था है। सिपेट केंद्र की स्थापना 2015 में रायपुर के भनपुरी औद्योगिक क्षेत्र में की गई थी, जिसका उद्देश्य छत्तीसगढ़ में प्लास्टिक उद्योगों को तकनीकी सहायता प्रदान करना, इन उद्योगों के लिए आवश्यक कुशल जनशक्ति विकसित करना और अनुसंधान एवं विकास कार्यों में सहायता करना है। सिपेट आईएसओ 9001-2015 प्रमाणित है और एआईसीटीई अनुमोदित प्लास्टिक इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। सिपेट से पाठ्यक्रम करने वाले सभी विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के दौरान ही नौकरी मिल जाती है। सिपेट में प्रवेश पाने के लिए हर साल अखिल भारतीय स्तर पर सिपेट प्रवेश परीक्षा (कैट) आयोजित की जाती है, उसमें मेरिट के आधार पर प्रवेश दिया जाता है।

लाभ उठाने की अपील

शैक्षिक वर्ष 2025-26 के लिए प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो गई है और सिपेट प्रवेश परीक्षा के लिए पंजीकरण वेबसाइट https://Cipetwz.onlineregistrationform.org/CIPET/ पर शुरू हो गया है. प्रवेश परीक्षा 8 जून 2025 को आयोजित की जाएगी, परीक्षा के लिए प्रवेश आवेदन 29.05.2025 तक प्रस्तुत किए जा सकेंगे। सभी छात्र जो इस वर्ष 10वीं, डिप्लोमा और बीएससी (अंतिम वर्ष) की परीक्षा में शामिल हुए हैं वे परीक्षा परिणाम की प्रतीक्षा किए बिना प्रवेश-आवेदन पत्र भर सकते हैं। सिपेट के प्रशिक्षण प्रमुख एन. रविंद्र रेड्डी ने सभी पात्र छात्रों से इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाने की अपील की गई है।

दिल्ली के राष्ट्रीय कार्यक्रम से लौटे बिजली कर्मियों ने कहा- लाइनमेन का ऐसा सम्मान कल्पना के बाहर की बात थी

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के तीन बिजली कर्मवीरों को दिल्ली में आयोजित लाइनमेन दिवस समारोह में सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ है। सम्मान पाकर लौटे बिजलीकर्मियों ने इसे अपने जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार बताया और कहा कि फील्ड में काम करते हुए हमें अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है लेकिन सभी चुनौतियों के बीच हमारा साहस ही हमें आगे बढ़ाता है। लाइनमेन दिवस पर सम्मान होने से हमारा साहस और बढ़ गया है। इस सम्मान से हमें और बेहतर कार्य करने की प्रेरणा मिली है।

छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के लाइनमेन श्री जोगेश्वर प्रसाद वर्मा सारागांव श्री भूपेश्वर ध्रुव मैनपुर और श्री परमेश्वर चंद्राकर नेहरूनगर को उत्कृष्टता सम्मान प्रदान किया गया। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए पॉवर कंपनी के अध्यक्ष श्री सुबोध सिंह एवं प्रबंध निदेशक श्री भीमसिंह कंवर का भी आभार व्यक्त किया है। केंद्रीय ऊर्जा मंत्रालय ने देशभर में लाइनमेन दिवस पर विविध आयोजन किये। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में देशभर के चुने हुए लाइनमेन को केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण सीईए के अध्यक्ष श्री घनश्याम प्रसाद एवं दिल्ली डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के सीईओ श्री गजानंद एस काले ने सम्मानित किया। इसमें हर प्रदेश के तीन-तीन लाइनमेन को चुना गया था।

छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री केएस भारती भी प्रतिनिधि मंडल के लीडर के रूप में इस कार्यक्रम में शामिल हुए। लौटने के पश्चात् श्री भूपेश्वर ध्रुव ने बताया कि वे 15 साल से लाइनमेन के पद पर कार्यरत् हैं। उनकी पदस्थापना घने वनांचल और नक्सल प्रभावित क्षेत्र में है। बारिश और आंधी के कारण उनके क्षेत्र में जब फाल्ट आता है तो वे बिना समय गंवाए अपने टीम के साथ पेट्रोलिंग करते हैं और फाल्ट सुधारते हैं। तीन साल पहले गांव में बहुत अधिक बारिश हुई थी। तब नदी में बाढ़ के कारण वहां जाना मुश्किल था। तब वे नदी पार करके दूसरी ओर पहुंचे और विद्युत आपूर्ति बहाल की। भिलाई के लाइन परिचारक श्री परमेश्वर चंद्राकर 1990 से वितरण कंपनी में कार्यरत हैं। उनका कहना है कि पहली बार निचले स्तर पर काम करने वालों को सम्मान मिलने से उनके साथियों का भी उत्साहवर्धन हुआ है। यह हमारे लिए अकल्पनीय और प्रेरक रहा।

पुलिस महानिदेशक अरूण देव गौतम द्वारा डायल 112 का किया गया भ्रमण

रायपुर (विश्व परिवार)। जिला रायपुर आज दिनांक 05.03.2025 को पुलिस महानिदेशक अरूण देव गौतम द्वारा डायल 112 सी-4 सिविल लाईन रायपुर का भ्रमण किया गया।

डायल 112 सी-4 के ऑपरेशन फ्लोर पर भ्रमण के दौरान् पुलिस महानिदेशक अरूण देव गौतम को डायल 112 की कार्यप्रणाली के विषय में समझाते हुए अति पुलिस महानिदेशक श्री प्रदीप गुप्ता द्वारा बताया गया कि पुलिस-फायर-चिकित्सा संबंधी आकस्मिक जरूरतों के मद्देनज़र जरूरतमंद नागरिकों द्वारा कॉल करके और विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम् से डायल 112 से संपर्क किया जाता है। कॉलर द्वारा संपर्क करने पर यह कॉल सी-4 स्थित कॉल टेकर सेक्शन में प्राप्त होती है, जिस पर फ्लोर पर उपस्थित कॉल टेकर के द्वारा कॉलर से आवश्यक पूछताछ कर इवेंट बनाया जाता है जिसे तकनीकी भाषा में सीएफएस (कॉल फॉर सर्विस) कहा जाता है। कॉल टेकर द्वारा बनाये गए सीएफएस को कंप्लीट करते ही यह इवेंट कम्प्यूटर ऐडेड डिस्पेच प्रणाली के माध्यम् से रियल टाईम में संबंधित जिला के डिस्पेचर स्टॉफ के सिस्टम में दिखाई देती है, जो उस घटनास्थल के नजदीक उपलब्ध ईआरव्ही (इमरजेंसी रिस्पाँस व्हीकल) को सिस्टम में खोज कर आवश्यकतानुसार एक या एक से अधिक ईआरव्ही को उस इवेंट को अटैंड करने Assign करता है। इवेंट Assign होते ही ईआरव्ही में लगे एमडीटी (मोबाईल डेटा टर्मिनल) डिवाइस की मदद से तुरंत घटनास्थल के लिए रवाना हो जाता है। इस पूरी प्रक्रिया का सी-4 में मौजूद पुलिस पर्यवेक्षण अधिकारी और संबंधित जिला के डीपीसीआर (डिस्ट्रिक्ट पुलिस कंट्रोल रूम) स्टॉफ द्वारा निगरानी की जाती है। इवेंट समाप्त होने पर ईआरव्ही स्टॉफ द्वारा की गई कार्यवाही के संबंध में एक ब्रीफ नोट लिखा जाता है, जिसे एटीआर (एक्शन टेकन रिपोर्ट) कहा जाता है। पुलिस अधिकारियों द्वारा समय-समय पर कॉलरों से संपर्क कर फीडबैक लिया जाता है, ताकि सर्विस की गुणवत्ता में आवश्यक सुधार किए जा सकें। इस अवसर पर उप पुलिस महानिरीक्षक (योजना एवं प्रबंध/डायल 112) श्री मनीष शर्मा (भापुसे), वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, रायपुर डॉ. लाल उमेद सिंह (भापुसे), अति. पुलिस अधीक्षक (शहर) लखन पटले, पुलिस अधीक्षक डायल 112 श्री अविनाश सिंह ठाकुर (रापुसे), एवं डायल 112 सी-4 के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

नवागत दुर्ग कलेक्टर अभिजीत सिंह ने पदभार सम्भाला

कार्यालय निरीक्षण के दौरान सुनी बुजुर्ग की समस्या

दुर्ग (विश्व परिवार)। नवागत दुर्ग जिला कलेक्टर अभिजीत सिंह ने आज अपना पदभार संभालने के तुरंत बाद कलेक्टर कार्यालय का निरीक्षण किया एवं निरीक्षण के दौरान ही उन्होंने कुछ लोगों की समस्या सुनी।

ढांचा भवन निवासी पूर्व मीडिया कर्मी वीरेंद्र प्रसाद दुबे 73 वर्ष ने कातुल बोर्ड वार्ड नंबर 60 अंतर्गत अपने पट्टे वाले निवास पर छोटे भाई एवं छोटी बहन द्वारा घर पर कब्जा करने संबंधित समस्या सुनाई एवं आवेदन प्रस्तुत किया जिसे तत्काल नवागत कलेक्टर अभिजीत सिंह द्वारा एसडीएम उत्तम ध्रुव को आदेश दिया कि उक्त प्रकरण का शीघ्र निराकरण किया जाए आवेदन की प्रति एसडीएम उत्तम ध्रुव को सौंपी गई एसडीएम उत्तम ध्रुव द्वारा वीरेंद्र प्रसाद दुबे को आश्वासन दिया गया की प्रकरण पर उचित कार्रवाई करते हुए इसका शीघ्र निराकरण किया जाएगा।

बिलासपुर जिले में जन्मजात हृदय रोग से पीड़ित बच्चों की जाँच के लिए एसईसीएल ने लगाए 2 शिविर

30 पीड़ित बच्चों को नि:शुल्क ऑपरेशन की सुविधा देगा एसईसीएल

बिलासपुर (विश्व परिवार)। दिनांक 3 और 5 मार्च 2025 को एसईसीएल द्वारा अपनी सीएसआर पहल एसईसीएल की धड़कन के तहत बिलासपुर के मस्तूरी एवं कोटा में श्री सत्य साई संजीवनी अस्पताल के सहयोग से बच्चों की निशुल्क हृदय जांच के लिए शिविर का आयोजन किया गया। दोनों शिविरों में कुल 75 बच्चों की निशुल्क हृदय की जांच की गई।

3 मार्च को मस्तूरी में आयोजित शिविर में 41 बच्चों की जन्मजात हृदय रोग की निशुल्क जांच की गई। जांच के दौरान इनमें से 13 बच्चे जन्मजात हृदय रोग से ग्रसित पाए गए। वहीं कोटा में आयोजित शिविर में 34 बच्चों की हृदय की जांच की गई जिसमें 17 बच्चे जन्मजात हृदय रोग से ग्रसित पाए गए। चिन्हित बच्चों को एसईसीएल द्वारा श्री सत्य साई संजीवनी अस्पताल रायपुर में निशुल्क इलाज एवं चिकित्सकीय देखभाल मुहैया कराई जाएगी।

कोल इंडिया के नन्हा सा दिल प्रोजेक्ट अंतर्गत एसईसीएल द्वारा एसईसीएल की धड़कन प्रोजेक्ट चलाया जा रहा है जिसके तहत कंपनी अपने संचालन क्षेत्रों के बच्चों की दिल के जन्मजात रोग की निशुल्क स्क्रीनिंग, इलाज एवं देखभाल प्रदान कर रहा है।

वर्तमान में परियोजना के तहत एसईसीएल द्वारा 75 बच्चों की सर्जरी सफलतापूर्वक की जा चुकी है। कोयलांचल में इस पहल से हो रहे लाभ को देखते हुए एसईसीएल ने छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के कोयला क्षेत्रों में सीएचडी से पीड़ित 300 बच्चों के इलाज और सर्जरी के लिए 4.71 करोड़ रुपए की मंजूरी दी है।

एसईसीएल की धड़कन' पूरी तरह से एसईसीएल सीएसआर कार्यक्रम के तहत वित्त पोषित है, यह पहल सुनिश्चित करती है कि वित्तीय बाधाओं के कारण कोई भी जरूरतमंद बच्चा जीवन रक्षक चिकित्सा देखभाल से वंचित न रहे। समुदाय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और समय की जरूरत के अनुरूप, एसईसीएल इस कार्यक्रम को अन्य जिलों में विस्तारित करने की योजना बना रहा है जहां सीएचडी के मामले काफी अधिक हैं।

श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटीमें जलवायु तन्यकता पर सीआरएमए 2025 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

विशेषज्ञों ने सतत विकास के लिए बहुविषयक दृष्टिकोण पर जोर दिया

प्रकृति को सुंदर बनाने की भावना ने ही विज्ञान को जन्म दिया : अरुण कुमार पांडे

रायपुर (विश्व परिवार)। एसआरयू के विज्ञान संकाय ने आज बहुविषयक दृष्टिकोण के माध्यम से जलवायु तन्यकता पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (सीआरएमए 2025) का उद्घाटन किया, जिसमें प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं ने सतत विकास में जैविक और भौतिक विज्ञान की भूमिका पर चर्चा की।

उद्घाटन सत्र में विज्ञान संकाय की डीन प्रोफेसर अनुभूति कोशले ने एक ज्ञानवर्धक संबोधन दिया, जिसमें उन्होंने सम्मेलन की पूरी जानकारी दी। इस सम्मेलन में पीएचडी स्कॉलर्स, रिसर्च स्कॉलर्स, पोस्ट ग्रेजुएट और अंडर ग्रेजुएट छात्रों सहित 400 से अधिक पंजीकरण हुए हैं। ये छात्र ऑनलाइन और ऑफलाइन मोड में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में शामिल हुए, जिसमें कुल 28 मौखिक प्रस्तुतियाँ और 32 ऑफलाइन प्रस्तुतियाँ हुईं। सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय वक्ता डॉ. संतोष कुमार वर्मा एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ न्यू एनर्जी युलिन यूनिवर्सिटी चाइना ने भी अपने विचार साझा किए।

कुलसचिव डॉ. सौरभ कुमार शर्मा ने यूनिवर्सिटीकी सफल यात्रा को साझा करते हुए कहा कि यूनिवर्सिटीके कुलाधिपति का उद्देश्य तीन राज्यों मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ में शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के क्षेत्र में काम करना है। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी की दुनिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही है, इसलिए युवाओं में प्रौद्योगिकी की दुनिया में वैज्ञानिक दृष्टिकोण लाने की चिंगारी है।

कुलपति प्रो. एस.के. सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि विज्ञान केवल एक विषय नहीं है, यह हमें सृजन और नवाचार के लिए प्रोत्साहित करने की एक सोच है। विज्ञान किसी भी समस्या को वैज्ञानिक तरीके से देखने की सोच है। सतत विकास पर आधारित सम्मेलन का विषय अच्छा है।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि अरुण कुमार पांडे, एपीसीसीएफ और नोडल अधिकारी, छत्तीसगढ़ राज्य जलवायु परिवर्तन केंद्र ने सतत विकास और जलवायु परिवर्तन के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक अनुभव के क्षेत्र में अपने अनुभव साझा किए। छात्रों को वैज्ञानिक क्षेत्र के साथ-साथ हमारे राष्ट्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को भी जानना चाहिए, क्योंकि प्रकृति को सुंदर बनाने की भावना ने ही विज्ञान को जन्म दिया है।

कालड़ा बर्न एवं प्लास्टिक कॉस्मेटिक सर्जरी सेंटर
सफ़ेद दाग

(ल्यूकोडर्मा) का लेसर द्वारा ईलाज
पचपेढ़ी नाका, धमतरी रोड, कलर्स मॉल के पास, रायपुर
कॉल : 9827143060/8871003060
Ajay Advt.

ITR फाइल 500/-
Whatsapp पर बनवाऐं
Income Tax फाइल, GST रजिस्ट्रेशन, TDS रिफंड, प्रोजेक्ट रिपोर्ट
CMA DATA, MSME, BALANCE SHEET, फूड लाइसेंस
हमारे Tax Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
www.onlytds.com
सम्पर्क - शेखर गुप्ता 9300755544 - 8878655544

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354